AN UNHEARD NAME - BIRSA MUNDA
An Indian freedom fighter
NAVEEN KRISHANRAJ

# An Unheard Name - Birsa Munda

## An Indian freedom fighter

## Story

देश को आज़ादी दिलाने में करोड़ों देशभक्तों और स्वतंत्रता सेनानियों का सहयोग और बलिदान रहा है, जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता है। आपने देश के पहले क्रांतिकारी मंगल पांडे के बारे में ज़रूर सुना होगा, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ मोर्चा खोला और अपने रोम रोम में आज़ादी की चिंगारी से अपनी आवाज़ को एक मशाल की तरह बुलंद करते हुए शहीद हो गए।

लेक़िन, क्या आपको पता है कि इसके बाद देश में एक और महान क्रांतिकारी ने, अंग्रेजी हुकूमत की जड़ो को हिला देने का कार्य किया? जी हाँ, हम बात कर रहे है एक ऐसे ही क्रांतिकारी के बारे में, जिनका नाम है बिरसा मुंडा। जिन्होंने अपना सारा जीवन देश, समाज, अनेकों ऐसी जनजातियों और आदिवासियों के लिए न्यौछावर कर दिया, जिन जनजातियों और आदिवासियों के बारे में हमनें कभी ना तो पढ़ा और ना ही कभी सुना है। इन्हीं जनजातियों में से एक क्रांतिकारी आदिवासी होते है बिरसा मुंडा जी, जो एक महान वीर योद्धा, क्रांतिकारी और जनजातियों के भगवान माने जाते है और आज भी उराव, खड़िया, मुंडा जैसी अनेकों जनजातियों के आदिवासी लोग इनकी पूजा करते है।

मुण्डा भारत की एक जनजाति होती है, जो मुख्य रूप से झारखण्ड के छोटा नागपुर क्षेत्र में निवास करती है। झारखण्ड के अलावा इस जनजाति के लोग बिहार, पश्चिम बंगाल, ओड़िसा आदि भारतीय राज्यों में भी रहते हैं। इनकी भाषा 'मुण्डारी' आस्ट्रो-एशियाटिक परिवार की एक प्रमुख भाषा है। इन जनजातियों का भोजन मुख्य रूप से धान, मड़ुआ, मक्का, जंगल के फल-फूल और कंद-मूल होते हैं। ये लोग सूत्ती वस्त्र पहनते हैं। महिलाओं के लिए विशेष प्रकार की साड़ी होती है, जिसे बारह हथिया (बारकी लिजा:) कहते हैं और पुरुष साधारण सी धोती को पहनते है, जिसे तोलोंग कहते हैं। मुण्डा भी भारत की ऐसी ही जनजातियों में से एक प्रमुख जनजाति होती हैं।

मुण्डा लोगों के इतिहास के बारे में बात करे तो इनका इतिहास आज भी विवादास्पद बना हुआ रहता है और इस जनजाति के बारे में लोगों की अपनी अलग-अलग राय बनी हुई है। इनमें से सबसे प्रमुख व प्रचलित राय ये होती है कि किसी को नहीं पता होता कि ये लोग छोटा नागपुर में कैसे आए, लेकिन इस बात पर सभी विशेषज्ञ अपनी सहमति जताते है कि आधुनिक मुण्डा भाषाओं को बोलने वालों के पूर्वजों ने महाद्वीपीय दक्षिण पूर्व एशिया के ऑस्ट्रोआयसटिक मातृभूमि से पश्चिम की ओर पलायन किया था।

बिरसा मुंडा का परिवार 'मुंडा' के नाम से पहचाने जाने वाली जातीय आदिवासी समुदाय से होता है। बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर, 1875 को उलीहातू, खूंटी, झारखंड में हुआ था. इनके पिता का नाम सुगना मुंडा होता है जो पेशे से एक खेतिहर मजदूर होते है और इनकी माता करमी हातू (मुडाइन) होती है जो एक गृहणी होती है। सुगना मुंडा के परिवार में इनके चार बच्चों में से एक होते है बिरसा मुंडा। बिरसा मुंडा के एक बड़े भाई 'कोमता मुंडा' होते है और इनकी दो बड़ी बहनें 'डस्कीर' और 'चंपा' होती है।

इनकी प्राथमिक शिक्षा की कहानी भी चुनौती और समस्याओं से भरी हुई होती है। होता ये है कि इनके माता-पिता इनकी प्राथमिक शिक्षा के लिए सलगा के एक स्कूल में इनका दाख़िला करा देते है। ये स्कूल जयपाल नाग द्वारा संचालित हुआ करता है। पढ़ाई में अच्छे होने की वजह से एक दिन जयपाल नाग इनको 'जर्मन मिशन स्कूल' में पढ़ने के लिए मनाने लगते है और कई तरह के अच्छे और उज्जवल भविष्य के सपनों को दिखाते हुए इनको अपना नाम बिरसा मुंडा की जगह बिरसा डेविड करने के लिए कहते है। इस पर बिरसा मुंडा नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए जर्मन मिशन स्कूल में पढ़ाई करने से साफ़ इंकार कर देते है लेकिन जयपाल नाग, बिरसा को उसके परिवार की तंग हालत और माता-पिता की मज़बूरियों को गिनाते हुए किसी तरह से ईसाई मिशनरी स्कूल में पढ़ने के लिए मना लेते है।

वक़्त के साथ सभी लोग बिरसा मुंडा को बिरसा डेविड नाम से पुकारने लगते है। ख़ुद को अपने धर्म से अलग करके इनको ज़रा भी अच्छा नहीं लग रहा होता है लेक़िन पढ़ाई के महत्व को भली भांति समझते हुए इन्होंने मज़बूरन अपनी पढ़ाई को जारी रखा और कुछ वर्ष के लिए अपनी पढाई पूरा करने तक इसी स्कूल में अध्ययन करने लगते है। पढ़ाई के दौरान ही इन्होंने अंग्रेजी हुकूमत और ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारियों द्वारा अपने देश, भारतीयों और अपनी जनजातियों के लोगों के ऊपर कई ज़ुल्मो और दमनकारी कानूनों को लागू होते हुए देखा। छोटी उम्र में ही इन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के द्वारा अनेकों प्रकार की दमनकारी नीतियों के बारे में जाना, अपनी जनजातियों के लोगों के ऊपर अकारण होते ज़ुल्मो को देखकर इनकी आत्मा को बहुत दुःख पहुँचता है। ये सब जानकर ये अपने देश, समाज और आदिवासियों के लिए कुछ करना चाहते थे लेकिन इनको मालूम होता है कि पढ़ाई के बिना ये संभव नहीं होगा और पढ़ाई से ही इनके अंदर वैचारिक ज्ञान और वार्तालाप शैली का हुनर पनपेगा, जिससे ये लोगों को अपनी बातों को अच्छे से समझा पाएंगे। यही सब सोचकर ये ख़ामोश रह जाते है और अपना सारा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगा लेते है।

अपनी युवा अवस्था में आते-आते इनकी पढ़ाई भी पूरी हो जाती है जिसके बाद ये काम के लिए एक गाँव से दूसरें गाँव में आना-जाना शुरू करते है। युवा अवस्था में जब बिरसा काम की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा कर रहे होते है तो ये अनुभव करते है कि, उनका समुदाय ब्रिटिश उत्पीड़न के कारण पीड़ित होता जा रहा होता है लेकिन उसके ख़िलाफ़ कोई आवाज उठाने के लिए तैयार नहीं होता है। ब्रिटिश सरकार के ज़ुल्म और मनमानियों के आगे ये सभी लोग एक ज़िन्दा लाश की तरह जीवन जीने को मजबूर रहते है और उनकी दासता को चुपचाप स्वीकार करते जा रहे होते है।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए वो फ़ैसला करते है कि वो अब से जनजातीय समुदाय और आदिवासियों के जीवन उद्धार और अंग्रेजो से उनको आज़ाद कराने के लिए कोई ना कोई क़दम जरूर उठाएगा लेक़िन उस समय इनकी सूझबूझ ज़वाब दे जाती है क्योंकि एक तरफ परिवार, जनजातियों के लोगों के दुःख इनको परेशान करते रहते है और दूसरी तरफ अपने देश को गुलामी की झंजीरों में जकड़ा हुआ देखकर इनकी रातों की नींद हराम होने लगती है। इन्हीं सब के दौरान इनकी मुलाक़ात पास के गाँव में रहने वाले लक्खा से होती है जो अंग्रेजी हुकूमत को जड़ से उखाड़ फेंक देना चाहता है लेकिन अकेले होने के कारण वो कभी हिम्मत जुटा नहीं पाता है। जब लक्खा को बिरसा मुंडा के कार्यों के बारे में पता चलता है तो वो इनको ढूँढता हुआ इनके पास आकर विनती करता है कि बिरसा जी मुझे अपना शिष्य बना लीजिए, ताक़ि आपके साथ मैं भी देश और अपने आदिवासी लोगों के लिए कुछ कर सकूँ। लेक़िन बिरसा जी लक्खा को सही वक़्त आने का इंतज़ार करने की बात कहते हैं और समझाते हैं कि मैं भविष्य में तुम्हें जरूर याद करूँगा, सही वक़्त का इंतज़ार करो और ऐसा बोलकर उसको वापस भेज देते है।

बिरसा जी अब अंग्रेजो को देश से भागने और देश में मौजूद आदिवासी परिवारों के लोगों को जागरूक करने के लिए एक अभियान शुरू करते है, जिसका नाम वो जागृति अभियान रखते है। इस अभियान के दौरान ये रात-दिन भूखे-प्यासे रहकर गाँव-गाँव में भटकते हुए लोगों को देश, समाज, अंधविश्वास, स्वाभिमान और अपने हक़ के लिए लड़ने की बात कहते और उनको जागरूक करने में लगे रहते है। अंग्रेजो को जब इस बात का पता चलता है तो वो इनको पकड़ने की कई नाक़ाम कोशिश करते है लेकिन वो कभी जान ही नहीं पाते है कि बिरसा मुंडा कब, किस जगह, कैसे और कहाँ से आते है और अचानक उनकी आंखों के आगे से कहाँ ग़ायब हो जाते है। बिरसा जी ने कई महीनों तक अपना ठिकाना जंगलों में बनाकर रखा होता है। वो जंगल से निकलकर दिन भर अपने अभियान को जारी रखते और लोगों को जागरूक करने में लगे रहते और अपना काम पूरा करने के बाद जंगल मे ही कहीं ग़ायब हो जाय करते। अंग्रेजो ने कई बार पूरे जंगल को अच्छे से खंगाला होता है लेकिन उनको कभी बिरसा जी को दूँढने में सफलता प्राप्त नहीं होती है।

एक तरफ बिरसा मुंडा जी अपने अभियान को जारी रखते हुए गाँव, गली, कुंचो में रहने वाले जनजातीय समुदाय के लोगो को जागरूक करते जाते है और दूसरी तरफ इनकी बढ़ती लोकप्रियता से अंग्रेजो की रातों की नींद हराम होने लगती है।

बिरसा मुंडा ने ब्रिटिशों के एजेंडे को उजागर करने के लिए पूरे देश में जागरूकता फैलाने का काम शुरू किया और इसी के साथ वो अंग्रेजी हुकूमत के सताए लोगों के साथ, अपने

आदिवासी लोगो को जोड़ते चले जाते है और ऐसा करते-करते वो एक विशाल सेना को अंग्रेजो के ख़िलाफ़ खड़ी कर लेते है। इस सेना ने सबसे पहले अंग्रेजो को मानसिक तनाव से तोड़ने के लिए कई प्रकार की युक्तियों को अपनाया जैसे आये दिन अंग्रेजो के जलसों, शादी, पार्टियों, राजनीतिक समारोह को क्षति पहुंचाई, जिससे अंग्रेजो को काफी परेशानियों के साथ मीडिया और आला अधिकारियों के गुस्से का कारण भी बनना पड़ता है। ये सभी लोग विद्रोह में एक सक्रिय भागीदार बनकर अपना-अपना काम बख़ूबी करते जाते है और इसी दौरान ये अपना सेनानायक बिरसा मुंडा जी को चुनकर हर काम को उनसे पूछकर उनके अनुसार करने लगते है। इन सभी को बिरसा जी से ही अंग्रेजों से लड़ने का साहस मिलता रहता है।

1886 से 1890 तक बिरसा मुंडा का परिवार चाईबासा में रह रहा होता है। इनका परिवार भी सरकार विरोधी गतिविधियों से काफी परेशान रहता है और बिरसा की सूझबूझ और बढ़ते प्रभावशाली नेतृत्व को देखकर इनका परिवार भी बिरसा जी का सरकार विरोधी आंदोलन और जागृति आंदोलन में उनका सहयोग देता है। इसी का परिणाम होता है कि 1890 में इनके परिवार ने सरकार के विरुद्ध जागृति आंदोलन का समर्थन करने के लिए जर्मन मिशन से अपनी सदस्यता को छोड़ देते है और वापस हिन्दू सनातन धर्म को अपना लेते है।

बिरसा मुंडा एक सफल नेता के रूप में उभरते हुए आगे बढ़ते जाते है और लोगों का प्यार व साथ उनको मिलने लगता है। इसी दैरान, अंग्रेजो की स्वार्थी और गलत नीतियों के कारण देश की कृषि टूटने लगती है और भारतीय संस्कृति में परिवर्तन आने लगता है जिससे बिरसा जी को काफी परेशानियाँ होने लगती है और वो इन सब से निपटने के लिए अंग्रेजो के ख़िलाफ़ विद्रोह का बिगुल बजा देते है। इनके नेतृत्व में, आदिवासी आंदोलनों से जुड़े सभी लोगों ने अपने काम में अचानक से ही तेज़ गति प्राप्त कर ली होती हैं और अंग्रेजों के खिलाफ कई विरोध प्रदर्शन किए जाने लगते है। इनके आंदोलन के कारण ही इन्होंने ब्रिटिश सरकार को अच्छे से समझा दिया कि आदिवासी ही देश की मिट्टी के असली मालिक होते है। इसके साथ ही ये सभी लोग बिचौलियों के साथ अंग्रेजों को खदेड़ने के लिए भी लगातार काम करते रहे।

अचानक से अंग्रेजो के ज़ुल्म और अत्याचार के खौफ़ से भारी संख्या में आदिवासियों ने बिरसा जी का प्रत्यक्ष रूप से साथ देना बंद करने लगते है जिससे इनके आंदोलन की गति बहुत धीमी पड़ जाती है। जिससे ये काफी परेशान रहने लगते है और आदिवासी जनजातियों के लोगो को अपने साथ दौबारा जोड़ने के लिए सोच विचार के साथ इधर से उधर लोगों से मिलकर समस्या का समाधान निकालने के लिए घूमना फिरना शुरू कर देते है। इसी बीच एक दिन जंगल में जाते हुए अंग्रेजो का इनके ऊपर हमला होता है और ये किसी तरह अपनी जान बचाने में क़ामयाब हो जाते है लेकिन इस हमले में ये काफी ज़ख्मी हो जाते है जिसके कारण अपने ठिकाने पर पहुंचने से पहले ही ये एक तालाब के किनारे बेहोश होकर गिर पड़ते है। उधर से गुज़रने वाले एक सरकारी अफ़सर के मुंगी, धर्म शास्त्रों में पंडित और आयुर्वेद के ज्ञाता आनंद पांडेय की इनके ऊपर नज़र पड़ती है जो इनको उठाकर अपने घर ले आते है। कई दिनों के उपचार के बाद इनकी हालत में काफी सुधार होता नज़र आने लगता है। पंडित जी इनसे इनका परिचय पूछते हैं तो बिरसा जी अपने बारे में सभी बातें बताने लगते है लेकिन इनका नाम सुनते ही आनंद पाण्डेय इनको टोकते हुए आगे कुछ भी बताने से मना कर देते है और कहते है कि आपको कौन नहीं जानता बिरसा जी? आपकी तरह ही मैं भी देश से इन गोरों को निकाल बाहर फेंकना चाहता हूँ। मैं अभी तक सोचता था कि मेरी ये उम्मीद शायद सपना ही बनकर रह जाती लेक़िन आपको देखकर लगता है कि ज़ल्दी ही हम सभी को अंग्रेजो की ग़ुलामी से छुटकारा मिल जाएगा और हम भारतीय एक बार फ़िर से आज़ादी की खुली हवा में सांस ले सकेंगे। ये सुनकर बिरसा जी थोड़ा उदास होकर उनको अपनी सेना के लगातार टूटने और अलग होने की बात बताते हुए दुःखी होने लगते है। इस पर आनंद पाण्डेय उनको समझाते हुए कहते है कि जो काम तुम करने निकले हो वो आसान नहीं है लेकिन नामुमकिन भी नहीं है। इन सभी को करने से पहले अभी तुमको बहुत से काम करने है जिसका ज्ञान में तुमको दूँगा।

बिरसा जी के स्वस्थ होते ही आनंद उनको रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत गीता जैसे अनेकों धर्म ग्रंथों को पढ़ने के लिए देते है और इसके साथ ही उनको आयुर्वेद और चरक संहिता का ज्ञान भी देते है। पाण्डेय जी इनको धीरे-धीरे वो सब ज्ञान देने लगते है जिससे अंग्रेजो को खदेड़ने और अपनी

जनजातीय समुदाय को एकजुट करने में बहुत कारगर सिद्ध होने वाली होती है। आनंद पाण्डेय से हर प्रकार का ज्ञान लेकर ये काफी अरसे बाद अपने गाँव में जाते है और उन लोगों के पूछने पर बताते है कि उनको भगवान सिंह बोंगा के साक्षात दर्शन होते है और उन्होंने हम सभी की समस्याओं को दूर करने के लिए मुझे रास्ता बताया है। ये सुनकर सभी लोग बिरसा पर आँख बंद करके यक़ीन कर लेते है। बिरसा जी के इस झूठ के पीछे का कारण साफ होता है कि उस समय लोग अंधविश्वासों में इस तरह से जकड़े हुए थे कि उनको इन सभी बातों से निकालने के लिए बिरसा मुंडा जी को झूठ का सहारा लेना पड़ता है और वो गाँव वालों के पूछने पर बताते है कि जब मैं जंगल से होकर गुजर रहा था तो मेरे सामने सिंह बोंगा जी साक्षात दर्शन देते हुए कहते है कि मैं यहाँ तुमको आदिवासी समुदाय और जनजातियों के सभी दुःखो का अंत करने का समाधान बताने के लिए आया हूँ। अपने भगवान सिंह बोंगा का नाम आते ही सभी लोग बड़े ध्यान से बिरसा मुंडा जी की बातों को सुनने लगते है और ये देखकर वो आगे बताते हुए कहते है कि भगवान ने मुझे कहा है कि मैं तुमको तुम्हारी समस्याओं का समाधान बता दूँगा लेक़िन अगर मेरी बात को किसी ने नहीं माना तो पूरी जनजाति पर मेरा प्रकोप गुस्से के तौर पर बरसेगा, जिससे तुमको कोई बचा नहीं पाएगा।

ये सुनकर वो सभी बिरसा जी से वादा करते हुए कहते है कि हम बिरसा मुंडा की हर बात को मानने के लिए तैयार है। बिरसा जी उनको बताते है की आज से और अभी से सभी लोगों को सरकारी अधिकारियों, जमींदारों, साहूकारों आदि के यहाँ नौकरी या गुलामी नहीं करनी है, अपना अन्न ख़ुद अपने खेतों में उगाओ और एक दूसरे की मदद करो, किसी भी सरकारी फैसलों को नही मानना है, भगवान एक है और वो सिर्फ़ सिंह बोंगा है, भूत-प्रेत, अंधविश्वास जैसी कोई चीज़ नहीं होती है, अनेकों देवी देवताओं की पूजा नहीं करनी है, बलि के नाम पर किसी जीव की हत्या नहीं करनी है, जीवों से प्रेम करना है, गाय की सेवा करनी है, शराब और मांस का पूर्णरूप से त्याग करना है, घर में एक तुलसी का पौधा जरूर लगाना है, पूजा सिर्फ़ चावल पानी से करनी है, कैसी भी परिस्थिति हो साथ मिलकर खड़े रहना है, घर को साफ़ सुथरा रखना है, खाना खाने से पहले नहाना है, शुद्धता के लिए घर के ऊपर सफ़ेद झंडा लगाकर रखना है, झूठ नहीं बोलना है और चोरी कभी नहीं करनी है, फैसलों को सिर्फ़ पंचायत द्वारा मान्य करना है, हर बृहस्पतिवार को छुट्टी रखकर हवन, पूजापाठ, भगवान का ध्यान करना है और ऐसी ही अनेकों बातों को बताकर बिरसा उन सभी लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से एकजुट करने लगता है और देखते ही देखते उसके साथ क्रांतिकारियों की एक विशाल सेना खड़ी हो जाती है।

बात का पता जब अंग्रेजो को चलता है तो वो लोग उनके ऊपर हमला कर देते है लेकिन 3000 से भी ज़्यादा आदिवासियों की सेना ने अंग्रेजो को धूल चाटने पर मज़बूर करते हुए वहाँ से भागने पर मजबूर कर देते है। जब किसी पुलिस अफसर या सरकारी बाबू को उनके पास जाने के लिए कहा जाता तो सब खौफ़ की वजह से मना करने लगते है और कई महीनों तक कोई भी अंग्रेज अधिकारी उनकी ओर नहीं जाता है। इसी दौरान बिरसा अपनी सेना के साथ कई अहम हमले और लूट करके अंग्रेजो को आये दिन चोट पर चोट देता जाता है और अंग्रेजी हुकूमत लाचार नज़र आने लगती है।

बिरसा मुंडा के नेतृत्व में 19वीं सदी के आखिरी दशक में किया गया मुंडा विद्रोह उन्नीसवीं सदी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण जनजातीय आंदोलनों में से एक होता है जिसको सभी लोग उलगुलान (महान हलचल) नाम से भी जानते होते है। मुंडा विद्रोह झारखण्ड का सबसे बड़ा और अंतिम रक्ताप्लावित जनजातीय विप्लव था, जिसमे हजारों की संख्या में मुंडा आदिवासी शहीद हुए।

इसी बीच, 1898 में डोम्बरी पहाडियों पर मुंडाओं की विशाल सभा बुलाई जाती है जिसमें बहुत अहम फैसला लेने की बात चल रही होती है। इसकी खबर अंग्रेजो को भी लगती है और वो बिरसा मुंडा के साथ उसकी सेना को पकड़ने के लिए हर मुमकिन प्लान तैयार करने में जुट जाते है। इस सभा में भविष्य में होने वाले सभी आंदोलनों की पृष्ठभूमि तैयार की जाती है जिसका नेतृत्व बिरसा करता है। आदिवासियों के बीच राजनीतिक चेतना फैलाने का काम लगातार चलता रहता है।

24 दिसम्बर 1899 को बिरसापंथियों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड दिया जाता है। 5 जनवरी 1900 तक पूरे मंडा अंचल में विद्रोह की चिंगारियां फैल जाती है। बिरसा के बढ़ते प्रभाव और अपनी जड़ों को हिलता देख़ ब्रिटिश फौज एकाएक आंदोलन का दमन करना शुरू कर दिया होता है। 9 जनवरी 1900 का दिन मुंडा इतिहास में अमर हो गया जब डोम्बार पहाडी पर अंग्रेजों से लडते हुए सैंकडों मुंडाओं ने

शहादत दी। आंदोलन लगभग समाप्त हो गया। गिरफ्तार किये गए मुंडाओं पर मुकदमे चलाए जाते है, जिसमें एक को फांसी, 39 को आजीवन कारावास, 23 को चौदह वर्ष की सजा होती हैं।

बिरसा मुंडा काफी समय तक तो पुलिस की पकड़ में नहीं आये थे, लेकिन एक स्थानीय गद्दार की वजह से 3 मार्च 1900 को गिरफ्तार हो कर लिए जाते है। ये गद्दार कोई और नहीं, बल्कि वो होता है जो बहुत पहले बिरसा के पास आकर उसका शिष्य बनकर उसके साथ जुड़ना चाहता था। लगातार जंगलों में भूखे-प्यासे भटकने की वजह से बिरसा कमजोर हो चुके होते है। उनकी तबियत बिगड़ने लगती है और एक दिन अंग्रेजी सरकार जनता को बताती है कि 9 जून 1900 को रांची की एक जेल में हैजा के कारण उनकी मृत्यु हो गई है। लेकिन सभी इस बात पर यक़ीन नहीं करते है और काफी समय बाद मुंडाओं और आदिवासियों को पता चलता है कि बिरसा मुंडा को जेल में खाने में रोज़ाना जहर दिया जाता था जिसके चलते उनकी मौत हो जाती है। बिरसा मुंडा के जाने के बाद उनकी सेना उनको अपना भगवान मानकर उनकी मूर्ती की पूजा करते और उनके बताए नियमों रास्तों पर चलते हुए लगातार अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई जारी रखते है।

आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

**Scene-01,**

21 January के दिन सुबह 8 बजे, Nestled in Midtown Manhattan's trendy NoMad neighborhood at Park Avenue South and 28th Street 5 स्टार होता में 'our country's real brave fighters & education system' नाम के इवेंट का आयोजन करने वाले 'रिचल जेम्स' काफी ख़ुश नज़र आ रहे होते है। ये इवेंट उनके जीवन का बहुत ख़ास और बड़ा इवेंट होने जा रहा होता है क्योंकि इस इवेंट, जिसका नाम OCRFES होता है, में दुनियाभर के तमाम लेख़क, उधोगपति, राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि के साथ, बड़ी और रहीस हस्तियों के आने का अनुमान लगाया जा रहा होता है। रिचल जेम्स एक पल भी आराम ना करके इस इवेंट की तैयारियों की भागदौड़ में लगे होते है। अपने सिक्योरिटी चीफ़ भरत सिन्हा से सुरक्षा के सभी इंतेज़ाम के बारे में पूछते हैं।

रिचल जेम्स- everything ok bharat?

भरत- don't worry sir, everything is good. Good morning.

रिचल जेम्स- great, carry on

भरत- Thank you sir and don't be panic, I will manage everything.

रिचल जेम्स, भरत की बात सुनकर वहाँ से आगे जाते हुए, भरत को बिना देखे, मुस्कुराकर

रिचल जेम्स- I believe you buddy

रिचल जेम्स क़दमो की गति को बढ़ाते हुए अपने सभी कर्मचारियों को एक-एक करके, उनके काम को करने की लगन और मेहनत देखकर ख़ुश हो रहा होता है और होटल से बाहर की ओर चल देता है।

**Scene-02,**
सुबह 9 बजे से ही होटल के अंदर मेहमानों का आना शुरू हो जाता है और 10 बजते-बजते OCRFES में आमंत्रित लगभग तमात मेहमान आ चुके होते है। सभी मेहमान अपनी-अपनी सीट पर बैठे हुए होते है और एक दूसरे से इवेंट के बंदोबस्त और तैयारियों की तारीफ़ कर रहे होते है। सभी मेहमानों को ख़ुशनुमा माहौल देने के लिए न्यूयॉर्क शहर का सबसे बेस्ट और प्रसिद्ध 'तफ़री रॉक बैंड' म्यूजिक के लिए बुलाया जाता है जो अपने soft और uniqe म्यूजिक से सभी मेहमानों के चेहरे पर प्यारी-हल्की मुस्कान को ठहराए हुए रखता है। सभी मेहमान होटल की साज सज्जा, तैयारियों के साथ तफ़री बैंड के संगीत और कलाकारों की तारीफ़ करते हुए एक-दूसरे से बातें करते हुए नज़र आ रहे होते है।
तभी वहाँ मौजूद उधोगपति पार्कर शीना और रेस के घोड़ो पर पैसा लगाकर कई हॉस्पिटल्स को बनाने वाले केल्विन लियोन के बीच बातें शुरू होती है।
पार्कर- music very lovely, yeah Kelvin?
केल्विन- hmm…. You're right. I love it
उनकी बातों को सुनकर जोलियाना उनके पास वाली कुर्सी पर मुस्कुराते हुए बैठती है और कहती है
जोलियाना- right both of you, because this music my favourite.
जोलियाना को देखकर दोनों मुस्कुराते हुए उसके एक एक हाथ को पकड़कर चूमते हुए आशिक़ाना अंदाज़ में बोलते है
पार्कर- oh! really? Hahaha... yeah gorgeous.
केल्विन- But this music is nothing compared to your beauty and smile
ये बोलकर केल्विन पार्कर की ओर समर्थन के नज़रिए से देखता है कि तभी पार्कर तपाक से केल्विन की बात को सही बताता हुआ
पार्कर- it's true. Yeah.
जोलियाना उन दोनों से अपनी तारीफ़ सुनकर शर्माती हुई और उन दोनों से अपना हाथ खिंचती हुई
जोलियाना- oh jesus! Thanku for yours compliment. I appreciated

**Scene-03,**
दूसरी टेबल पर बैठा हुआ और संगीत की दुनियाँ में अपनी पहचान बनाने वाला संगीतकार बॉब मैरीन, अपनी आँखों को बंद करके तफ़री रॉक बैंड के संगीत का आनंद लेते हुए गाने के शब्दों को गुनगुना रहा होता है कि तभी उसके पास लंदन की

चर्चित इतिहासकार 'लिली शिमोना' आकर बैठती है और बॉब को म्यूजिक में खोया पाकर तफ़री रॉक बैंड के संगीत का आनंद लेने लगती है। अचानक बॉब की आँखे खुलती है तो उसकी नज़र लिली पर जाती है और उसको देखकर बॉब और लिली में बातें शुरू होती है। बॉब लिली से कहता है

बॉब- hey beautiful, how are you? So sorry but I didn't see you.

लिली बॉब को comfortable रहने के लिए कहती हुई

लिली- no no it's ok, no problem bobb. I just came and listed that music.

लिली की बातों को सुनकर बॉब लिली से तर्कनुमा अंदाज में

बॉब- This music is nothing special and there are many mistakes in it. Don't know why these Indians have to do the same work which is not in their control. Leave these things. Tell me, you had a book coming, right?  What happened about that?.

लिली बॉब की बातों से सहमत नहीं होती है और अपनी किताब के बारे में बताने के बाद वो बॉब से पूछती है

लिली - Will come as soon as possible.

बॉब- congratulations and best wishes.

लिली- thank you bobb. But you were so lost in the music of these Indians, so what happened to you all of a sudden?  He is singing well and playing a good band.

बॉब लिली की बातों को बीच में काटता हुआ उसको कुछ बोलने ही वाला होता है कि तभी,

**Scene- 04,**

होटल के अंदर भारी सिक्योरटी के साथ USA सेना के चीफ़ secretary थॉमस डार्विन अंदर आते है। उनको देखकर सभी आश्चर्य से स्तब्ध रह जाते है। थॉमस को देखकर रिचल अपना सारा काम छोड़कर दौड़कर उनके पास आता है और उनको इस इवेंट में आने के लिए धन्यवाद देता हुआ कुर्सी पर बैठाता है।

रिचल- oh my goodness, Mr Thomas thank you so much for coming and accepted my invitation. Please come sir please.

थॉमस- my pleasure mr richal. How are you?

रिचल- fine sir, please sit down. I am just coming. Wait just a second, I arrange drink for you.

थॉमस- yeah sure!

रिचल थॉमस को बैठाकर और उनके पीने के लिए drink का इंतेज़ाम करने के लिए दौड़ता हुआ अपने एक कर्मचारी को वॉकी टोकि पर अपने पास आने के लिए कहता हुआ चला जा रहा होता है
रिचल- hey mack, where are you? Come in side hurry up, it's argent.
मैक- yeah sir, I am coming

**Scene-05,**
इसी तरह इवेंट में आने वालों का स्वागत, आवभगत और सेवा सत्कार किया जा रहा होता है और दूसरी तरफ़ इवेंट में मौजूद लोग एक-दूसरे की तरफ देखते हुए कभी किसी की बुराई करते इतरा रहे होते है तो कभी किसी की तारीफ़ करके शिष्टाचार का परिचय दे रहे होते है। इवेंट में आया एक मेहमान पीने के लिए ड्रिंक चाहता है जिसके लिए वो वेटर को अपने पास बुलाकर हार्ड ड्रिंक को लाने के लिए कह रहा होता है तो कभी कोई इवेंट के जल्दी से जल्दी शुरू होने का इंतज़ार कर रहा होता है। सामने एक मेज़ पर सभी लोगों के अपने देश के फ्रीडम फाइटर के ऊपर लिखी हुई किताबों को रखा हुआ है और सबसे नीचे भारतीय फ्रीडम फाइटर की किताब रखी हुई हैं। इसी प्रकार इवेंट में लगभग सभी मेहमानों के आने के बाद इवेंट शुरू करने के स्टेज पर एंकर 'मार्क एंथम' आता है और म्यूजिक की धुन पर हल्का फुल्का डान्स करता हुआ कार्यक्रम को शुरू करने के लिए बोलता है।
मार्क एंथम ( अंग्रेजी भाषा में बोलते हुए ) - hello everyone, कैसे हो आप सभी? उम्मीद है कि आप इवेंट में हर पल का आनंद ले रहे होंगे। मेरा नाम है मार्क एंथम और मार्क आप सभी को यहाँ आने के लिए तहेदिल से धन्यवाद देता है।
मार्क की बातों को सुनकर सभी लोग तालियाँ बजाते हुए मार्क को इसी तरह जोशीले और आकर्षक अंदाज़ में आगे बोलते रहने के लिए उसका उत्साह बढ़ाते है। मार्क सभी को अपने हाथ के इशारे से शांत रहने के लिए कहता है और उसका उत्साह बढ़ाने के लिए उनका धन्यवाद देता हुआ आगे बोलना शुरू करता है।
मार्क एंथम- जैसा कि आप जानते है कि हम यहाँ क्यों इकट्ठा हुए हैं तो मैं आप सभी का ज़्यादा समय ना लेते हुए बारी बारी से सभी सम्मानित प्रतिष्ठित पुरस्कार विजेताओं को बुलाने की आज्ञा चाहूँगा। तो हम बुलाना चाहेंगे हमारे पहले पुरुस्कार विजेता, जिन्होंने ना जाने अपने देश के लिए अनेकों लेख लिखे बल्कि उनके लेख को आज ब्रिटेन की कई यूनिवर्सिटी में पढ़ाया भी जा रहा है और जिनका नाम है mr ग्रे । तो मैं सभी उपस्थित लोगों से अनुरोध करूँगा की तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत कीजिए। कृपया स्टेज पर आने का कष्ट करें mr ग्रे

सभी लोग तालियाँ बजाने लगते है और mr ग्रे स्टेज पर जाकर एंकर से माइक लेता हुआ
Mr ग्रे- thank you mark and thanku, thanku everyone.
मार्क एंथम माइक देता हुआ
मार्क एंथम- welcome mr ग्रे
एंकर स्टेज पर एक साइड में जाकर अपने स्थान पर खड़ा हो जाता है और mr ग्रे बोलना शुरू करते है
Mr ग्रे- आप सभी का धन्यवाद! सभी को लगता था कि ब्रिटेन कभी आगे नही बढ़ सकता। सिर्फ शिक्षा ही नही बल्कि किसी भी क्षेत्र में लेक़िन हमनें ये बात ग़लत साबित करके दिखा दी और आज आप ब्रिटेन की शिक्षा, स्वास्थ व्यवस्था, ताक़त और ज्ञान से भलीभांति परिचित ही हो। मुझे नहीं लगता कि ब्रिटेन जैसा देश दुनियाँ में कोई दूसरा होगा और कभी हमसे आगे निकल भी सकता है। हमनें दुनियाँ के कई मुल्कों को सहारा दिया और कई मुल्कों को आज भी हमारी दया का इंतज़ार रहता है फिर वो अर्थव्यवस्था के लिए हो या फिर हमारी सैन्य शक्ति के लिए। हमारी सेना दुनियाँ की सबसे बेस्ट सेना है।
ये बोलकर mr ग्रे एंकर को माइक देकर और सामने खड़े मुख्य अतिथि से सम्मान लेकर वापस अपनी जगह पर जाने लगते है। एंकर मार्क उनको जाता देख सभी को उनकी स्पीच के लिए तालियां बजाने के लिए कहता है। सभी लोग एक दूसरे से फुसफुसाहट करते हुए तालियाँ बजाने लगते है। अब एंकर अगले मेहमान को बुलाने के लिए बोलना शुरू करता है
मार्क एंथम- तो आइए बुलाते है अपने अगले मेहमान को जिन्होंने अपनी आवाज़ और कला के दम पर न्यूयॉर्क ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई है और आज दुनियाँ भर के संगीतकार उनके साथ काम करना चाहते है। तो मैं चाहूंगा कि आप सभी उनके लिए तालियाँ बजाते हुए उनका स्वागत करें। मैं आमंत्रित करना चाहता हूँ न्यूयॉर्क शहर के सबसे प्रशिद्ध संगीतकार और गायक बॉब को। कृपया mr bobb मंच पर आने की कृपया करें। भीड़ में से लंबा चौडा और हट्टा कट्टा काला आदमी कोट पेंट पहले सभी की तालियों का सम्मान करते हुए और धन्यवाद करते हुए मंच पर जाता है और एंकर से माइक लेकर बोलना शुरू करता है।
बॉब- आप सभी का तहेदिल से धन्यवाद और अब मैं क्या बोलूँ? समझ ही नहीं आ रहा है लेकिन मैं ज़्यादा ना बोलते हुए सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगा कि मेहनत करते रहिए जब तक आप सपनों को पा नहीं लेते। yoooo…

बॉब माइक एंकर को देकर सम्मान लेकर स्टेज से उतरता हुआ तफ़री रॉक बैंड की ओर मज़ाक़िया मुस्कान से देखता हुआ अपनी जगह पर जाकर बैठ जाता है। एंकर अब बोलना शुरू करता है और उसकी आवाज़ धीमी होते जाती है और कई लोग अब स्टेज पर आते, स्पीच देते, धन्यवाद देते, सम्मान लेते और वापस अपनी जगह पर चले जाते हुए दिखाते है। अब एंकर मार्क एंथम को बोलते हुए दिखाया जाता है

मार्क एंथम- तो अब बुलाते है हम अपने आख़िरी और बहुत ही खास इंसान को, जिन्होंने अपने जीवन मे अनेकों परेशानियों के बावजूद भी कभी हार नहीं मानी और डटकर मुकाबला करते हुए आगे बढ़ते गए। वो आज दुनियाँ की सबसे बेस्ट यूनिविर्सिटी ऑक्सफ़ोर्ड के सबसे बेहतरीन अध्यापकों में से एक है और उनकी लिखी हुई अनेकों किताबो को दुनियाँ भर के स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी में बच्चें पढ़ते है। और तो और आपको जानकर हैरानी होगी कि उनके देश के प्रधानमंत्री दुनियाँ के सबसे पॉपुलर हस्ती में से एक और लगातार शक्तिशाली बनते जा रहे देश के मूल निवासी हैं। जी हाँ सही समझा आपने। हम बुलाना चाहेंगे भारत में जन्में और अमेरिका की ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी के सबसे बेस्ट अध्यापक और लेख़क dr अतुल जी को।

भारत का नाम सुनते ही वहाँ उपस्थित सभी लोग आपस में भारत और dr अतुल के बारे में कई तरह की बातें करते हुए कहते नज़र आते है। तभी भीड़ में से ब्रिटेन के रहने वाले mr एंडरसन, भारत और भारतीयों का मज़ाक उड़ाने के अंदाज़ में हँसते हुए ज़ोर से बोलते है।

एंडरसन- भारत? हाँ हाँ हाँ , वो ही भारत जिसको हमनें 300 सालों तक अपना ग़ुलाम बनाकर रखा था, भला उस भिखारी देश के भूखे नंगे लोगों को कौन सुनना चाहेगा?

इस बात का समर्थन करते हुए दूसरा ब्रिटिश नागरिक 'क्रोलमोक' भारत और भारतीयों का मज़ाक उड़ाते हुए बोलता है

क्रोलमोक- वहाँ की आधी से ज़्यादा जनता तो भूखी सड़क-फुटपाथों पर सोती है और आधे लोग जंगलों में जंगली जानवर की तरह जीते है।

ये सुनकर तीसरा ब्रिटिश नागरिक लिंकिन कहता है

लिंकिन- भारतीयों को ना तो पढ़ना-लिखना आता है और ना ही उनको पैसा कमाना, उनको सिर्फ़ एक ही चीज़ अच्छे से आती हैं और वो है हमारी ग़ुलामी करना।

ये ही सब बातों को करते हुए ज्यादातर लोग वहाँ खड़े एक-दूसरे से शराब पीने, खाना-खाने, इधर-उधर की बातों को करने और अपने-अपने कारोबार के बारे में

बात करने के लिए कहकर आगे बढ़ने लगते है कि तभी माइक पर एंकर उन सभी को रुकने के लिए आग्रह कर करता है लेकिन अधिकतर विदेशी लोग वहाँ से एक भारतीय की बातों को ना सुनना, अपनी और अपने देश की शान के ख़िलाफ़ समझकर जाने लगते है कि तभी डॉक्टर अतुल स्टेज पर आते है और एंकर से माइक लेकर कुछ क्षण वहाँ खड़े लोगों की ओर देखते हैं और उन लोगों के चेहरे पर भारत का नाम सुनने के बाद आए बुरे भावों को देखकर स्पीच देना शुरू करते है। डॉक्टर अतुल की स्पीच की पहली लाइन के चंद शब्दों से उनके कदम रुक जाते है। डॉक्टर अतुल अंग्रेजी में बोलते हुए

डॉक्टर अतुल- मेरे प्यारे भाईयों और बहनों, भारत का रहने वाला और कई वर्षों से अमेरिका में रहकर कार्य करने वाला, मैं डॉक्टर अतुल आपको दोनो हाथ जोड़कर विनम्र भाव से नमस्ते करता हूँ" ।

ये सुनते ही सभी लोग एक-दूसरे के मुहँ को देखने लगते है और धीरे-धीरे डॉक्टर अतुल की बातों को सुनने में अपना ध्यान देने लगते है। डॉक्टर अतुल आगे बोलते हुए

अतुल- भारत! हां मैं उसी भारत का रहने वाला जहाँ मनुष्य तो क्या जीवों से प्रेम करना सिखाया जाता है" ।

हाँ मैं उसी ग़रीब देश भारत का निवासी हूँ जिसको हजारों लाखों साल से विदेशी देशों और मुल्कों ने लगातार लूटा और लूट-लूटकर अपने देशों की ग़रीबी को ख़त्म किया।

हाँ मैं उसी अनपढ़ देश का निवासी हूँ जिनके धर्म ग्रंथों, काव्यों, पुराणों ने दुनियाँ को आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति देकर हर लाइलाज़ रोगों को ख़त्म करने का उपचार दिया और जीवों में भी इंसानियत देखने का नज़रिया सिखाया। जिनके धर्म ग्रंथों और वेद पुराण को पढ़कर आप सभी देशों के महान और बड़े-बड़े वैज्ञानिक ब्रह्मांड की अनेकों अनसुलझी गुत्थियों को सुलझाने में आज भी लगातार लगे हुए हैं और अपने मार्गदर्शन के लिए हम भारतीयों के लिखे हुए धर्म ग्रंथो के चिन्ह कदमों पर चल रहे है। दुनियाँ को शिक्षा, ज्ञान, योग, आयुर्वेद और भी ना जाने ऐसी कितनी ही बातों का बोध हम भारतीयों ने ही कराया है।

हाँ मैं उसी भूखे नंगे देश का निवासी हूँ जिसने दुनियाँ वालों को अनेकों प्रकार की फसलों की जानकारी देकर, दुनियाँ वालों को अपने-अपने देशों से भुखमरी ख़त्म करने का हौसला दिया। हाँ मैं जंगली जानवरो के बीच रहने वाले, उन जंगली इंसानो के बीच में से आपके सामने आकर खड़ा हुआ वो इंसान हूँ जो आज दुनियाँ की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी ऑक्सफ़ोर्ड में हजारों बच्चों को ज्ञान दे रहा है।

हम भारतीयों के दिन की शुरुआत ही श्रीमद्भागवत गीता जी के इस श्लोक, " सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत। ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः " से होती है जिसका अर्थ है कि मनुष्य, जीव-जंतु, पेड़ पौधों, किट-पतंगों और उन सभी से प्रेम करो, जिनको परमात्मा ने बनाया है, और आप हम भारतीयों को बता रहे है कि हमें प्रेम, स्नेह, ममता और इंसानियत की भाषा समझ नहीं आती।
आप सभी देशों के पास दुनियाँ की सबसे बेहतर और शक्तिशाली स्वास्थ व्यवस्था होने के बावजूद भी आज आप सभी के देशों ने कोरोना नाम की वैश्विक महामारी के आगे घुटने टेक दिए है लेकिन हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, जो ख़ुद एक बेहद ग़रीब परिवार से ताल्लुक़ रखते है, उन्होंने दुनियाँ को दिखाया कि युद्ध क्षेत्र हो या कोई भी कर्म क्षेत्र, भारत कभी किसी के आगे नहीं झुकता।

ये सुनकर वहाँ खड़े सभी लोगों की बोलती बंद हो जाती है और चारो तरफ एक अज़ीब सा सन्नाटा पसर जाता है। डॉक्टर अतुल आगे बोलते हुए कहते है

अतुल- क्या बोल रहे थे आप लोग, गुलाम बनाकर रखा? हम भारतीय सिर्फ़ गुलामी करने के लिए ही पैदा हुए है? तो आज मैं आपको बताता हूँ कि जब आप ब्रिटिश शासकों ने हमारे देश में बंदूकों, बम गोलों, बारूदों और आधुनिक तकनीको से बने हथियारों के सहारे हम भारतीयों पर जुल्म किया तो हम भारतीयों ने मात्र तीर-कमान और भालों से ही आपकी लाखो की सेना को उखाड़ फेंका और वो भी मात्र कुछ हज़ार लोगों ने मिलकर।

ये सुनते ही पार्कर डॉक्टर अतुल पर भड़कते हुए- तुम झूठ बोलने और मन गढंग कहानियों को सुनाकर लोगों को बहला फुसला रहे हो डॉक्टर। तुम्हारे पास अपनी बातों को सच साबित करने का कोई प्रमाण है क्या?

ये सुनकर उसके साथ वहाँ खड़े तमाम लोग उनसे इन बातों की सच्चाई का प्रमाण माँगने लगते है। तब इस पर डॉक्टर उन लोगों के आगे बोलते है
अतुल- बिरसा मुंडा।

ये सुनकर सभी लोग एक-दूसरे से ख़ुसर फ़ुसर करने लगते है। तभी एक ब्रिटिश नागरिक 'जेमस्टोन ग्रीक' डॉक्टर अतुल से पूछता है

जेमस्टोन ग्रीक- कौन है ये बिरसा मुंडा और उसका यहाँ ज़िक्र करके तुम लोगो को क्या बताना चाहते हो?
डॉक्टर अतुल- बिरसा मुंडा जी इंसान के रूप में वो भगवान थे जिन्होंने अपने दम पर मात्र कुछ हजारों भारतीयों के साथ मिलकर, आपकी ब्रिटिश हुकूमत की जड़े हिला दी थी।
बॉब, डॉक्टर अतुल से- तो अपनी बातों को सच साबित करके दिखाओ और अगर तुम्हारी बातें सच निकली तो हम सभी आज के बाद सम्मान के साथ भारत का नाम लिया लेकिन अगर तुम्हारी बात झूठी निकली तो तुम वादा करो कि आज के बाद कभी भी किसी यूनिवर्सिटी में नहीं पढ़ाओगे और ना ही कोई किताब लिखोगे।
अतुल उनकी बातों को सुनकर कुछ देर सोचता है और फ़िर मुस्कुराते हुए कहते है
अतुल- मुझे मंजूर है
अब डॉक्टर अतुल उनको बिरसा मुंडा और अंग्रेजो के बीच शुरू होने वाली सारी कहानी-क़िस्सों को बताने लगते है।
यहाँ से शुरू होती है आदिवासियों की एक जनजातीय समुदाय मुंडा से निकले महान क्रांतिकारी और भगवान बिरसा मुंडा जी की।

**Scene-06**

1985, चालकार, झारखंड
जनजातीय समुदाय के एक गाँव में सभी लोग अपने कामों में व्यस्त नज़र आते है। उन्ही के बीच कुछ लोग अपने अपने दुःखो का रोना रो रहे होते है तो कोई अपने दुःखो का कारण अपनी क़िस्मत को मानते हुए जीवन से हार मान चुके बैठे हुए होते है।
गाँव के कुछ लोग एक पेड़ के नीचे बैठे हुए आपस में बातें करते हुए
शामू- ऐसे कैसे तुम्हारी बात को मान लूँ?
कानू- मत मानो, देख रहे हो ना कैसे हालातों में जी रहे है सभी गाँव वाले
शामू- पता नहीं और क्या क्या देखना बाक़ी है
पास बैठा दीनू आसमाँ की ओर देखकर मायूसी से
दीनू- पता नहीं आख़िर कब तक भगवान सिंह बोंगा हमारी परीक्षा लेंगे?
कानू- सही कहा, सब क़िस्मत का खेल है

**Scene-07**

इनसे कुछ दूरी पर एक घर में गाँव का एक बीमार किसान 'हरिया' अपनी बीमारी से जूझता हुआ दर्द से कर्राह रह होता है और पास में उसकी देखभाल कर रहे उसके बेटे बहु उसकी हिम्मत बढ़ाते हुए
महतो- धैर्य रखिए पिताजी, सब ठीक हो जाएगा
सौम्या- आप वैध जी के पास से दवाई क्यों नहीं ले आते?
महतो अपनी पीड़ा छिपाने की कोशिश करता हुआ दर्द भरी आवाज़ में
महतो- अगर ला सकता तो कब का ले आता लेक़िन रुपया…
इतना बोलकर महतो सौम्या की ओर देखता है और सौम्या अपने पति और घर के हालातों को समझते हुए फ़िर से अपने ससुर की देखभाल में लग जाती है। महतो घर से एक कपड़ा और चाकू उठाता हुआ घर से बाहर की ओर जाते हुए
महतो- पिताजी आप चिंता मत कीजिए, मैं जंगल से जड़ी बूटी लाता हूँ, आप उनसे ज़ल्दी ठीक हो जाओगे
सौम्या की ओर देखकर महतो
महतो- तुम पिताजी का ध्यान रखो, मैं अभी आता हूँ
सौम्या- ज़ल्दी आना
महतो घर से निकलकर जंगल की ओर बढ़ जाता है और उसको जाता देख़ कानू बोलता है
कानू- हमारी क़िस्मत में सिर्फ़ दुःख तकलीफों से अलावा कुछ नहीं लिखा है। वो देखों महतो को, बेचारे के पिता महीने भर से बीमार पड़े है लेकिन.. खैर छोड़ो सब क़िस्मत की मार है

**Scene-08**
थोड़ी देर बाद, महतो ख़ून से लतपत गाँव की ओर दौडा चला आ रहा होता है और ज़मीन पर गिरता-पड़ता तो कभी ख़ुद को सँभालते हुए चिल्लाते हुए गाँव वालों को सावधान करते हुए कहता है
महतो- वो आ गए, वो फ़िर आ गए
महतो के इतना बोलते ही गाँव वालों के चेहरों पर खौफ़ छा जाता है और गाँव वाले इधर उधर अपनी जान बचाने के लिए दौड़ने लगते है। तभी पूरे गाँव में अजीब सा सन्नाटा पसर जाता है और कुछ पल बाद घोड़ो के क़दमो की आवाजें सुनाई देती है। घोड़ो की बढ़ती आवाज़ के साथ गाँव के लोगों का खौफ़ और डर बढ़ता जाता है। अब सामने से आते हुए कुछ घोड़ो के क़दमो को दिखाया जाता है। घोड़ो के क़दमो की वजह से वातावरण में धूल उड़ती जा रही होती है। इन्हीं सब के बीच घोड़ो के

ऊपर बैठे कुछ अंग्रेज सिपाहियों को गांव के अंदर आता दिखाया जाता है। अंग्रेज सिपाहियों के हाथों में लाठी और सरकारी बंदूकें होती है और उनके चेहरों से हैवानियत साफ़ झलक रही होती है। सभी गाँव वाले उनसे खौफ़ खाकर एक साथ खड़े हुए उनके आगे हाथ जोड़कर कांप रहे होते है। उनको डरता हुआ देखकर सिपाहियों में मौजूद एक घोड़े पर सवार दरोगा 'सिल्वेस्टर' थोड़ा आगे आता हुआ उनकी हालत देखकर ख़ुश हो रहा होता है और उनको कुछ देर देखने के बाद बोलना शुरू करता है
सिल्वेस्टर- तुम्हारे खेतों में फ़सल कितनी हुई?
सभी गाँव वाले काँपते हुए चुपचाप खड़े हुए हैं और एक दूसरे की ओर देखने लगते है। उनको चुप देखकर दरोगा ग़ुस्से से चिल्लाता हुआ
सिल्वेस्टर- सुनाई नहीं देता?
एक गाँव वाला डरता हुआ आगे आकर उनके आगे घुटनों के बल बैठता हुआ
चम्पक- साहब! माफ़ कर दीजिए हमें। हमसें भूल हो गयी। हम लोग आने ही वाले थे लेकिन...
दरोगा थोड़ा घमंड में अपनी बंदूक को कंधे से उतारते हुए
सिल्वेस्टर- लेकिन क्या?
चम्पक- साहब, साहब! हम ग़रीब लोग दो वक्त की रोटी का जुगाड़
सिल्वेस्टर भड़कता हुआ बंदूक का निशाना चम्पक पर तानते हुए
सिल्वेस्टर- उससे हमको क्या मतलब? ब्रिटिश सरकार को तुम्हारे दुःख और ग़रीबी से कोई लेना देना नहीं है। अगर तुम भूखे नंगे लोग खेतों में फ़सल उगाओगे तो टैक्स देना होगा, लगान चुकाना होगा
कानू डरता हुआ कुछ बोलने की कोशिश करता है कि तभी अपने घर से लाठी के सहारे बीमार हरिया बाहर आते हुए काँपती हुई आवाज़ में बोलता है
हरिया- हमारी खेती से हम लोगों का दो वक़्त की रोटी का भी जुगाड़ नहीं हो पाता है तो फ़िर आपको इतना भारी लगान कहाँ से देंगे?
ये सुनते ही दरोगा ग़ुस्से में अपने सिपाहियों को हुक्म देता हुआ
सिल्वेस्टर- अगर लगान चुकाने के पैसा नहीं है तो लगान के बदले गाँव वालों के हर घर में से अनाज, मक्का, धान और जो भी फ़सल रखी होती हैं, उनको उठाकर साथ में लेकर चलो
ये सुनकर सभी गाँव वाले उनके आगे गिड़गिड़ाने लगते है और हरिया हिम्मत करके आगे आता हुआ दरोगा से विनती करता हुआ बोलता है

हरिया- माईबाप, हम आदिवासियों के खेतों में जितना भी अनाज और मक्का उगता है, उससे हम और हमारा परिवार बड़ी मुश्किल से पूरे साल खाना खाते है और इसके बावजूद भी अधिकतर समय तो हम लोगों के पास खाने को कुछ भी नहीं होता है। अगर आप हमसें आधा अनाज लगान के तौर पर ले जाओगे तो हमारे बच्चें भूखे मर जायेंगे। हम पर रहम करो साहब।
लोगों को अपने सामने गिड़गिड़ाते हुए देखकर मानो दरोगा को सुकून मिल रहा होता है और वो ये देखकर हँसने लगता है। सिल्वेस्टर को हँसता देख उसके साथ आये सभी सिपाही भी हँसने लगते है। अंग्रेजो को अपनी मजबूरियों पर ऐसे हँसते हुए देखकर गाँव वाले एक दूसरे की ओर दुःखी होकर देखते हैं और नज़रों को झुका लेते है। दरोगा अपने घोड़े से नीचे उतरकर हरिया को धक्का मारता है और सभी सिपाहियों को अनाज के बोरो को साथ लेकर जाने के लिए कहता है।
सिल्वेस्टर- सुना नहीं तुम लोगों ने? इनके घर में रखा अनाज का एक-एक दाना उठाकर अपने साथ लेकर चलो
सभी गाँव वाले उनके आगे गिड़गिड़ाते है, विनती करते है और रहम की भीख माँगते हुए ऐसा ना करने की बात कहते है, लेकिन सिल्वेस्टर और उसके साथ आये सिपाहियों को उनके ऊपर ज़रा सा भी तरस नहीं आता और वो लोग गाँव वालों के घर में से अनाज के बोरो को उठाकर बाहर फैंकने लगते है।

**Scene-09**

अंग्रेजो के जाने के बाद जब सभी का ध्यान हरिया पर जाता है तो उनको मालूम पड़ता है कि हरिया को सिर में चोट लगने की वजह से उसकी मौत हो चुकी होती है। सभी लोग रोते-बिलखते भगवान से उनके ऊपर हो रहे अन्याय को रोकने की बात कहते है।
महतो अपने पिता की लाश को अपनी बाहों में भरते हुए जमीन पर बैठकर रोने लगता है और आसमाँ की ओर देखकर भगवान से शिक़ायत करता हुआ बोलता है
महतो- हे भगवान सिंह बोंगा, ये तेरा कैसा इंसांफ है? एक तरफ़ तेरे भक्तों पर ज़ुल्म बढ़ता जा रहा है और दूसरी तरफ़ अन्याय को करने वाले लोग ख़ुश और सुखी से जीवन बिता रहे है
तभी गाँव के लोग उसको हौसला रखने की बात कहते हुए हरिया के अंतिम संस्कार करने की बात कहते है
कानू- अब क्या करना है?
शानू- हरिया काका का अंतिम संस्कार

गाँव वाले जानते है कि जंगल में किसी भी आदिवासी समुदाय को किसी के भी अंतिम संस्कार करने की अनुमति नहीं होती है लेकिन वो सभी अंग्रेजो को कानो कान ख़बर लगे बिना हरिया के अंतिम संस्कार करने की बात करते हुए, हरिया की लाश को उठाकर जंगल की तरफ चल देते है

दीनू- चलो ज़ल्दी करो, अगर गोरों को पता चल गया तो पूरे गाँव पर उनका कहर टूट पड़ेगा

ये सुनकर गाँव वाले हरिया की लाश का अंतिम संस्कार करने के लिए आगे बढ़ते हैं। महतो अपने पिता की लाश का अंतिम संस्कार करने के लिए उन लोगों के साथ चल पड़ता है और रोता जाता है। उसको सभी लोग हिम्मत रखने और ये सब भगवान की मर्ज़ी बताते हुए आगे बढ़ते जाते है और हरिया की लाश को उठाकर जंगल की ओर चलते जाते है।

कालू- हिम्मत रखो महतो, ये सब भगवान की मर्ज़ी है

**Scene-10**

सभी लोग जंगल में हरिया की लाश का अंतिम संस्कार करने की तैयारियों को करने लगते है। तभी वहाँ घोड़ो पर सवार कुछ अंग्रेज सिपाही आकर, आदिवासियों को वहाँ से जाने के लिए कहते है और अंतिम संस्कार करने से रोकते हैं।

सिपाही- ऐ तुम लोग ये क्या करते हो?

महतो रोता हुआ सिपाहियों की ओर देखकर उनके पास जाकर उनके पैरों को पकड़ता हुआ

महतो- रहम करो साहब हम दुःखीयरो पर, रहम करो। मेरे पिताजी की मौत आपके साहब के कारण हो गयी हैं और उनका अंतिम संस्कार करने के लिए हम लोग जंगल में आये है

सिपाही महतो के मुँह पर लात मारकर उसको गरियाते हुए

सिपाही- एक तो ब्रिटिश सरकार का क़ानून के ख़िलाफ़ जंगल में अंतिम संस्कार करने आये हो और ऊपर से हमारे साहब के ऊपर इल्ज़ाम लगाते हो?

महतो के साथ सभी आदिवासी लोग उनके आगे हाथ जोड़ते हुए

महतो- नहीं नहीं साहब, भारी भूल हो गयी। पता नहीं पिता की मौत की वजह से इस निगोड़े मुहँ से क्या अनाप शनाप निकल गया। माफ़ करो हमको

सिपाही उनको वहाँ से लाश को अपने साथ लेकर जाने की बात कहते है और अंतिम संस्कार करने से मना करते हुए

सिपाही- अगर अंतिम संस्कार करना है तो टैक्स भरना पड़ेगा और अगर टैक्स नही भर सकते तो अभी तुरंत यहाँ से इस लाश को लेकर चले जाओ
महतो- लेक़िन साहब हम लोग अगर जंगल में अंतिम संस्कार नहीं करेंगे तो कहाँ करेंगे?
सिपाही ये सुनकर गुस्से से महतो के पास आकर उसको धमकाता हुआ
सिपाही- अभी बताते है
ये बोलकर सिपाही अपने घोड़े पर बैठा हुआ हरिया की लाश के पास आकर उसको देखता हुआ घिनन करते हुए आदिवासी लोगों की ओर देखता है और फिर अपने साथ आये बाकी सिपाहियों की ओर देखकर मुस्कुराते हुए हरिया की लाश को एक तरफ से उठाकर पास बह रहे गंदे पानी के नाले में फेंक देता है। ह्रदय को छलनी कर देने वाले इस द्दश्य को देखकर आदिवासी लोग चिल्लाते हुए रोने लगते है और सिपाही को ऐसा करने से रोकने की कोशिश करते है लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। सभी गाँव वाले हरिया की लाश को नाले में पड़ा देखकर रोते जा रहे होते है और सभी सिपाही उनको देखकर उनके ऊपर हँसते हुए वहाँ से चलने लगते है। तभी उनको जाता देख़ महतो गुस्से में एक पत्थर उठाकर सिपाही को मार देता है और उनको बुरा भला कहने लगता है। महतो की इस हरक़त से गुस्सा होकर अंग्रेज सिपाही उन सभी के ऊपर लाठीचार्ज कर देते है जिसमें कई गाँव वाले गंभीर रूप से घायल हो जाते है।

**Scene-11**
सभी गाँव वाले किसी तरह अपनी जान बचाकर गांव में आते है। उनको घायलावस्था में देखकर गाँव के लोग उनसे उनकी इस स्थिति का कारण पूछते हैं
कालू- अरे क्या हुआ तुम लोगों को और ये चोट के निशान?
पाली- तुम लोग तो हरिया काका का अंतिम संस्कार करने गए थे फ़िर ये चोर और खून?
ये देखकर गाँव की महिलाएं भी वहाँ आ जाती है और उनको देखकर हरिया के अंतिम संस्कार और उनके घायल होने का कारण पूछने ही वाली होती है कि तभी महतो रोता हुआ कहता है
महतो- दादा, अंग्रेजो ने पिताजी का अंतिम संस्कार नही होने दिया और पिताजी की लाश को भी नाले में फैंककर चले गए और और…
शांता- और क्या बेटा महतो?

महतो- और हमारे ऊपर लाठीचार्ज करते हुए बोले कि अगर आदिवासियों को जंगल मे अंतिम संस्कार करना है तो पहले टैक्स जमा करना होगा क्योंकि ये जंगल ब्रिटिश सरकार के अधीन आता है
ये सुनकर वहाँ मौजूद सभी लोग इस घटना से आहत हो जाते है और गाँव की महिलाएँ विलाप करने लगती है।

**Scene-12**
इस घटना को कुछ ही समय बीतता है कि गाँव में रहने वाले 'लल्लन' की शादी पड़ोस के गाँव में रहने वाली 'मालती' से होती हैं। जब इसका पता अंग्रेजो को चलता है तो वो उसी रात को ही लल्लन के घर आ जाते है। लल्लन घर से बाहर आकर दोनो हाथों को जोड़कर उनसे, उनके आने का कारण पूछता है
लल्लन- क्या हुआ माईबाप? अगर कोई काम था तो मुझे बुलवा लिया होता, इतनी रात को आने की कोई ख़ास वज़ह?
सिपाही- क्या तुमको नहीं पता है! जब भी यहाँ किसी आदिवासी समुदाय के घर दुलहन आती है तो उस दुल्हन की पहली रात पर सिर्फ़ हमारे बडे साहब 'लार्ड सराय' का हक़ होता है और फ़िर उसके बाद दूल्हे का हक़ होता है"।
इसके साथ ही वो लोग लल्लन को शादी करने का टैक्स भरने की बात भी कहते है।
सिपाही- और शादी करने से पहले तुमनें सरकार को टैक्स दिया?
उनकी बात सुनते ही लल्लन उनके पैरों में गिर पड़ता है और रहम की भीख मांगते हुए
लल्लन- ये क्या बोल रहे हो साहब? ये कब से होने लगा और ये कैसा क़ानून है ब्रिटिश सरकार का, जो शादी करने पर भी, नहीं नहीं साहब रहम करो हम गरीबों पर
सिपाही लल्लन के पास जाकर उसके कंधे पर हाथ रखता हुआ उसको समझाते हुए
सिपाही- तुम्हारी बातों से मेरा दिल पसीज गया है। देखो चिंता मत करो, बस एक रात की ही तो बात है। पहले लार्ड सराय दुल्हन को एक रात अपने पास रखकर परखेंगे, जिसके लिए एक रात दुल्हन को उनके पास छोड़ना होगा। वरना अगर ऐसा नहीं किया जाता तो ब्रिटिश क़ानून के अनुसार, दूल्हे को एक साल की सज़ा सुनाई जाती है और शादी करने पर टैक्स वसूलने के नाम पर 'आदिवासी दुल्हन' को बाज़ार में बेचकर जो पैसा मिलता है उससे टैक्स भरा जाएगा।
लल्लन और अंग्रेज सिपाही की बातों को सुनकर धीरे धीरे गाँव वाले जमा होने लगते है और अंग्रेजो से ऐसा अनर्थ ना करने की विनती करते हुए उनके पैरों में गिर जाते

है,
करुणा देवी- सरकार ऐसा अनर्थ मत कीजिए, एक औरत के लिए उसकी इज्ज़त इसका गहना होता है और आप उसी गहने को, नहीं साहब नहीं, ऐसा ना कीजिए
सिपाही करुणा देवी से अपना पैर छुड़ाने की कोशिश करता हुआ
सिपाही- गहना? What गहना? पैर छोड़ो हमारा वरना दुल्हन के साथ तुमको भी हम अपने साथ ले जाएंगे और फ़िर
ये बोलकर अंग्रेज सिपाही हँसने लगता है और उसकी बात सुनकर करूँगा देवी शर्मिंदगी महसूस करती हुई अपने घर की ओर दौड़ पड़ती है। अब लल्लन सिपाही के पैरों को पकड़कर
लल्लन- आख़िर ये कैसा न्याय है ब्रिटिश सरकार के नुमाइंदों का? हम ग़रीब लाचारों पर क्यों तरस नहीं आता आप अमीर गोरों को?
सिपाही लल्लन की बात सुनकर चिडता हुआ उसको लात मारकर अपने से दूर हटाता हुआ अपने साथ आये सिपाहियों को इशारा करके दुल्हन को उठाकर अपने साथ के चलने के लिए कहता है। 4 सिपाही आगे बढ़कर दुल्हन को उठाकर घोड़े पर बिठाकर अपने साथ लेकर चल देते है और उनको रोकने की कोशिश करते हुए लल्लन और गाँव के कुछ लोग उनके पीछे कुछ दूर तक दौड़ते हुए जा रहे होते है।

**Scene-13**
सिपाहियों के जाने के बाद लल्लन वहीं ज़मीन पर घुटनो के बल बैठ जाता है और अपने सीने को पिटता हुआ ब्रिटिश सरकार और क़ानून को कोसने लगता है
लल्लन- हे भगवान सिंह बोंगा, ये कैसा अनर्थ कर दिया तूने? मैंने तो कभी किसी का बुरा तक भी नहीं सोचा तो फ़िर आज तूने मेरे घर की इज्ज़त क्यों नीलाम होने के लिए भेज दिया? क्यों ये धरती का सीना नहीं फट जाता? क्यों आकाश जमीन पर आकर नहीं गिर पड़ता? सिंह बोंगा न्याय करो, न्याय करो हमारे साथ, हे सिंह बोंगा
गाँव के लोग लल्लन को खड़ा करते हुए अपने साथ उसके घर की ओर लेकर जाने लगते है लेकिन लल्लन अचानक ग़ुस्से में आ जाता है और लार्ड सराय को जान से मारने की बात कहकर उसकी हवेली की ओर दौड़ पड़ता है।
लल्लन- नहीं नहीं मैं ऐसे चुप नहीं रहने वाला, मैं लार्ड सराय से विनती करूँगा की वो मेरी पत्नी को छोड़ दे वरना, वरना आज मैं उस ज़ालिम इंसान को जान से मार दूँगा। हाँ, हाँ मैं उसको जान से मार दूँगा, मार दूँगा, मार दूँगा लार्ड सराय को
ऐसा कहते हुए लल्लन लार्ड सराय की हवेली की ओर दौड़ पड़ता है और गाँव वाले उसको रोकने की कोशिश करते हुए उसके पीछे दौड़ते है, लेकिन लल्लन काफी

तेजी से, अपनी सुधबुध खोकर लार्ड सराय की हवेली की ओर दौड़ा जा रहा होता है। उसको जाता देख सभी लोग एक दूसरे की ओर लल्लन की चिंता करते हुए देख रहे होते है।

**Scene-14**
गाँव में रहने वाले आदिवासी 'सुगना मुंडा' एक खेतिहर मजदूर होते है। उनके परिवार में उनकी पत्नी मुंडाइन, 'करमी हातू' और उनका बेटा 'कोमता मुंडा', बेटी 'डस्कीर' और 'चम्पा' होती है। जब इस घटना का पता सुगना को चलता है तो वो अपने परिवार वालो की चिंता जताते हुए अपनी गर्भवती पत्नी करमी से इस बारे में बाते करता हुआ
सुगना- ब्रिटिश सरकार ने इतने कठोर कानून बनाये हुए हैं कि मुझे अगर अपने परिवार को इन सभी से बचाना है तो दिन-रात मेहनत करके ढ़ेर सारा पैसा कमाना होगा, ताक़ि आगे चलकर हमारे परिवार या बच्चों को अंग्रेजो का कोई ज़ुल्म सहना ना पड़े।
करमी अपने पति की बातों का समर्थन करते हुए उसका साथ देने की बात कहती है लेकिन साथ में चिंता जताते हुए
करमी- आपकी बातें एकदम सही है लेकिन आख़िर हमारे पास मजदूरी करने के अलावा कोई दूसरा काम करने के लिए ना तो रुपया है और ना ही ब्रिटिश सरकार हमें कुछ करने ही देगी।
करमी की बातों को सुनकर सुगना कुछ सोचता हुआ
सुगना- तुम उसकी चिंता मत करो। जानता हूँ कि ये इतना आसान नहीं होगा लेक़िन अगर मुझे अपने परिवार और बच्चों को अच्छा भविष्य देना है तो कुछ ना कुछ तो करना ही होगा। आख़िर कब तक मजदूरी करूँगा।
सुगना ये बोलकर करमी की ओर देखता हुआ खड़ा होता है और बाहर की ओर जाते हुए
सुगना- थोड़ी देर में आता हूँ तुम बच्चों का ख़्याल रखना
सुगना को जाते हुए देखकर करमी उससे पूछती है
करमी- कहाँ जा रहे हो?
सुगना गंभीर होकर करमी से
सुगना- रात के भोजन का इंतेज़ाम करने
ऐसा बोलकर सुगना घर से बाहर निकल जाता है और उसको जाता देख करमी कुछ सोचती हुई अपनी बेटियों के बारे में सोचकर परेशान होने लगती है और भगवान से

सब कुछ ठीक करने की प्रार्थना करने लगती है।
करमी- हे भगवान सिंह बोंगा, अपनी कृपा हमेशा बनाकर रखना मेरे परिवार के ऊपर
ऐसा बोलकर करमी अपने बच्चों की ओर देखती है और फ़िर अपने गर्भ के ऊपर हाथ फिराते हुए चिंतित नज़र आती है

**Scene-15**
झारखंड के नामी-गिरामी और बड़े-बड़े सेठ साहूकार, व्यापारियों और सरकारी अफसरों के साथ, अंग्रेजो के आला अधिकारी, लार्ड सराय 'जोज़फ़ बेथ' की हवेली में बैठे हुए जोज़फ़ बेथ का उसके कमरे में से बाहर आने का आने का इंतज़ार कर रहे होते है। आज किसी महत्वपूर्ण क़ानून व्यवस्था को झारखंड में लागू करने के लिए ये सभा बुलाई जाती है। सभी लोग बेसब्री के साथ एक दूसरे से इस सभा और नए क़ानून को लेकर आपस में ख़ुसर फुसर करते नज़र आ रहे होते है। शहर के सोना व्यापारी 'लाला हरदयाल' अपने पास बैठे हुए जिलाधिकारी से इस सभा के बारे में पूछते हैं
लाला हरदयाल- आपको कुछ पता है कि हम सभी को यहाँ क्यों बुलाया गया है?
जिलाधिकारी "हरकिशन गुप्ता' अपनी जेब से रुमाल निकालकर, अपने माथे पर आए पसीने को पोंछते हुए
हरकिशन गुप्ता- मुझे भी आपके जितना ही मालूम है लाला जी
लाला हरदयाल थोड़ा परेशान होते हुए अपने पैरों को लगातार हिलाते हुए ख़ुद से
लाला हरदयाल- पता नहीं अब इन गोरों ने क्या क़ानून बनाया होगा
तभी वहाँ उपस्थित लार्ड सराय के कानूनी सलाहकार 'हैरी कॉल्स' सभी को संबोधित करते हुए बोलना शुरू करते है
हैरी कॉल्स- आप सभी का यहाँ आने के लिए धन्यवाद! अभी जोज़फ़ सर किसी ज़रूरी काम में व्यस्त है और उन्होंने आपकी आवभगत करने का ज़िम्मा मुझे सौंपकर यहाँ भेजा है। जैसा कि आप जानते है कि लार्ड सराय जोज़फ़ बेथ को पूरे झारखंड राज्य की कानून व्यवस्था के साथ साथ देश की क़ानून व्यवस्था को भी देखना पड़ता है। वो झारखंड में नए ब्रिटिश क़ानून की प्रक्रिया में लगे हुए हैं और जैसे ही उनका काम ख़त्म होगा वो तुरंत आप सब से आकर मिलेंगे। आप सब कुछ ठंडा गर्म लेना चाहेंगे?
कोई कुछ बोलता उससे पहले ही लार्ड सराय अपने कमरे से बाहर निकलते हुए अपने कपड़ों को ठीक करते हुए आते दिखाई देते है। उनको आता देख सभी लोग

उनके खौफ़ और सम्मान में खड़े हो जाते है। लार्ड सराय जोज़फ़ वहाँ आकर सामने ख़ाली पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए बोलते है
जोज़फ़ बेथ- मुझे पता है कि आप सभी को यहां कोई समस्या नहीं हुई होगी और मैंने भी आने में ज़्यादा देर नहीं कि होगी।
जोज़फ़ अपने कानूनी सलाहकार हैरी की ओर देखते हुए
जोज़फ़- क्यों हैरी, मैने ठीक कहा ना?
हैरी कुछ बोलता उससे पहले ही लाला हरदयाल जोज़फ़ की चाटूकारिता करते हुए
लाला हरदयाल- अरे नहीं नहीं साहब, भला आपकी वजह से हम लोगों को कोई तकलीफ़ हो सकती है क्या?
लाला हरदयाल की बातों को सुनकर जोज़फ़ मुस्कुराते हुए बोलना शुरू करते है
जोज़फ़- you are right, you are right
वहाँ मौजूद एक कारोबारी विजय नाथ जोज़फ़ से पूछता हुआ
विजय नाथ- साहब! अचानक हम सभी को यहाँ बुलाने और इस मीटिंग की कोई ख़ास वज़ह?
जोज़फ सामने टेबल पर रखे अपने सिगार को उठाकर जलाता हुआ उन सभी से
जोज़फ- आज यहाँ आप सभी को एक खास वजह से बुलाया गया है। शायद आपको पता ही चल गया होगा कि ब्रिटिश सरकार झारखंड में एक नए क़ानून व्यवस्था को लागू करने पर विचार कर रही है?
विजय नाथ- जी सर, लेक़िन वो क़ानून...
जोज़फ उसकी बात काटते हुए अपने सिगार के ऊपर जमी राख को स्ट्रे में झाड़ते हुए
जोज़फ- हां हां क़ानून क़ानून, तो मैने आप सभी को यहाँ इसीलिए बुलाया है कि ब्रिटिश सरकार और हमने मिलकर भारत के साथ झारखंड में नए कानूनों को लागू करने की एक लिस्ट तैयार की है। जिसके अनुसार आज के बाद सभी लोगों को वो मानना होगा।
सरकारी अधिकारी रमन सिंह जोज़फ से पूछते हुए
रमन सिंह- पर ये क़ानून है क्या साहब और इसको लागू करने से हमारा मेरा मतलब ब्रिटिश सरकार का क्या फ़ायदा होगा?
जोज़फ रमन की ओर देखकर मुस्कुराते हुए उसके पास जाता हुआ
जोज़फ- हमनें फैसला किया है कि ...
इतना सुनते ही सभी लोग लार्ड जोज़फ के कमरे से निकलती हुई मालती को देखते हैं जो लड़खड़ाकर चल रही होती है। मालती की हालत काफ़ी ख़राब होती है और

वो लगातार रो रही होती है। सभी को अपने कमरे की ओर देखते हुए जोज़फ भी पीछे मुड़कर मालती की ओर देखते है और उन सभी की ओर देखकर मुस्कुराते हुए
जोज़फ- ये? ये भी हमारे नए क़ानून का हिस्सा ही है
ऐसा बोलकर जोज़फ हँसने लगता है। जोज़फ की बात सुनकर वहाँ उपस्थित कुछ लोग जोज़फ की बेशर्मी पर उसके साथ हँसते तो कुछ लोग शर्मिंदगी महसूस करते हुए अपने सिर को झुका लेते है। मालती की वजह से उन सभी लोगो का ध्यान भटकते हुए देखकर जोज़फ अपने एक सिपाही से इशारा करके मालती को वहाँ से भेजने के लिए कहता है और फिर दौबारा से अपनी बातों को बोलना शुरू करते हुए
जोज़फ- हमारे नए कानून के अनुसार आज के बाद झारखंड की जनता महुआ की फसलों को होने में ज़्यादा ध्यान देगी और उसके साथ ही भांग की खेती को भी करना सभी किसानों और आदिवासी समुदाय के लिए अनिवार्य होगा। हम पहले नौजवानों को मुफ्त में भांग देंगे और जब नौजवान भांग के नशे के आदी हो जायेगे तो उनसे मुहँ मांगा पैसा लिया करेंगे।
लाला हरदयाल- लेकिन इससे ब्रिटिश सरकार को क्या फ़ायदा होगा? ऐसे तो देश की युवा पीढ़ी बर्बाद हो जाएगी और...
ये सुनते ही जोज़फ लाला हरदयाल पर भड़कता हुआ अपना सिगार उसके ऊपर फेंकता हुआ
जोज़फ- बर्बाद होते है तो होने दो, उससे हमको या ब्रिटिश सरकार को कोई फ़र्क नहीं पड़ता है। हमको सिर्फ़ और सिर्फ़ भारत पर अपना राज क़ायम रखना है और उसके लिए हमें जो भी करना पड़ेगा हम करेंगे। इसलिए आगे से कोई हमको सही ग़लत का ज्ञान ना दे तो ही बेहतर होगा।
ये सुनकर सभी लोग शांत और गुमसुम होकर बैठ जाते है और जोज़फ सभी की ओर ग़ुस्से में देखकर अपनी बात को आगे बोलना शुरू करते हुए
जोज़फ- पहले भारतीयों के खेतों में उनसे भांग की फ़सल पैदा कराओ और फ़िर उसी भांग को उनके बच्चों और युवा पीढ़ी को मुफ़्त में खिलाओ, उसका आदी बनाओ और जब वो इस नशे के आदि हो जाये तो फ़िर उनसे नशे के बदले मुँह मांगे पैसों को लो। अब इससे होगा ये की या तो नौजवान उनको मुहँ मांगा पैसा देगा या फिर नशे के लिए हमारे आगे ब्रिटिश सरकार के आगे गिड़गिड़ाएगा। दोनो ही सूरतों में हमारा फ़ायदा होगा। जिसके पास पैसा होगा वो पैसा देगा और जिसके पास पैसा नही वो हमारी आधीनता और गुलामी को स्वीकार करके नशा करेगा।
इसके बाद दूसरा काम ये करना होगा कि हर चीज़ पर भारी लगान लगाओ, कैसे भी भारी टैक्स वसूलों। किसी के घर में बच्चा पैदा हुआ तो उसको बच्चे के जीवनदान के

लिए टैक्स देना होगा। किसी की मौत हो और उसका अंतिम संस्कार करना है तो भी टैक्स देना होगा। खाने, पीने, रहने, कपड़े, पानी, शादी करने या बच्चा को पालने पोसने के लिए भी टैक्स देना होगा और सिर्फ़ इतना ही नहीं कोई त्यौहार मनाना हो या फ़िर खेतों में पानी भी देना हो, यहाँ तक कि खुली हवा में सांस लेनी है तो ब्रिटिश सरकार को टैक्स चुकाना होगा। वरना कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान रखा जाएगा और इन सभी की शुरुआत हमको सबसे पहले जंगलों, छोटे कस्बों में रहने वाले लोगों और आदिवासी समुदाय जनजातियों के लोगों से करनी होगी। सबसे पहले उनको दबाना और क़ानून के नाम पर कुचलना होगा, उनको आर्थिक से ज़्यादा मानसिक रूप से बर्बाद करना होगा जिसके कारण वो सभी जिंदा लाश बनकर जीने को मजबूर हो जाएंगे। जब ऐसा होने लगे तो चारो तरफ खबर फैला देना की अगर जिंदा रहना चाहते हो तो ब्रिटिश हुकूमत की दासता को स्वीकार कर लो और वो ही करो जो ब्रिटिश सरकार करने को कहे। उन लोगों को हर तरह से लुभावने लालच को देकर अपने आगे झुकने पर मजबूर कर दो। जब हम भारत मे नही भी होंगे तो भी हमारा राज हमारे गुलामों पर चलता रहेगा। ये लोग जन्म एक भारतीय बनकर लेंगे लेक़िन मानसिक तौर पर ये ब्रिटिश सरकार के जन्मजात गुलाम ही होंगे। मरो या फिर हमारी गुलामी करो, एक ही रास्ता छोड़ो भारतीयों के आगे और इन सबकी शुरुआत जंगली आदिवासियों से करो, कबीलों से करो, छोटी जाति, जन समुदाय को बर्बादकरने के लिए करो।
ये सब सुनकर वहाँ बैठे लोगो की आँखे फटी की फटी रह जाती है लेकिन इसके खिलाफ बोलने की हिम्मत किसी की नहीं होती और सब चुपचाप जोज़फ के डर की वजह से उसकी हां में हां मिलाते जाते है और उसके इस क़ानून व्यवस्था की तारीफ़ करने लगते है।
सरकारी अधिकारी- बहुत ख़ूब सरकार बहुत ख़ूब
सरपंच- राजनीति में आपका कोई ज़वाब नही मालिक
इसी तरह की बातों को बोलते हुए सब जोज़फ की क़ानून व्यवस्था की तारीफ़ करते जाते है और न्याय व्यवस्था, सरकारी महकमों, नेता सब लोग अंग्रेज की चाटूकारिता में लिप्त होते जाते है।
अब जोज़फ की नज़र मालती पर जाती है जो छिपकर ये सभी बातें सुन रही होती है। जोज़फ के इशारा करते ही कुछ सिपाही मालती को पकड़कर जोज़फ के आगे लेकर आते है। जोज़फ़ मालती की हालत को देखने के बाद उसको ऊपर से नीचे तक हवस की नज़र से देखता हुआ उसको कहता है
जोज़फ- लो शादी का तोहफा

ऐसा बोलकर जोज़फ अपनी जेब से कुछ चांदी के सिक्के निकालकर उसके हाथ मे रख देता है और टेबल पर रखी मांस की बोटी के साथ कुछ रोटियों को उसके आगे फेंक देता है।
जोज़फ मालती को जाने का इशारा करते हुए
जोज़फ- अब निकल इधर से, खड़ी क्यों है?
मालती गुस्से में रोती हुई जोज़फ की ओर देखती जा रही होती है लेकिन गुस्से में भरी होने के कारण उसके मुंह से एक शब्द भी नही निकल पाता है।
तभी जोज़फ मालती की ओर देखता है और इसके हाथों से चांदी के सिक्कों को छिनता हुआ कहता है
जोज़फ- ये नहीं देने चाहिए तुम आदिवासी लोगो को
तभी हैरी जोज़फ से चांदी के सिक्कों को वापस लेने का कारण पूछता हुआ
हैरी- ये क्यों वापस ले लिए सर आपने?
जोज़फ मालती की ओर घृणा से देखता हुआ
जोज़फ- अगर आज इनको ये सिक्के दे दिए तो इन आदिवासियों और महिलाओं की आदत खराब हो जाएगी और आदिवासी महिलाएं इसको धंधा बनाकर मेरा बिस्तर गर्म करने को तड़पेगी। ये सुनकर मालती किसी की परवाह किये बिना मांस की बोटी, रोटी जोज़फ के ऊपर फेक देती है और उसके मुँह पर थूकते हुए
मालती- हरामी, अपनी माँ बहनों के लिए भी ये ही सोचता होगा ना, कुत्ते
जोज़फ़ मालती के इस अपराध की सज़ा देने के लिए अपने सिपाहियों से बोलता है
जोज़फ- इसको उठाकर जेल में डाल दो, अब ये ताउम्र अंग्रेजी सिपाहियों की भूख मिटाने के काम आएगी
कुछ सिपाही मालती को पकड़ने के लिए आगे कदम बढ़ाते ही है कि तभी एक पत्थर का मोटा सा टुकड़ा एक सिपाही की आंख में आकर लगता है। सभी सिपाही अपने चारों तरफ देखने लगते है कि तभी उनको सामने से लल्लन दौड़ता उनकी ओर गुस्से में आता हुआ दिखाई देता है। लल्लन अपनी पत्नी की हालत देखकर मायूसी में
लल्लन- मालती
लल्लन गुस्से से भरा हुआ जोज़फ की ओर देखकर
लल्लन- लार्ड सराय, गोरे
ये बोलता हुआ लल्लन लार्ड सराय की ओर गुस्से में उसको मारने के लिए दौड़ा आ रहा होता है। लल्लन को पागलों की तरह गुस्से में अपनी ओर आता देखकर जोज़फ अपनी बंदूक उठाता है और पास आ रहे लल्लन को गोली मार देता है। गोली लगते ही लल्लन औंधे मुंह जमीन पर निर्जीव लाश बनकर गिर पड़ता है। ये देखकर

मालती अपनी सुदबुध खोती हुई जोज़फ के ऊपर हमला करने की कोशिश करती हुई
मालती- नहीं…...
मालती को लार्ड सराय के ऊपर गुस्से में हमला करते हुए देखकर, एक सिपाही उसके सिर में अपनी बंदूक से वार करता है जिसके कारण मालती भी वहीं ढ़ेर हो जाती है। उन दोनों की लाश को देखकर सिपाहियों की ओर देखकर जोज़फ अपना सिगार जलाता हुआ सिपाहियों की ओर इशारा करके अंदर चला जाता है। ये सब देखकर वहाँ खड़े सभी लोग कुछ ना कर पाने की अपनी मजबूरी को महसूस कर रहे होते है। कुछ सिपाही लल्लन और मालती की लाश उठाकर जंगल में फेंकने चल देते है।

**Scene-16**
गोरे सिपाही मालती और लल्लन की लाश को जंगल में फैंककर वापस जा रहे होते है। उनको जाता देख गाँव के कुछ आदिवासी लोगों की नज़र उनपर पड़ती है। अंग्रेजो को देखकर वो सभी एक दूसरे को चुप रहने का इशारा करते हुए एक झाड़ी के पीछे छिपकर उनको जाता हुआ देख रहे होते है और उनके जाने के बाद सभी धीरे-धीरे ये देखने के लिए आगे बढ़ते हैं कि इतनी रात को अंग्रेजो के सिपाही इस जंगल में क्या करने के लिए आए होंगे। वो सभी पास जाकर देखते हैं तो उनको झाड़ियों में लल्लन की लाश पड़ी नज़र आती है। लल्लन की लाश को देखकर वो सभी एक-दूसरे से उस ओर जाने के लिए कहते हुए
धनिया- अरे ये तो अपने गाँव का लल्लन है, क्या हुआ इसको? अरे आओ रे आओ सभी इधर देखो, लल्लन को क्या हुआ है
तभी लल्लन की ओर जाते गाँव के दूसरे आदमी नीलकंठ की नज़र मालती की लाश पर जाती है और वो दौड़कर मालती की लाश की ओर जाते हुए
नीलकंठ- एक और लाश पड़ी हुई है, लगता है किसी महिला की है
नीलकंठ लाश के पास जाकर उसका चेहरा देखकर रोते हुए
नीलकंठ- हे भगवान, ये तो अपने गाँव की बहू मालती है, लल्लन की घरवाली
तभी सभी गाँव वाले एक-दूसरे से- उठाओ, उठाओ ज़रा इनको, इनको उठाकर गाँव में लेकर चलो, अनर्थ हो गया धनिया भईया, घोर अनर्थ
इसी तरह एक दूसरे को बोलते हुए रोते बिलखते और उन दोनों की मौत का दुःख मनाते हुए वो लोग लल्लन और मालती की लाश को उठाकर गाँव की ओर चल पड़ते है

**Scene-17**
इस घटना के कुछ समय पश्चात, आज सुगना के घर में एक बेटे का जन्म होता है, जिसको सभी गाँव वाले भगवान सिंह बोंगा का अवतार मानकर अपना मसीहा, नेतृत्वकर्ता आदि नाम से पुकारते हुए उनके घर के बाहर इकट्ठा हो जाते है।
गाँव वाले- बधाई हो सुगना बधाई हो, तुम्हारे घर हमारे उद्धारकर्ता भगवान सिंह बोंगा के अवतार ने जन्म लिया है
सुगना ये सुनकर हल्की मुस्कान के साथ गांव वालों से
सुगना- ये क्या बोल रहे हो आप लोग? अवतार और वो भी भगवान सिंह बोंगा ने मेरे घर। पागल तो नहीं हो गए हो आप लोग? कुछ भी बोले जा रहे हो
गाँव वाले- नहीं नहीं सुगना, हम सही बोल रहे है। पता है आज कौन सा दिन और नक्षत्र है। ब्रस्पतिवार और कृष्ण योग नक्षत्र
सुगना तोड़ा गंभीर होकर गाँव वालों के पास कुछ क़दम आता हुआ
सुगना- तो?
गाँव वाले एक साथ- तो इसका मतलब है कि हमारे गाँव और तुम्हारे घर में हमारे नेतृत्वकर्ता ने जन्म ले लिया है। अब ये ही हमें हमारे सभी दुःखो से निजात दिलाएंगे
सुगना- पागल हो गए हो क्या? जिस घर में खाने के लिए ठीक से दो वक़्त का खाना भी नसीब होता, तुम कहते हो कि उस घर में साक्षात भगवान सिंह बोंगा ने मेरे बेटे के रूप में जन्म लिया है? तुम सबका दिमाग़ ख़राब हो गया है, जाओ यहाँ से
सभी गाँव वाले- हम पागल नहीं हुए है, आज के दिन और ऐसे नक्षत्र में जन्म लेने वाले भगवान ही है इसलिए आज ब्रस्पतिवार के दिन जन्म लेने के कारण उनका नाम हम सभी बिरसा रखते है
ये सुनते ही सुगना गाँव वालों की ओर आश्चर्य से देखने लगते है और फ़िर बिना कुछ बोले ही घर के अंदर चले जाते है। घर के बाहर खड़े सभी लोग एक आवाज़ में
गाँव वाले- भगवान बिरसा मुंडा की, जय हो। भगवान बिरसा मुंडा की जय हो।
ऐसे ही नारों को लगाते हुए सभी गाँव वाले वहाँ से अपने अपने घर की ओर जाने लगते है

**Scene-18**
घर के अंदर लेटी हुई करमी अपने बेटे को प्यार से निहारती और लाड़ जताती रही होती है। अपने पति को अंदर आते देख उससे पूछती है
करमी- ये बाहर आवाज़ कैसी? ये लोग किसकी जय जयकार कर रहे है?
सुगना करमी के समीप जाकर बैठता हुआ

सुगना- पागल हो गए है गाँव वाले, कहते है कि हमारे घर भगवान सिंह बोंगा ने इस बच्चे के रूप में जन्म लिया है जो हम सभी को अंग्रेजो की गुलामी और सभी परेशानियों से आज़ादी दिलाएगा।
करमी- उनको ऐसा क्यों लगा?
सुगना- छोड़ो ना तुम ये सब बातें। गाँव वाले तो पागल हो चुके है। और सुनो, हमारे बेटे ने ब्रस्पतिवार को जन्म लिया है इसलिए उसका नाम भी रखकर चले गए है गाँव वाले
करमी- अच्छा? क्या नाम रखा हमारे बच्चे का
सुगना- बिरसा, बिरसा मुंडा
करमी नाम सुनते ही मुस्कुराते हुए सुगना से
करमी- बिरसा, बिरसा मुंडा, हमारे बच्चे का नाम बिरसा रखा है सभी ने मिलकर। बहुत ही प्यारा नाम है। मुझे तो नाम बहुत अच्छा लगा। क्यों ना हम इसका नाम बिरसा ही रखे?
सुगना करमी के पास से अपने नवजात बच्चे को उठाता हुआ, बच्चे की तरफ प्यार से देखकर
सुगना- हां क्यों नहीं, बहुत प्यारा नाम है। आज से हमारे बेटे का नाम होगा - बिरसा, बिरसा मुंडा
ये कहते हुए सुगना अपने बच्चे को थोड़ा हवा में उछालते है और तभी

**Scene-19**
कचहरी के बाहर वकीलों के पास बैठे हुए सरकारी बाबू के हाथ से नौकरानी की ग़लती की वजह से चाय का कप नीचे गिर जाता है। ये देखकर नौकरानी डरती हुई माफ़ी मांगने लगती है लेकिन सरकारी बाबू नफ़रत और गुस्से में नौकरानी से
सरकारी बाबू- अंधी कहीं की, दिखाई नहीं देता तुझे? सारा मुड़ ख़राब कर दिया
नौकरानी डरती हुई चाय के टूटे कप को उठाते हुए
नौकरानी- ग़लती हो गई साहब
सरकारी बाबू- ग़लती तो सरकार से हुई है जो तुम ज़ाहिल गवार आदिवासियों को काम पर रख लेते है।
तभी सरकारी बाबू का मुंशी आकर सरकारी बाबू से
मुंशी- साहब, एक ख़बर लाया हूँ
सरकारी बाबू- क्या?

मुंशी- साहब, पड़ोस के आदिवासी के एक घर में लड़के का जन्म हुआ है, अभी मुझे मेरे खबरी ने आकर सूचना दी है
सरकारी बाबू मुस्कुराते हुए अपनी कुर्सी से खड़ा होता हुआ मुंशी को अपने साथ चलने के कहता हुआ
सरकारी बाबू- चलो हमारे साथ, आदिवासियों को बधाई देकर आते है
अब सरकारी बाबू अपने मुंशी के साथ कुछ अंग्रेज सिपाहियों को लेकर गाँव की ओर बढ़ जाते है।
नौकरानी ये सब देखते हुए, दोनो हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना करते हुए
नौकरानी- भगवान, रहम करना उस परिवार पर

**Scene-20**
सुगना अपने बच्चे और गांव के कुछ लोगों के साथ, अपने घर के बाहर बैठे हँसते-मुस्कुराते इधर-उधर की बातों को कर रहे होते है।
सुगना- बिरसा, देखो देखो मैं तुम्हारा पिता सुगना और देखो ये तुम्हारे चाचा, काका और ये तुम्हारा बड़ा भाई
तभी सरकारी अधिकारी के साथ कुछ अंग्रेज सिपाही उनके गाँव में आते है। सरकारी अधिकारी गाँव वालों से सुगना के घर के बारे में पूछते हुए आगे बढ़ते जा रहे होते है। सुगना के बारे में पूछते हुए वो लोग सुगना के घर के बाहर जाकर रुकते हैं। घर के बाहर बैठा सुगना, अंग्रेज सिपाहियों और सरकारी बाबू को अपने घर के बाहर ऐसे अचानक आकर रुकते हुए देखने पर घबरा जाता है। सुगना खड़ा होकर दौड़कर उन लोगों के आगे झुकता हुआ उनको सलाम करता है और उनके आने का कारण पूछता है।
सुगना- राम राम साहेब, आपने आने का कष्ट क्यों किया? हमको बुलवा लिया होता
अधिकारी सुगना के बेटे को गाँव के एक आदमी की गोद में देखकर, सुगना से पूछते हैं
सरकारी बाबू- क्या तुम्हारें घर में बेटे का जन्म हुआ है?
सुगना उन सभी की ओर डरा-सहमा देखता हुआ कहता है
सुगना- हाँ साहब।
ये सुनकर सरकारी बाबू अपने घोड़े से नीचे उतरकर उन सभी को गुस्से और घृणा से देखते हुए
सरकारी बाबू- तो फ़िर बच्चा पैदा होने पर टैक्स भरना पड़ेगा

ये सुनकर गाँव वाले अचानक से खड़े होकर हैरानी से सरकारी बाबू की ओर देखते हैं और सुगना गाँव वालों की ओर देखता हुआ सरकारी बाबू के आगे हाथ जोड़कर
सुगना- बच्चा पैदा होने पर टैक्स? ये कौन सा क़ानून बता रहे हो साहब? ये कैसी बात कर रहे हो? भला....
सरकारी बाबू गुस्से से सुगना को उसकी बात काटने पर भड़कता हुआ
सरकारी बाबू- ये ब्रिटिश सरकार का नया क़ानून है। बच्चा पैदा करोगे ब्रिटिश की ज़मीन पर और पालेंगी ब्रिटिश सरकार?
सुगना- लेकिन साहब
तभी सरकारी बाबू का मुंशी उसकी बात काटते हुए सुगना को डाँटते हुए
मुंशी- अरे सुगना क्यों साहब से बहस करके उनको गुस्सा दिलाता है? हैं?
सुगना- मैं तो बस...
मुंशी- कुछ मत पूछ और सिर्फ़ सुन, टैक्स भरदे वरना ब्रिटिश सरकार के नए क़ानून के तहत अगर तुमने ऐसा नहीं किया, तो सरकार तुम्हारें सभी बच्चों को अपने यहाँ गुलाम बनाकर गुलामी करायेंगे और वो भी पूरे 10 साल के लिए।
ये सुनकर सुगना हाथ जोड़कर उन सभी से ऐसा कुछ ना करने की विनती करता है और जल्दी ही बेटा पैदा होने का टैक्स के रुपयों का इंतेजाम करके टैक्स भरने की बात कहता है।
सुगना- नहीं नहीं साहब, ऐसा मत करना, मैं जल्दी ही कचहरी आकर टैक्स भर दूँगा लेक़िन हमारे बच्चों पर रहम खाओ माईबाप
ये सुनकर सरकारी बाबू और उसके साथ आए सभी लोग वहाँ से चले जाते है और उनके जाने के बाद सुगना पीछे मुड़ता है तो देखता है कि उसकी पत्नी घर के दरवाज़े के पीछे खड़ी ये सब बातें सुन रही होती है। वो दोनो एक दूसरे की ओर देखकर, बिना कुछ बोले ही अपने दुःखो को, अपने आसुओं और चेहरे पर आई चिंता की झुर्रियो से बयां कर रहे होते है

**Scene-21**
सुगना के घर से कुछ दूर पहुँचने पर सरकारी बाबू के साथ, अंग्रेजो की नज़र एक आदिवासी 'रम्पत' पर पड़ती हैं जो जंगल की लकड़ियों को तोड़कर अपना घर बनाने के लिए जंगल से अपने कंधे पर कुछ लकड़ियों के गट्ठर को लेकर आ रहा होता है। कई दिनों की मेहनत के बाद बड़ी मुश्किल से रम्पत, अपना टूटा-फूटा घर बनाने में सफ़ल होने ही वाला होता है कि अंग्रेजो की नज़र उसके घर पर पड़ती है और वो लोग रम्पत का घर तोड़कर उससे बोलते है

सरकारी बाबू- जंगल ब्रिटिश सरकार का है इसलिए, इसके पेड़-पौधों यहाँ तक कि सूखी लकड़ी पत्तियों पर भी सरकार का ही अधिकार है। अगर लकड़ियाँ चाहिए तो पहले टैक्स भरना पड़ेगा, सरकारी अनुमति पत्र लेना होगा वरना जेल जाना पड़ेगा। ये सुनकर रम्पत अपने टूटे-फूटे घर को देखकर रोता हुआ अंग्रेजो के आगे हाथ जोड़कर बैठ जाता है। सरकारी बाबू के साथ सभी लोग वहाँ से हँसते हुए चले जाते है।

**Scene-22**

ब्रिटिश सरकार के ज़ुल्मो को देखकर सभी गाँव वाले एक रात सभा बुलाकर अपने अपने दु:खड़ो और उनके ऊपर हो रहे ज़ुल्मो के बारे में बात करते हुए रो रहे होते है और इन सभी समस्याओं का समाधान खोजने की कोशिश करते हुए आपस में बातें कर रहे होते है

कालू- आख़िर कब ख़त्म होगा ये सब?

रानू मायूस होकर, हर तरह से ख़ुद को टूटा हुआ महसूस करता हुआ

रानू- शायद मौत आने तक

सुगना कुछ क्षण वहाँ बैठे सभी लोगों को टूटा हुआ और जीवन में कभी कोई ख़ुशी ना मिलने की उम्मीद से हताश पाकर उनका उत्साह बढ़ाने की कोशिश करता हुआ

सुगना- हम लोगों को ऐसे हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, कोई ना कोई रास्ता निकल ही आएगा

ये सुनकर महतो उन सभी लोगों को खड़ा होकर ग़ुस्से में

महतो- झूठ बोलता है ये सुगना, कुछ नहीं होने वाला, हम लोग ऐसे ही कीड़े मकोड़े की भांति तड़प तड़पकर मरते रहेंगे और और....

इतना बोलते ही महतो रोने लगता है। तभी उसकी बात को पूरा करते हुए रानू धीमी आवाज़ में बोलता है

रानू- और वो मारते रहेंगे

महतो उन लोगों को अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करने की बात कहकर उनके पास जाता हुआ

सुगना- ऐसा नही है, ये हम लोगो के अंदर का डर बोल रहा है जिसको अंग्रेजो ने हमारी नसों में रमा दिया है

कल्लू- तो तुम क्या चाहते हो सुगना की हम लोग जिनके पास खाने के दाने भी बड़ी मुश्किल से होते है, वो लोग ब्रिटिश सरकार से विद्रोह कर ले?

रानू- ताकि वो हम लोगों को जँगली कुत्ते समझकर हमारा शिकार कर सके

तभी उन लोगों में से एक बूढ़ा आदमी चग्गन लाठी के सहारे खड़ा होते हुए
चग्गन- ऐसे बात नहीं बनने वाली सुगना, मुखियाँ चुनो और उसका फ़ैसला मानो। हर कोई अपनी अपनी बातों को सही बताता रहेगा तो एकता कैसे आएगी समाज में?
ये सुनकर सुगना चग्गन की बात को सही ठहराते हुए
सुगना- लेक़िन मुखियाँ बनेगा कौन?
रानू- मैं
चग्गन- ये बच्चों का खेल नहीं है बेटा रानू। यहाँ पर आदिवासियों के सरपंच को चुनने की बात हो रही है
गाँव के दूसरी ओर बैठी महिलाओं के समूह में से एक औरत 'कमला' बोलती है
कमला- पंच वो जिसको समाज का ज्ञान और आगे होने वाली नीतियों का बोध हो
सुगना सबकी ओर देखकर एक सुझाव देता हुआ
सुगना- अगर आप लोगो को बुरा ना लगे तो एक सुझाव देना चाहता हूँ?
सभी गाँव वाले एक आवाज़ में
गाँव वाले- हां हां क्यों नहीं, क्यों नहीं
सुगना थोड़ा हड़बड़ाते हुए लड़खड़ाती आवाज़ में
सुगना- रामदीन काका को क्यों नहीं चुन लेते
तभी गाँव वाले सुगना की बात का विरोध करते हुए
गाँव वाले- दिमाग तो सही है सुगना? रामदीन को कैसे चुन सकते है? हम ठहरे भगवान सिंह बोंगा के उपासक और वो ठहरा किसी दूसरे देवता को पूजने वाला
सुगना- लेक़िन हम सभी में सबसे ज़्यादा ज्ञान, अनुभव और राजनीतिक नेतृत्व की जानकारी सिर्फ़ रामदीन को ही है और…
सुगना की बात काटते हुए रम्पत सभा में खड़ा होकर ग़ुस्से से
रम्पत- चलो मान लिया कि उसको सरपंच बना देते है लेकिन क्या भरोसा उसका, आज है तो कल नहीं। कब्र में पैर लटक रहे है और तुम उसको सरपंच बनाने की बात करते हो?
इन्हीं बातों को करते हुए उन सभी लोगों में सरपंच अपने मुखियाँ को चुनने का वाद विवाद चलता रहता है लेक़िन उन लोगों में आपसी-तालमेल, अशिक्षा की वजह से विचारों और नेतृत्व की कमी होने के कारण, हर बार की तरह ये सभा भी किसी परिणाम पर नहीं पहुँचती और उन सभी में आपसी मनमुटाव और बहस हो जाती है। हर कोई नेतृत्व करने के लिए ख़ुद को सही दावेदार बताता है लेकिन इसका निर्णय कभी नहीं होता है कि आख़िर उन सभी का नेतृत्वकर्ता कौन सही है और कौन नहीं।

इन सभी कारणों से आदिवासियों का जीवन बद से बदत्तर और नर्क से ज़्यादा बुरा होता जाता है और चारो तरफ दुःख, परेशानी, आर्थिक तंगी, महिलाओं का विलाप और सबकी स्थिति दयनीय जान पड़ती है। सभी लोग रोते बिलखते भगवान सिंह बोंगा से प्रार्थना करते रहते हैं।

**Scene-23**

इन्हीं सब बातों को करते हुए सुबह हो जाती है लेकिन कोई भी किसी निर्णय पर नहीं पहुँचते है। उस सभा में मौजूद एक महिला 'बिमला' अपने जीवन और अंग्रेजो के जुल्मो से हार मानते हुए रोते हुए

बिमला- आख़िर हमारे दुःखो का अंत कब होगा? क्या हम सभी ऐसे ही पीढ़ी दर पीढ़ी दुःखो और गुलामी को सहते हुए मरते जाएंगे या कोई मसीहा हमें इन सभी परेशानियों और दुःखो से बचाने के लिए कोई आएगा?

तभी गाँव का एक बूढ़ा आदमी 'रामदीन' जिसको पिछली रात सरपंच बनाने की बात पर काफी विवाद होता है, अपनी झुकी हुई क़मर पर हाथ रखें वहाँ आता है और अपनी काँपती हुई आवाज़ में सभी को बोलता है

रामदीन- मेरे बाप-दादाओं और मैंने अंग्रेजो की गुलामी की और अब तुम सब भी गुलामी कर रहे हो और तुम्हारे बच्चों के साथ तुम्हारी आने वाली पीढ़ी भी अंग्रेजो की ग़ुलामी करेंगे। हमारी क़िस्मत में सिर्फ़ ग़ुलामी लिखी है और गुलामी करते हुए तड़प-तड़प कर मरना लिखा है। पता नहीं भगवान हम सभी को किस जन्म के कर्मों की सज़ा दे रहे है।

ये सब बोलकर रामदीन वहाँ से जाने लगता है कि तभी बिमला रोती हुई पूछती है

बिमला- तो क्या बाबा हम सभी ऐसे ही जीते रहेंगे? हमारी ज़िंदगी क्या सिर्फ़ गुलामी करते हुए ही ख़त्म हो जाएगी?

रामदीन उसके पास आकर उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहता है

रामदीन- ऐसा नही है बेटी, जब पाप बढ़ता है तो भगवान उसको मिटाने के लिए अपना अवतार धरती पर भेजते हैं। बस मैं तो चाहता हूँ कि मरने से पहले उस अवतार के दर्शन करके मरूं।

ये कहकर सभी एक-दूसरे की तरफ़ दया के भाव से देखते हुए, एक साथ हाथ जोड़कर भगवान से उसके अवतार को धरती पर जल्द से जल्द भेजने की प्रार्थना करते है। लेक़िन कोई नहीं जानता कि उनके उद्धार के लिए भगवान ने इंसान रूप में उनके ही बीच रहने वाले सुगना के घर में जन्म ले लिया है जो उनकी जनजाति और आदिवासियों का मार्गदर्शन करेगा।

**Scene-24**

वक़्त बीतता जाता है और आज बिरसा मुंडा की प्राथमिक शिक्षा के लिए उसके पिता घर की माली हालत देखकर, अपने बेटे के भविष्य की चिंता जताते हुए, बिरसा मुंडा को उसकी मौसी के पास पढ़ने के लिए भेजने की बात कहते हुए

करमी अपने पति को किसी चिंता में डूबे हुए देखकर

करमी- क्या सोच रहे हो?

सुगना- hmm कुछ नहीं

करमी- आप बहुत परेशान नज़र आ रहे हो, बताइए ना क्या हुआ ?

सुगना- सोच रहा हूँ कि बिरसा को पढ़ने के लिए उसकी मौसी के घर भेज दूँ। घर की हालत तो तुम जानती ही हो

करमी- घर के हालात और ऊपर से आमदनी का ज़रिया भी ख़ास नहीं। मुझे आपकी बात सही लगी

सुगना- सोच रहा हूँ कि कल ही बिरसा को लेकर इसकी मौसी के पास चला जाऊं। यहाँ रहेगा तो समय ही ख़राब होता रहेगा इसका

करमी- आप निश्चिन्त होकर जाइए। हमारा बिरसा पढ़ लिख़ लेगा तो शायद घर के हालात भी ठीक हो जायेगे

सुगना- hmm

अगले दिन सुगना बिरसा का ज़रूरी सामान लेकर उसकी मौसी के घर की तरफ निकल पड़ता है। अपने बेटे को जाता देख़ दरवाज़े पर खड़ी करमी की आँखों से आसूं बहने लगते है।

**Scene-25**

बिरसा के साथ सुगना उसकी मौसी 'रतना' के घर जाता है। रतना उन दोनों को देखकर ख़ुश होती हुई उनको घर के अंदर ले जाकर आने की कोई ख़ास वजह के बारे में पूछती हुई

रतना अपने घर के आँगन में झाड़ू लगाती हुए उन दोनों को अपनी ओर आते देखकर

रतना- अरे सुगना तुम, आओ आओ, घर के अंदर आओ। और बताओ आज ऐसे अचानक कैसे आना हुआ?

सुगना बिरसा के साथ पास में पड़ी चारपाई पर बैठता हुआ और बिरसा के सामान को ज़मीन पर रखता हुआ

सुगना- कई दिनों से आने का विचार कर रहा था लेकिन काम और परिवार के हालात तो तुम जानती ही हो! सोचा कि
सुगना ये बोलते हुए चुप हो जाता है और आगे बोलने में हिचक रहा होता है। उसको ऐसे हिचकते हुए देखकर रतना
रतना- क्या हुआ? चुप क्यों हो गए? क्या सोचा?
सुगना- रतना मैं चाहता हूँ मेरा मतलब मैं और करमी चाहते है कि तुम बिरसा को अपने पास रखकर इसकी पढ़ाई को कराओ लेक़िन...
सुगना चुप हो जाता है लेकिन रतना सारी बात समझ जाती है। रतना बिरसा को अपने पास बुलाकर अपनी गोद में बिठाकर उसको लाड़ जताती हुई
रतना- अरे देखो तो, कौन आया है आज, कितना प्यारा बेटा है तुम्हारा। आओ बिरसा मेरे पास आओ बेटा, मौसी की गोद में आकर बैठो
बिरसा सुगना की ओर देखता है तो सुगना बिरसा को इशारा करके रतना के पास जाकर बैठने के लिए कहता है। बिरसा रतना के पास जाता है और रतना उसके माथे को चूमती हुई अपनी गोद में बिठाकर
रतना- कितना तेज़ है रे तेरे माथे पर बिरसा!
रतना सुगना की ओर मुस्कुराते हुए देखकर
रतना- तुम तनिक भी चिंता ना करो सुगना, इसकी पढ़ाई और हर एक ज़रूरत की अब से सारी जिम्मेदारी मेरी
ये सुनकर सुगना ख़ुश होकर खड़ा होता हुआ
सुगना- तुमने ये बोलकर मेरे मन को हल्का कर दिया रतना। अब मैं चलता हूँ
रतना- अरे अभी आये और अभी चल दिए? थोड़ा विश्राम करो, जलपान गृहण करो, ऐसे कैसे की अभी आये और अभी जाना है?
सुगना प्रसन्न होता हुआ
सुगना- नहीं नहीं रतना, तुम्हारी मीठी बातों और व्यवहार ने ही मेरा पेट भर दिया। अब मुझे आज्ञा दो। खेतो में काम भी बहुत है और घर में करमी बच्चों के साथ अकेली है।
सुगना ये बोलकर वहाँ से घर की ओर बढ़ जाता है और उसको जाता देख बिरसा का मन थोड़ा उदास हो जाता है। बिरसा को उदास देखकर रतना उसके पास आकर उससे बोलती हुई
रतना- क्या हुआ रे बिरसा, पिता की याद आ रही है? मुझे अपनी माँ ही समझना बेटा। आ चल तुझे कुछ खाने को देती हूँ
ये बोलकर रतना बिरसा का हाथ पकड़कर उसको लेकर चल देती है।

**Scene-26**
कुछ दिन तक सब ठीक चल रहा होता है। मौसी के घर जाकर बिरसा भी अपनी पढ़ाई को मन लगाकर करने लगता है। रतना भी बिरसा को ख़ूब लाड़ प्यार करती है लेकिन धीरे-धीरे रतना का व्यवहार बिरसा के लिए बदलने लगता है और वो बिरसा से घर और खेत का काम कराने लगती है। बिरसा पढ़ाई में काफी होशियार होता है और मौसी बिरसा को बोझ समझकर उसको आये दिन घर और खेतों के कामो को करने का दबाब बनाने लगती है। इस कारण बिरसा की पढ़ाई छूटने लगती है और उसका ध्यान पढ़ाई से हटने लगता है।
रतना पढ़ाई कर रहे बिरसा की ओर झाड़ू को गुस्से में फैंकती हुई
रतना- अब क्या सारा दिन पढ़ाई ही करता रहेगा? ले झाड़ू उठा और घर और आँगन की अच्छे से साफ़ सफाई कर दे। बाद में पढ़ लेना
बिरसा रतना की इज्जत करता हुआ और थोड़ा डरता हुआ क़िताबों को एक तरफ़ रखकर झाड़ू उठाता है और घर और आँगन की साफ सफाई में लग जाता है। साफ़ सफाई का काम पूरा होने के बाद बिरसा दौबारा पढ़ाई करने के लिए जैसे ही बैठने लगता है तो रतना उसके ऊपर चिल्लाती हुई
रतना- कहाँ बैठा जा रहा है अभी से ? तुझे बाहर नल के पास झूठे बर्तन नहीं दिखाई पड़े क्या? उनको कौन साफ करेगा, तेरा बाप?
बिरसा किताबो को दूर रखकर घर से बाहर की ओर चल देता है और नल के पास पड़े झूठे बर्तनों के भंडार को देखकर मानो उसका गला सूख जाता है लेकिन रतना के डर की वजह से चुपचाप बर्तनों को धोने बैठ जाता है।

**Scene-27**
कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहता है और इसी बीच बिरसा गाँव के एक आदमी से बाँसुरी बजाना सीखने लगता है। धीरे धीरे उसकी बाँसुरी बजाने की कला और धुन सबका मन मोहने लगती है कि इसी बीच एक दिन रतना उसको खेतों में धान को पानी देने के लिए भेजती हुई
रतना- बिरसा ओ बिरसा, किधर मर गया?
रतना की आवाज़ सुनकर बिरसा घर के बाहर से दौड़कर आता हुआ रतना से
बिरसा- हाँ मौसी जी, बुलाया आपने?
रतना बिरसा पर भड़कती हुई
रतना- कितनी देर से गला फाड़ फाड़कर बुला रही हूँ, कहाँ मर गया था?
बिरसा- यहीं था

रतना- अच्छा सुन, खेतो में जाकर धान की फ़सल में पानी दे आ और ध्यान रखना, कभी पानी से फ़सल को डूबा दे
बिरसा- मैं ध्यान रखूँगा
ये बोलकर बिरसा घर की दीवार के एक कोने में से अपनी बाँसुरी निकालकर खेतों की ओर चल देता है

**Scene-28**
खेतों में जाकर बिरसा फसल में पानी छोड़ता है और एक पेड़ पर फ़सल की निगरानी रखते हुए बाँसुरी बजाने लगता है। बाँसुरी बजाते में बिरसा इतना खो जाता है कि उसको समय और फ़सल की सुदबुध ही नहीं रहती है। उधर से होकर गुज़रने वाले लोग, उसकी बासुंरी की मधुर आवाज़ सुनकर उसकी तारीफ करते हुए निकल रहे होते है।
गाँव का पहला आदमी- कितनी मधुर आवाज है।
दूसरा गाँव वाला- हाँ सचमुच, ऐसा लग रहा है मानो ख़ुद साक्षात भगवान श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाने के लिए आये है
गाँव का पहला आदमी- इसकी बाँसुरी की मधुर आवाज से तो मेरी दिनभर की सारी थकान ही मिट गई
ऐसी ही बातो को करते हुए आने जाने वाले लोग बिरसा के हुनर की तारीफ़ करते जाते है और इन्हीं सब में बिरसा को समय का ध्यान ही नहीं रहता है।

**Scene-29**
काफी देर होने पर भी जब बिरसा घर नही आता है तो मौसी उसको ढूँढते हुए खेत में पहुँचती है। खेत में जाकर वो देखती है कि बिरसा खेतो के काम को छोड़कर बाँसुरी बजाने में मग्न होता है, जिससे फ़सल का नुक़सान होता देख़, मौसी बिरसा की ख़ूब पिटाई करती हुई ख़ूब जली कटी सुनाती है
रतना- हाय राम, मेरी फ़सल। सत्यानाश हो इस निगोड़े का। मेरी सारी फ़सल को बर्बाद कर दिया।
रतना बिरसा को पेड़ से नीचे बुलाती हुई
रतना- अरे ओ सूरदास की औलाद, नीचे आ ज़रा। मेरी सारी धान की फ़सल को पानी से बर्बाद कर दिया और ऊपर से बाँसुरी बजा रहा है। नीचे आ तू, आज तेरी ख़बर लेती हूँ

बिरसा रतना की डांट और ग़ुस्से से डरता हुआ नीचे उतरकर रतना की मार से बचने के लिए बोलता हुआ
बिरसा- माफ़ कर दो मौसी, मुझे पता नहीं चला कि खेतो में कब पानी भर गया। माफ कर दो मुझे
रतना पास पड़ी एक लकड़ी की टहनी को उठाकर उसको मारती हुई ग़ुस्से में
रतना- एक तो तुझे तेरे भिखारी माँ बाप के कहने पर तेरी सारी सुख़ सुविधाओं का ध्यान रखती हूँ और एक तू है जो मेरे ही घर में रहकर मेरा ही अन्न खाकर आस्तीन का सांप बना बैठा है। रुक आज तेरी खैर नहीं
ये बोलती हुई रतना बिरसा को बहुत मारती जा रही होती है। रतना को देखकर ऐसा लगता है कि मानो वो बिरसा से किसी जन्म का बदला ले रही हो और किसी खुन्नस को निकालने में लगी हो। बिरसा ख़ुद को छोड़ने के लिए रतना के आगे गिड़गिड़ाते हुए
बिरसा- माफ़ कर दो मौसी, आगे नहीं होगा, मुझे मत मारो। आपकी मार का दर्द सहन नहीं हो रहा है मौसी, माफ़ कर दो
बिरसा ख़ुद को छोड़ने के लिए रतना से लगातार माफ़ी माँगते हुए गिड़गिड़ा रहा होता है लेकिन रतना उसकी एक नहीं सुनती है और वो उसको लगातार मारे जा रही होती है। बिरसा को यक़ीन हो जाता है कि आज रतना उसको ज़िन्दा छोड़ने वाली नहीं है, ये सोचकर बिरसा किसी तरह से अपने आप को रतना की मार से बचाता हुआ वहाँ से अपने घर की ओर दौड़ पड़ता है। बिरसा को भागते देख़ रतना छड़ी को ज़मीन पर पटकते हुए, ज़ोर से चिल्लाकर बिरसा से
रतना- और ख़बरदार जो दौबारा यहाँ आने की हिम्मत भी की तो, टांगे तोड़कर हाथ में दे दूँगी
रतना ये सब बोलती जा रही होती है और बिरसा अपने गाँव अपने घर की ओर दौड़ा जा रहा होता है

**Scene-30**
रतना की मार से बचकर बिरसा अपने घर आ जाता है। उसको अचानक ऐसे घर आने का कारण पूछते हुए उसके माता पिता
सुगना खेत में जाने की तैयारी कर रहा होता है और करमी से कहता है
सुगना- आज रात खेतों में रुककर बचा हुआ काम पूरा करना है इसलिए मेरा इंतजार मत करना
करमी घर के अंदर से एक पोटली में खाना लाकर सुगना को देते हुए

करमी- अपना ख़्याल रखना और अगर काम ज़ल्दी निपट जाए तो घर आ जाना
सुगना- हां ठीक है, लाओ
सुगना करमी से खाने की पोटली लेकर जैसे ही कुछ क़दम खेत में जाने के लिए बढ़ाता है कि तभी उसको सामने से बदहवास होकर दौड़ता हुआ बिरसा नज़र आता है। बिरसा को आता देखकर सुगना रुक जाता है और बिरसा से
सुगना- अरे बिरसा, तू इस समय और यहाँ? सब ठीक तो है ना?
सुगना की नज़र बिरसा की हालत पर जाती है और वो उसके पास जाकर गौर से उसको देखकर
सुगना- सब ठीक तो है ना बिरसा? तू कुछ बोलता क्यों नहीं?
बिरसा कुछ देर सांस लेकर दम भरता हुआ
बिरसा- मैं मौसी के घर से भाग आया और अब कभी वापस नहीं जाऊँगा
तभी घर के अंदर से करमी बिरसा को देखकर उससे वापस रतना के घर जाने के बारे में पूछती हुई
करमी- कैसा है बेटा बिरसा? क्यों नहीं जाएगा वापस? किसी के साथ झगड़ा हुआ या फ़िर रतना ने कुछ बोला?
बिरसा- माँ मौसी मुझसे सारा काम कराती है और मारती भी है। मुझसे वहाँ पढ़ाई भी नहीं होती है और और ... बस मुझे नहीं जाना मौसी के पास
करमी बिरसा के पास आकर जैसे ही उसकी पीठ पर हाथ रखकर उससे बात करने की कोशिश करती है कि तभी बिरसा अपनी पीठ पर चोट के घाव के कारण दर्द से कर्राह उठता है और उसको कर्राहते हुए देखकर करमी और सुगना उसकी पीठ को देखते हैं। उसकी पीठ पर छपे छड़ी के निशान को देखकर वो दोनो पूरी बात समझ जाते है और एक दूसरे की ओर देखने लगते है। करमी बिरसा को घर के अंदर लेकर जाते हुए
करमी- हम सब समझ गए बेटा। अब तुम्हें रतना के घर वापस जाकर पढ़ने के लिए कभी दौबारा नहीं कहेंगे। चल बेटा अंदर और पहले नहा धोकर कुछ खाना खा ले। करमी बिरसा को लेकर अंदर चली जाती है और बाहर खड़ा सुगना बिरसा की ओर देखता जा रहा होता है।

**Scene-31**
कुछ दिनों बाद सुगना और करमी, बिरसा की पढ़ाई और उसके भविष्य की चिंता करते हुए आपस में बातें कर रहे होते है। सुगना गंभीर भाव से करमी से
सुगना- सब जानता हूँ तभी तो परेशान हूँ। पता नहीं क्या होगा आगे

करमी- चिंता मत कीजिए, कोई ना कोई हल जरूर निकल आएगा
सुगना करमी की तरफ देखकर कुछ सोचता हुआ
सुगना- सोच रहा हूँ बिरसा को आगे की पढ़ाई के लिए इसका दाख़िला सलगा के जयपाल नाग के स्कूल में करा देते है जिसका वो संचालक है
करमी- हमारे बेटे के लिए आपको जो ठीक लगे, कीजिए
ये सुनकर सुगना बिरसा का दाख़िला कराने के लिए सलगा जाकर जयपाल नाग से मिलने की तैयारियों में जुट जाता है और अगले ही दिन सलगा के लिए घर से निकल पड़ता है।

**Scene-32**
अगले दिन सुगना बिरसा को साथ लेकर सलगा की ओर निकल पड़ता है और वहाँ जाकर जयपाल नाग से मिलकर पूरी बात बताता हुआ कहता है
सुगना- अब सबकुछ तुम्हारे ही हाथ में है जयपाल
जयपाल- तुम ज़रा भी चिंता मत करो सुगना, बिरसा सिर्फ़ तुम्हारा ही बेटा नहीं बल्कि मेरे बच्चे जैसा भी है और इसकी भविष्य के लिए जो बेहतर होगा मैं करूँगा
जयपाल की बात सुनकर सुगना का मन ख़ुश हो जाता है और सुगना बिरसा को जयपाल के पास छोड़कर अपने गाँव की ओर बढ़ जाता है।

**Scene-33**
बिरसा पढ़ाई में अच्छा होने की वजह से जयपाल उसको 'जर्मन मिशन स्कूल' में पढ़ने के लिए मनाने लगते है और कई तरह के अच्छे और उज्जवल भविष्य के सपनों को दिखाते हुए इनको अपना नाम बिरसा मुंडा की जगह बिरसा डेविड करने के लिए कहते है। इस पर बिरसा मुंडा नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए जर्मन मिशन स्कूल में पढ़ाई करने से साफ़ इंकार कर देते है लेकिन जयपाल नाग, बिरसा को उसके परिवार की तंग हालत और माता-पिता की मज़बूरियों को गिनाते हुए किसी तरह से ईसाई मिशनरी स्कूल में पढ़ने के लिए मना लेते है।
बिरसा- मुझे अपना धर्म परिवर्तन करके नहीं पढ़ना है
जयपाल- अगर तेरा दाख़िला यहाँ नहीं हुआ तो फ़िर किसी भी स्कूल में तेरा दाख़िला नहीं हो सकता। जानता है ना अपने माता पिता और घर के हालात के बारे में? उनकी इतनी हैसियत नहीं है कि किसी दूसरे स्कूल में तेरी पढ़ाई का ख़र्चा उठाकर तुझे पढ़ा सकें। बात मान बिरसा और अपना धर्म परिवर्तन करके कल से ही पढ़ाई शुरू कर दे।

बिरसा- मगर
जयपाल- अगर मगर कुछ नहीं और पढ़ाई से ज़्यादा ज़रूरी तेरा धर्म नही है बिरसा। अब सोच ले वरना बहुत देर हो जाएगी
बिरसा जयपाल की बातों को सुनकर सोच में पड़ जाता है। बिरसा पढ़ाई की एहमियत को बख़ूबी जानता है इसलिए वो जयपाल की बातों को मान लेता है।

**Scene-34**
सुगना के पड़ोस के गाँव में रहने वाला मुकेश एक आक्रामक और जागरूक वाणी का धनी होता है जो अपनी बातों से किसी भी इंसान के अंदर जोश और आज़ादी की अलख जगाने में माहिर होता है। आये दिन मुकेश गाँव में होने वाले ब्रिटिश हमलों और अंग्रेजो द्वारा होने वाले जुल्मो के ख़िलाफ़ गाँव वालों को एकजुट होकर उनका सामना करने की बात करता तो कभी गांव वालों की कायरता और उनके दिलों में बैठे अंग्रेजो के डर की वजह से उनको लताड़ता। मुकेश हमेशा ही अंग्रेजो की दासता और जुल्मो से किसी भी तरह ख़ुद को बचाकर रखने की जिद्दोजहद में लगा हुआ रहता है। वो आये दिन गाँव वालों को अंग्रेजो के ख़िलाफ़ भड़काया करता और उनको जागरूक करने के लिए कभी-कभी अपनी अजीबोग़रीब बातों से अपनी मुंडा जनजाति समुदाय के साथ दूसरी सभी आदिवासी समुदाय का हितैसी बताया करता है। मुकेश गाँव वालों का हितैसी और अंग्रेजो के लिए एक शातिर, लेक़िन शांत स्वभाव का दिखने वाला लड़का होता है और वक़्त के साथ उसके तेवर और भी ज़्यादा तीखे और दिल को छलनी कर देने वाले होते जाते है।
आज भी मुकेश गाँव में इसी प्रकार की एक सभा में अपनी बातों को रखते हुए, गाँव वालों को जागरूक करने की कोशिश करता हुआ
मुकेश- आखिर ऐसा कब तक चलता रहेगा? मैं आप लोगों से पूछता हूँ
गाँव वाले निराश, हताश और अंग्रेजो के आगे ख़ुद को बोना समझते हुए
गाँव वाले- तो हम कर भी क्या सकते है!
मुकेश- हम स्वाभिमान के लिए तो जी सकते है या फ़िर ऐसे ही गुलाम मरना पसंद है तुम सभी लोगों को?
गाँव वाले- हम उनका मुकाबला नहीं कर सकते।
दूसरा गाँव वाला- हां ये सही बोल रहा है। हमारे पास ना तो उनसे मुकाबला करने के लिए हथियार है और ना ही हड्डियों में ताक़त
मुकेश- तो जीते रहो ऐसे ही ज़िन्दा लाश बनकर और तलवे चाटते रहो ब्रिटिश सरकार के

गाँव वाले- तुम नहीं जानते लेक़िन
मुकेश बात काटते हुए- तुम कायरों और डरपोक लोगों से जानने की ज़रूरत नहीं है मुझे की क्या सही है और क्या ग़लत
ये बोलकर मुकेश कुछ देर आराम से सोचता हुआ गाँव वालों से विनती करता हुआ
मुकेश- युद्ध हथियारों से नहीं हौसलों से जीता जाता है और हम आदिवासियों में हौसले की कमी नहीं है। यक़ीन नहीं आता तो एक बार अपना इतिहास उठाकर पढ़ लो और
मुकेश उन सभी के मुहँ को देखता हुआ
मुकेश- पढ़ेंगे भी तो कैसे। इस ब्रिटिश सरकार ने तो हमसें ये हक़ भी छीन रखा है। पढ़ना है तो पहले धर्म परिवर्तन करके ईसाई बनो वरना अनपढ़ ज़ाहिल बने रहो।
गांव वाले- पढ़ाई से ही क्या हो जाता मुकेश?
मुकेश- वो लोग जानते थे कि अगर आदिवासी समुदाय के लोगों ने पढ़ाई की तो उनको वैचारिक और मानसिक रूप से अपना ग़ुलाम नहीं बनाया जा सकता इसीलिए ही तो उन्होंने तुमको कभी इस बात से दूर रखने की हर मुमकिन कोशिश की और जिसमें वो काफी हद तक सफल भी हो गए और..
तभी गांव के कुछ लोग वहाँ से खड़े होकर जाने लगते है और उनको जाता देख एक एक करके सभी लोग वहाँ से खड़े होकर जाने लगते है। ये देखकर ग़ुस्से में उनके ऊपर भड़कता हुआ मुकेश कहता है
मुकेश- बस ये ही आलसीपन और अज्ञानता एक दिन तुम्हारे बच्चों को भी ग़ुलाम बनने पर मज़बूर करेगी। याद रखना तुम लोग
मुकेश की बातों पर कोई ध्यान नहीं दे रहा होता है और ये देखकर मुकेश ग़ुस्से में वहाँ से बड़बड़ाता हुआ जाता हुआ
मुकेश- काला अक्षर भैंस बराबर। पता नहीं क्या होगा मेरे देश और इन भोले भाले लोगों का।

**Scene-35**
पड़ोस के दूसरे गाँव में रहने वाला खटास चंद, अंग्रेजो के यहाँ साफ सफाई का काम किया करता है। अंग्रेजो को ख़ुश करने के लिए वो उनको ढ़ोल बजाकर तो कभी अपनी बेसुरी आवाज़ को और भी ज़्यादा बेसुरा बनाकर गाना सुनाया करता। जिससे अंग्रेज भारतीयों को बेसुरा और लालची बताया करते और खटास चंद को पैसा तो कभी कोई उपहार देकर अपने आप को महान दिखाया करते। खटास चंद इन सभी

बातों की परवाह ना करते हुए अंग्रेजो के गुणगान में लगा रहता और अंग्रेज भी अपनी झूठी तारीफ़ सुनकर ख़ुश हुआ करते।
खटास चंद अंग्रेजो की एक सभा में अपना गाना ख़त्म करते हुए उनको सलाम करता हुआ उनके आगे नतमस्तक होकर खड़ा हो जाता है। उसको अपने आगे झुका देखकर एक अंग्रेज अधिकारी 'गोम्स' उसकी झूठी तारीफ़ करते हुए
गोम्स- बहुत ख़ूब खटास चंद! तुम्हारे गीत और इज़्ज़त अफ़जाई ने हमारा दिल ख़ुश कर दिया
ये बोलते हुए गोम्स अपने गले से एक माला उतारकर उसके आगे फैंकता हुआ
गोम्स- ये लो तुम्हारा ईनाम
खटास चंद अपने आगे ज़मीन पर पड़ी माला को उठाकर उसको जेब में रखता हुआ
खटास चंद- माईबाप की जय हो, ब्रिटिश सरकार की जय हो, ब्रिटिश हुकूमत जैसा दयावान और रहमदिल कोई नहीं
ये बोलते हुए खटास चंद सभी को सलाम करते हुए सभा से बाहर जाता है और अपने घर की ओर बढ़ जाता है। उसके जाने के बाद गोम्स के पास खड़ा एक सिपाही 'लेबन' उससे इन सब का कारण पूछता हुआ
लेबन- हुजूर, मुझे आजतक समझ नहीं आया कि आप इस बेसुरे गायक को इतने महँगे तोहफ़े ईनाम में क्यों देते हो?
गोम्स अपनी कुर्सी से खड़ा होकर मुस्कुराते हुए
गोम्स- तुम अभी तक नहीं समझें? हम उसको ये तोहफ़े और ईनाम अपनी झूठी तारीफ़ सुनने या फिर उसके बेसुरे गायन के लिए नहीं देते। हम सभी भारतीयों को दिखाना चाहते है कि उनकी औकाद और उनके जीने का मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ ब्रिटिश सरकार के आगे झुकना और ग़ुलामी करना है। खटास चंद जब अपने गाँव में हमारे दिए उपहार लेकर जाता होगा तो सभी गाँव वालों को एहसास होता होगा कि अगर वो लोग भी ऐशो आराम का जीवन जीना चाहते है तो उनके आगे सिर्फ़ एक ही रास्ता है और वो है ब्रिटिश सरकार की दासता स्वीकार करना।
गोम्स की चालाकी और हिंदुस्तानियों को नीचा दिखाने की ये बात जानकर वहाँ उपस्थित सभी लोग गोम्स की तारीफ़ करते हुए उसकी जय जयकार करने लगते है।

**Scene-36**

अंग्रेजो से मिलने वाले उपहार और पैसों से खटास चंद अपना जीवन आराम से बिताता जाता है। उसके परिवार में उसकी बहन 'रज्जो' और पिता 'कल्लू' होते है। खटास चंद की माता की मृत्यु बचपन में ही बीमारी के कारण हो जाती है। अपनी

माता की मौत के बाद खटास चंद अंग्रेजो की दासता स्वीकार करके अपने परिवार को हर संभव खुशियां और आराम देने की कोशिशों में लगा रहता है। पिता कल्लू हमेशा खटास चंद को ये सब करने से मना करते हुए उसको बुरा-भला बोलते रहते है लेकिन खटास चंद किसी की बात नहीं सुनता और एक अच्छा जीवन व्यतीत करने का ये ही सबसे आसान और बेहतर तरीका बताया करता।
गोम्स से मिले उपहार के तौर पर मिली माला को लेकर खटास चंद अपने घर पहुँचता है तो उसके पिता और उसके बीच इन बातों को लेकर बहस शुरु होती है। खटास चंद से गुस्से और नाराजगी में पूछते हुए उसके पिता कल्लू
कल्लू- आ गया अंग्रेजो के आगे अपना स्वाभिमान बेचकर?
ये सुनकर खटास चंद कुछ नहीं बोलता और अपने घर में रखे संदूक को खोलकर उसमें अंग्रेज के द्वारा दी गई माला को रखने लगता है। उसको माला रखते हुए देखकर कल्लू गुस्से से उसके पास जाकर
कल्लू- अरे बेहयाई की भी कोई सीमा होती है लेकिन तूने तो रुपयों के आगे अपनी इज्ज़त और शर्म उताकर फैंक दी। अच्छा होता कि तू पैदा होते ही मर जाता और…
कल्लू की बात काटते हुए खटास चंद
खटास चंद- तो क्या करूँ? तुम सभी गाँव वालों की तरह ग़रीबी और भुखमरी का जीवन जीऊं या फ़िर..
कल्लू- तो फ़िर जा मर जा कहीं जाकर, आत्महत्या कर ले।रोज रोज तेरे कुकर्मों की वजह से बेइज्जती के आसूं बहाने से तो अच्छा होगा कि कुछ दिन आँसू बहाकर सोच लूँगा की मेरी कोई औलाद ही नहीं थी
खटास चंद- रोज रोज मुझे अपना भाषण देना बंद करो पिताजी। मैं तुम्हारी तरह तड़प तड़प कर जीना नहीं सकता। क्या दिया आख़िर तुम्हारे इस दिखावटी स्वाभिमान ने आपको? मेरी माँ को मरने से तो नहीं बचा पाया आपका ये स्वाभिमान और इज्ज़त का ढकोसला
ये सुनकर कल्लू कुछ बोलना तो चाहता था लेकिन अचानक खटास चंद के बिगड़े तेवर को देखकर चुप हो जाता है और गुस्से में अपनी क़िस्मत को कोसता हुआ दीवार पर जाकर अपना हाथ पटककर बोलता है
कल्लू- जा निकल जा, अभी निकल जा मेरे घर से। कहीं ऐसा ना हो कि मेरे हाथों से कुछ अनर्थ हो जाये, जा निकल जा
ये सुनकर खटास चंद गुस्से में घर से निकल जाता है और कल्लू अपने माथे पर हाथ रखकर ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ जाता है।

**Scene-37**
बिरसा मुंडा स्कूल में पढ़ाई के दौरान देखते हैं कि अधिकांश हिन्दू बच्चों को ईसाई धर्म में बदला जा रहा होता है जो कि किसी भी समुदाय लिए बेहद खतरनाक साबित होता है। एक दिन बिरसा अपने स्कूल से घर की ओर आ रहे होते है तो वो देखते हैं कि उसके स्कूल में पढ़ाने वाले पादरी और कुछ लोग, ग़रीब आदिवासियों को कपड़े, थोड़ा पैसा और खाना देकर ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के काम को करने में जोरो से लगे हुए होते है। वो सभी लोग गरीबो को धर्म और अंधविश्वास का डर और रोटी, कपड़े और सिर पर छत का लालच देकर, उनको ईसाई बनने के लिए मानसिक तौर पर दबाब बना रहे होते है।
धर्म परिवर्तन कराने के लिए एक समूह आदिवासी समुदाय के एक परिवार के पास जाता है और उनको हिन्दू धर्म को बुरा बताकर ईसाई धर्म को अपनाने में ज़ोर दे रहा होता है। उस समूह में पादरी पोप फ्रांसिस और उनके कुछ अनुयायियों के साथ, बिरसा के स्कूल में पढ़ाने वाले टीचर भी होते है। जंगल में रहने वाले एक आदिवासी के घर के बाहर वो सभी रुकते हैं और पादरी अपने एक अनुयायी से कहता है
पोप फ्रांसिस- इस घर में रहने वाले सभी लोगों को बाहर बुलाओ। हमें इनको सच्चे धर्म और भगवान के बारे में बताकर इनको सही रास्ते पर लाना है
ये सुनकर पोप फ्रांसिस का एक अनुयायी जिब्राल्टर उस घर का दरवाज़ा खटखटाते हुए
जिब्राल्टर- कोई है? घर में कोई है क्या? देखो तुमसे कौन मिलने आया है
ये सुनकर घर के अंदर से घर का मुखियाँ मंगू बाहर आता है। उसके साथ उसकी गर्भवती पत्नी ललिता और दो छोटे-छोटे बच्चे भी बाहर निकल आते है। अपने घर के बाहर इतने लोगों को देखकर मंगू थोड़ा सहम जाता है और उनके आगे हाथ जोड़ते हुए
मंगू- क्या हुआ साहब? कौन हो आप लोग और इतनी बड़ी संख्या में घर के बाहर इकट्ठा होने का कारण? कोई ग़लती हो गई क्या हमसें माईबाप?
जिब्राल्टर मंगू के पास जाकर उसको उन सभी के वहाँ आने का कारण उसके कान में बताते हुए
जिब्राल्टर- ये पोप फ्रांसिस है जो अपने सभी साथियों के साथ यहाँ तुम्हारे सभी दुःखो का निवारण करने के लिए आये है।
ये सुनकर हैरान मंगू पोप फ्रांसिस के आगे कुछ क़दम जाकर भोलेपन में कहता है
मंगू- आपका बहुत बहुत एहसास माईबाप, जो आप इस ग़रीब के घर में आये। हमारे दुःखो और परेशानियों में किसी एक ने भी हमारी मदद करने के बारे में नहीं सोचा

लेक़िन आप तो हमारे लिए भगवान बनकर आये है?
मंगू ये कहता हुआ उन लोगों के आगे दया की आस में आँसू बहाते हुए उनके आगे सिर झुकाकर उनके आने के लिए धन्यवाद देता है और ये देखकर उन सभी को यक़ीन हो जाता है कि इस परिवार की थोड़ी सी मदद करके हम इनका धर्म परिवर्तन करा सकते है। पोप फ्रांसिस मंगू के पास दो क़दम आगे बढ़ता हुआ कहता है
पोप फ्रांसिस- मेरे बच्चें, मैं यहाँ ख़ुद नहीं आया हूँ बल्की मुझे तुम्हारी सभी परेशानियों को ख़त्म करने के लिए और तुम्हारे बच्चों का पेट भरने के लिए भेजा गया है
ये सुनकर मंगू अपनी पत्नी की ओर देखता है और ललिता मंगू की ओर आश्चर्य से देखती हुई, अपने दोनों बच्चों के सिर पर हाथ फेरती है। मंगू पोप फ्रांसिस से हाथ जोड़कर
मंगू- भेजा गया है लेकिन किसने भेजा है आपको?
पोप अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाता हुआ
पोप- उसी ने, जो दुनियाँ में एकमात्र सच्चा और अपने बच्चों से प्रेम करने वाला है। उसी ने, जिसने मुझसे मेरे सपनों में आकर बार बार तुम्हारी चिंता को ज़ाहिर किया। उसका नाम है जीज़स, येशु
ये सुनकर मंगू की कुछ समझ नहीं आ रहा होता है। पोप आगे बोलता हुआ
पोप- येशु ने मुझसे कहा कि जाओ और मेरे बच्चें मंगू के सभी दुःखो को दूर करके ही वापस आना। येशु के आदेशानुसार ही हम तुम्हारे पास आये है
मंगू- मुझे क्या करना होगा ?
पोप- तुमको कुछ नहीं करना है। बस हम जो तुमको देंगे उसको लेकर अपने दुःखो और ग़रीबी से छुटकारा पा लेना
मंगू- आप इंसान नहीं भगवान है माईबाप
ये कहता हुआ मंगू अपनी पत्नी की ओर देखता है और ललिता भी ख़ुश नज़र आते हुए उन सभी के आगे हाथ जोड़ लेती है
पोप- हम तुम्हारें लिए खाना, कपड़ा और सभी ज़रूरत की वस्तुओं को लेकर आये है लेकिन…
लेक़िन सुनते ही मंगू पोप से उत्सुकता से पूछता हुआ
मंगू- लेकिन, लेक़िन क्या ? आगे बोलिए
पोप- लेक़िन येशु ने कहा है कि जब तक तुम इस अंधविश्वासी और झूठे धर्म को त्यागकर, दुनियाँ का एकमात्र सच्चा और प्रेम से भरा हुआ ईसाई धर्म नहीं अपना लेते

हो, तब तक तुम्हारे दुःखो का अंत नहीं होगा।
ये सुनकर मंगू और उसकी पत्नी हैरान रह जाते है और दोनों भोलेभाले पति पत्नी इस बात का विरोध करना तो चाहते है लेकिन अपने बच्चों को भूख से तड़पते हुए देखकर मानो उनका मन उनसे कह रहा हो कि कोई भी क़दम उठाना पड़े लेक़िन भूख मिटनी चाहिए। मंगू कुछ देर सोचकर पोप से बोलता है
मंगू- अगर आपका येशु इतना ही दयावान और कोमल हृदय वाला है और सभी मनुष्य उसकी ही संतान है तो उसको हमारी मदद करने के लिए हमारा धर्म परिवर्तन कराने की क्या जरूरत है?
पोप और उसके सभी साथी ये सुनकर तिलमिला जाते है लेक़िन अपने गुस्से को छुपाते हुए पोप कहता है
पोप- तुमनें अभी तक अपने हिन्दू धर्म और भगवान को देख लिया और अगर वो तुम लोगों को सच में प्यार करता तो वो तुम्हें दुःख क्यों देता ? मेरी बात मानो और समझो कि अगर अपने दुःखो से निजात पाना चाहते हो तो ईसाई धर्म को अपना लो। हमारा येशु तुम्हें धर्म अपनाने से पहले ही तुम्हारी भूख को शांत कर देगा।
ये कहते हुए पोप के साथ आये उसके अनुयायी मंगू के परिवार के आगे चावल, अनाज, कपड़े और कुछ रुपयों को रख देते है। इन सभी चीजों को देखकर उनकी मानो बुद्धि फ़िर जाती है और वो लोग खाने के निवाले को हाथ में उठाकर एक दूसरे की ओर देखते हुए कुछ सोचते है। मंगू इतना सारा पैसा, अनाज और कपड़ो को एक साथ देखकर उनको उठाता हुआ पोप से बोलता है
मंगू- हम तैयार है
ये सुनकर सभी लोग पोप की ओर देखकर मुस्कुराने लगते है और अब अपने मिशन के तहत उनमें से एक आदमी मंगू को ईसाई धर्म अपनाने के बारे में समझाने लगता है और पोप अपने बाकी के साथियों के साथ दूसरे आदिवासी के घर की ओर बढ़ जाता है।

**Scene- 38**
उधर से होकर अपने स्कूल की ओर जाता हुआ बिरसा जब इस वाक्या को देखता है तो उसको बहुत हैरानी होती है और वो पूरे रास्ते इस बारे में सोचता हुआ अपने स्कूल में चला जाता है। स्कूल में जाने के बाद उसकी ही कक्षा में पढ़ने वाला एक रहीस ईसाई विद्यार्थी 'जॉन मार्टिन' उनको परेशान देखकर पूछता है
जॉन मार्टिन- क्या हुआ बिरसा, कुछ परेशान नज़र आ रहे हो?

बिरसा, जॉन को रास्ते में देखी पूरी बात बताता हुआ उससे इस बात का कारण पूछता है तो जॉन उसको बताता है
जॉन- तुम लोगों का हिन्दू धर्म बहुत पिछड़ा हुआ होता है और उसमें सिर्फ़ और सिर्फ़ बुराई ही होती है इसके अलावा कुछ नहीं। अगर तुम ईसाई बन जाते हो तो हमारे प्रभु येशु तुम लोगों पर अपना आशीर्वाद बनाएंगे और तुम कभी भी दुःखी नहीं रहोगे। इसी मिशन के तहत और येशु की आज्ञा को मानते हुए पोप और सभी ईसाई मिशनरियों द्वारा ये सब किया जाता है।
बिरसा- लेक़िन ये तो ग़लत है ना, महापाप है।
जॉन उसकी ओर देखकर उसकी बात पर हँसता हुआ
जॉन- ग़लत? क्या? ये सब करना ग़लत कैसे हो सकता है? जब तुम हिन्दुओं का भगवान तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता, दो वक़्त की रोटी नहीं दे सकता तो फ़िर तुम लोग सनातन धर्म को क्यों सारी उम्र ढ़ोते जाते हो? हमें देखों, हमारे पास सबकुछ है और ये सिर्फ़ इसलिए क्योंकि हम ईसाई है और हम सिर्फ़ दुनियाँ के एक ही सच्चे भगवान येशु को मानते है, ना की तुम लोगों की तरह 33 करोड़ देवी देवताओं को
बिरसा- 33 करोड़ नहीं, 33 कोटि देवी देवताओं को मानते है लेक़िन..
जॉन बिरसा की बातों का जवाब देना और ज़्यादा बात करना नही चाहता है इसलिए वो क्लास के अंदर चला जाता है। ये सब जानकर बिरसा को अच्छे से समझ में आ जाता है की गरीब, बेबस, लाचार और हालात के मारे हुए लोगों के साथ-साथ इन लोगों द्वारा सभी आदिवासियों को भी मूर्ख बनाया जा रहा होता है ताकि उनको हिन्दू सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति से भटकाया जा सके। इन सभी के कारण बिरसा को कई रात नींद नहीं आती और वो अपने देश, समाज को धर्म-परिवर्तन और इसके ही जैसी अराजकताओं से बचाने के लिए कुछ करने की ठानता है लेकिन उनके आगे फिर से समस्या बनकर खड़ी नज़र आती है, उनकी आगे की शिक्षा और पढ़ाई की एहमियत। इस बार वो अपनी शिक्षा पूरी होने के तुरंत बाद ही देश समाज और जन कल्याण हेतु आगे बढ़ने का फ़ैसला करता है की वो समाज की बिगड़ती हालत को ठीक करने के अनेकों कार्यो को करने के लिए जरूर कुछ करेगा और ये ही सब सोचने लगता है।

**Scene-38**

घर से निकलने के बाद और अपने पिता की बातों से नाराज़ खटास चंद काफ़ी परेशान हो जाता है और वो ग़ुस्से से भरा हुआ, धीरे-धीरे लालच और दासता की बेड़ियों में इस क़दर जकड़ जाता है कि देखते ही देखते वो ब्रिटिश सरकार की

पुलिस का मुखबिर बन जाता है और अपने गाँव, जनजातियों और आदिवासियों के बारे में अनेकों ख़बर अंग्रेजी हुकूमत को देने लगता है, जिसके बदले में उसको पहले से भी अच्छा और बड़ा ईनाम मिलने लगता है।
**( यहाँ पर कई छोटे-छोटे दृश्यों में खटास चंद ब्रिटिश सरकार और सरकारी अधिकारियों का विश्वास जीतने के लिए भारतीयों के ख़िलाफ़ मुखबिरी करते हुए और बदले में ईनाम लेते हुए दिखाया जाता है। )**
दरहसल खटास चंद को आसानी से कोई भी समझ नहीं पाता है और ना ही उसके दिमाग़ और दिल में किस समय क्या और क्यों चलता है, ये भी समझ नहीं पाते है। खटास चंद इस कहानी का सबसे उलझे हए क़िरदारों में से एक होता है।

**Scene- 39**
**कई साल बाद,**
बिरसा की पढ़ाई पूरी हो जाती है और इसी दौरान वो ब्रिटिश सरकार और ईसाई मिशनरियों का गंदा खेल देखकर दिन रात परेशान रहने लगता है। वो अपने देश, आदिवासी समुदाय और जनजातियों के लोगों के लिए कुछ करना चाहता है लेकिन उसको ज़्यादा कुछ समझ में आ पाता उससे पहले ही उसके परिवार वाले उसके ऊपर नौकरी करने का भार डाल देते है जिसके कारण उनको अपने कार्यो में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ने लगता है। एक दिन बिरसा के पिता उसको अंग्रेज बाबू के पास जाकर नौकरी मांगने के लिए कहते है जिसपर बिरसा जी अंग्रेजो की गुलामी करने से साफ़ इनकार करते हुए, अपने पिता और परिवार वालों को अपने आदिवासी समुदाय और समाज पर हो रहे अन्याय के बारे में जागरूक करने के लिए अनेकों बातों को बताने लगते है।
सुगना- बेटा बिरसा तेरी पढ़ाई पूरी हो चुकी है और अब तुझे नौकरी कर लेनी चाहिए
बिरसा- नौकरी? किसकी नौकरी बापू?
सुगना- अंग्रेजी बाबू की नौकरी, और किसकी?
बिरसा ये सुनकर अपने घरवालों को नौकरी करने से मना करता हुआ
बिरसा- अंग्रेजी बाबू की मतलब ब्रिटिश सरकार और उनके दलालों की नौकरी? नही बापू नहीं, मैं कभी भी अंग्रेजो की गुलामी और दासता भरी नौकरी नहीं करूँगा
ये सुनकर सुगना अपनी चारपाई से गुस्से में खड़ा होता हुआ
सुगना- तो क्या करेगा और इतनी पढ़ाई करने का क्या फ़ायदा होगा तेरा?
बिरसा- मैंने ये पढ़ाई अंग्रेजो की गुलामी करने के लिए नहीं कि है बल्कि अपने आदिवासी समुदाय और जनजातियों को ब्रिटिश सरकार की गुलामी से आज़ादी

दिलाने के लिए और उनको जागरूक करने के लिए की है। नही नही बापू नही, मैं मर जाऊँगा लेक़िन कभी भी अंग्रेजो की दासता स्वीकार नही करूँगा और
सुगना गुस्से में बिरसा के पास आकर उसके कंधे को पकड़कर बिरसा का चेहरा अपनी तरह घूमाता हुआ
सुगना- और.. और क्या ? बोल दे आज जो भी उल जुलूल तेरे दिमाग में भरा है। आज सब निकाल बाहर कर
बिरसा- आप समझते क्यों नही हो? आप क्यों चाहते हो कि मैं अपना स्वाभिमान और आत्मसम्मान अंग्रेजो के क़दमो में कुचलने के लिए रख दूँ और वो भी चंद पैसों के लिए?
सुगना- स्वाभिमान और आत्मसम्मान जैसे शब्दों से भूख नहीं मिटा करती बिरसा।
सुगना अपनी बेटियों के पास जाकर बिरसा से
सुगना- स्वाभिमान और आत्मसम्मान से तेरी बहनों के हाथ पीले नहीं हो सकते
सुगना अपनी पत्नी की हालात को देखकर आँखो में आँसू लेकर बिरसा से
सुगना- स्वाभिमान और आत्मसम्मान से तेरी माँ और मेरी पत्नी की हालत में सुधार नहीं हो सकता बिरसा
बिरसा अपने पिता की बातों को सुनकर अपना सिर झुकाकर खड़ा रहता है। सुगना उसके पास आकर उसके मुँह को पकड़कर ऊपर उठाते हुए
सुगना- बोलता क्यों नही रे बिरसा? क्या तेरा स्वाभिमान और आत्मसम्मान तेरी बहनों और माँ बाप की जान से भी बढ़कर हो गया?
बिरसा लंबी सांस लेता हुआ- हाँ, यही समझ लीजिए और…
बिरसा आगे कुछ बोलता की उससे पहले ही सुगना उसको थप्पड़ मार देता है और उसको घर से निकल जाने के लिए कहकर उसको धक्के मारता हुआ
सुगना- तू मेरी औलाद नहीं हो सकता बिरसा। जा निकल जा यहाँ से और कभी भी अपनी शक्ल हमें ना दिखाना। जा निकल जा। अरे जाता क्यों नहीं, निकल जा
ये सुनकर बिरसा की माँ और बहनें रोने लगती है और बिरसा को जाने से रोकती हुई
बिरसा की माँ- नही नही बिरसा, नहीं बेटा, कहीं मत जाना। मान ले अपने पिता की बात को
बहने- नहीं भईया रुक जाओ
बिरसा रोते हुए और अपनी आंखों से आसुँ पोंछते हुए उनकी ओर देखता है और अपनी किताबों को उठाकर घर से निकल जाता है। घर से जाते हुए सुगना बिरसा को काफी बुरा भला कहता है और दौबारा अपने घर में क़दम ना रखने की बात कहता हुआ उसके ऊपर चिल्ला रहा होता है। सुगना को गुस्सा होते देख उनकी

पत्नी करमी अपने पति को शांत करते हुए समझाती है कि जो ये सब हो रहा है वो सिर्फ़ भगवान सिंह बोंगा जी ही कर रहे होते है। इसलिए थोड़ा धैर्य रखो और देखना सही वक़्त आने पर सब ठीक हो जाएगा।

**Scene-40**
गाँव के लोग दीपावली मनाने की तैयारियों में जुटे हुए होते है। कुछ लोग कुम्हार के पास जाकर दीये लेने जा रहे होते है तो कुछ गाँव के लोग अपनी बस्ती को साफ़ करने में जुटे होते है। सभी लोग दीपावली पर्व मनाने की बात को लेकर काफी ख़ुश नज़र आ रहे होते है कि तभी सामने से अंग्रेज सैनिकों का एक जत्था उनको अपनी ओर आते दिखाई पड़ता है। अंग्रेज सैनिकों के जत्थे को देखकर उनकी ख़ुशी मानो मातम में बदल जाती है। सभी सैनिक गाँव वालों की तैयारियों को देखकर उनसे चिढ़ते हुए उनके पास आकर रुकते हैं और भोला नाम के किसान के बारे में पूछते हुए
सैनिक- तुममें से भोला कौन है?
कानू डरता हुआ हाथ जोड़े सेनिको से सामने आता हुआ
कानू- सरकार की जय हो!
सैनिक- तुम हो भोला?
कानू- नहीं नहीं साहब, मैं तो कानू हूँ। भोला तो दूसरे शहर अपनी माँ का ईलाज कराने के लिए गया है
सैनिक कुछ सोचते हुए एक दूसरे की ओर देखने लगते है। उनको देखकर कानू बोलता है
कानू- क्या हुआ सरकार! कोई ज़रूरी काम था क्या?
सैनिक- hmmm… तुम सभी गाँव वाले, ध्यान से सुनो! कल लार्ड सराय की पत्नी हमारी रानी साहिबा को शहर जाना है। उनको तुम्हारे गाँव की भोला की पालकी बहुत सुंदर लगी थी। इसलिए कल सुबह ज़ल्दी हवेली के सामने पालकी को लेकर हाज़िर हो जाना वरना तुम लोग जानते ही हो कि ..
ये बोलकर अंग्रेज हँसते हुए वहाँ से जाने लगते है कि तभी कक्कन नाम का एक गाँव वाला जाते हुए सैनिकों को उनको पीछे से बोलता हुआ
कक्कन- लेकिन साहब
सैनिक ग़ुस्से से- लेकिन क्या?
कक्कन- नाराज़ मत होइए साहब। मैं तो बस इतना बोल रहा हूँ कि पालकी हमारे गाँव में सिर्फ़ भोला पर ही है और वो अभी एक सप्ताह तक गाँव नहीं आने वाला। तो

फिर कैसे कल सुबह…
सैनिक- hmm ये भी समस्या है। hmmm। हम कुछ नहीं जानते, बस कल सुबह समय पर पहुँच जाना वरना अंजाम भुगतने को तैयार रहना
सभी आदिवासी एक-दूसरे के मुहँ को देखने लगते हैं की तभी कानू अंग्रेज सिपाहियों को कहता हुआ
कानू- और अब अचानक हम गरीबों के पास पालकी कहां से आएगी साहब
अंग्रेज सिपाहियों को बस बहाना चाहिए होता है ताक़ि वो लोग आदिवासियों को नीचा दिखाने और परेशान कर सके। कानू की बात सुनकर अंग्रेज सिपाही इधर-उधर देखते हुए सभी एक दूसरे की ओर इशारा करके, गाँव वाले के एक झोपड़े की तरफ़ देखते हुए मुस्कुराते है और सभी घोड़े से उतरकर गांव वाले के एक झोपड़े को तोड़ना शुरू कर देते है। ये देखकर कानू सैनिकों के आगे गिड़गिड़ाते हुए
कानू- ये क्या कर रहे हो साहब? ऐसा ना कीजिए, मेरे घर को ना तोड़िये
कानू के साथ सभी गाँव वाले अंग्रेजो से कानू का घर ना तोड़ने की विनती करने लगते है लेकिन अंग्रेज सिपाही उनकी एक नही सुनते और घर को पूरा तोड़ने के बाद कहते है
सिपाही- तुम्हारे पास अब लकड़ियाँ भी है और समय भी। कल सुबह तक पालकी तैयार करके हवेली के बाहर पहुँच जाना
ये बोलकर अंग्रेज सिपाही वहाँ से जाने लगते है

**Scene-41**
गाँव से जाते वक़्त सिपाहियों की नज़र जंगल में शौचालय के लिए जाती हुई आदिवासी महिलाओं के समूह पर पड़ती है। सिपाहियों में एक अंग्रेज सिपाही उन महिलाओं को जाता देख, उनके पीछे चोरी-छिपे चलने लगता है। वो सभी आदिवासी महिलाएँ शौच के लिए जंगल में जा रही होती है और इसी बात का फ़ायदा उठाते हुए अंग्रेज सिपाही उनको शौच करते हुए देखने लगता है। तभी अचानक एक आदिवासी महिला की नज़र सिपाही पर पड़ती है तो वो महिलाएं गाँव की ओर भागने लगती है लेकिन उनमें से 'देबो' नाम की महिला को अंग्रेज सिपाही पकड़कर उसके साथ बदतमीजी करने लगता है।
देबो- छोड़ो मुझे, ये क्या कर रहे हो? छोड़ दो हमें साहब
सिपाही- इतनी भी क्या ज़ल्दी है, थोड़ा हमारा भी तो दिल बहला दे
अंग्रेज सिपाही की हरकत पर देबो उसको थप्पड़ जड़ देती है और वहाँ से भागने की कोशिश करने लगती है कि तभी वहाँ सरकारी बाबू के साथ कुछ सिपाही आकर पूरे

मामले की जानकारी लेते है और उन दोनों के साथ गाँव मे जाते है।
अधिकारी- ये क्या हो रहा है और ये लड़की कौन है?
सिपाही- साहब ये लड़की जंगल से लकड़ियों को चुरा चुराकर बेच आती है।
अधिकारी- क्या तुमको नही पता कि ये जंगल और इस जंगल की हर चीज़ पर सिर्फ़ ब्रिटिश सरकार का हक़ है? तुम्हारी इतनी जुर्रत
देबो सच बोलना चाहती है लेकिन अधिकारी सब जानते हुए भी उसकी एक नही सुनता और उसको अपने साथ गाँव की ओर चलने को कहता हुआ
अधिकारी- चल हमारे साथ, सिपाहियों इस नीच औरत को पकड़कर हमारे पीछे लेकर आओ
सभी सैनिक देबो को अपने साथ लेकर गांव की ओर बढ़ जाते है।

**Scene-42**
गाँव पहुँचकर अधिकारी अपने सैनिकों से गांव के लोगों को इकठ्ठा करने के लिए कहता हुआ
अधिकारी- सिपाहियों, जाओ और गाँव वालों को फ़ौरन मेरे सामने हाज़िर होने को कहो
सिपाही- जी हुज़ूर
सभी सैनिक गाँव वालों को इकठ्ठा करने लगते है और सभी को अधिकारी के सामने खड़ा करने के बाद, अधिकारी गाँव वालों को कहता है
अधिकारी- तुम जाहिलो और नीच गाँव वालों को नहीं पता है क्या कि जंगल ब्रिटिश सरकार के अधीन आता है इसलिए आज के बाद जंगल में शौच जाने का तुम आदिवासियों को टैक्स देना होगा वरना अंजाम बहुत बुरा होगा
ये सुनकर सभी गाँव वाले उनके आगे दया की भीख मांगते हुए
गाँव वाले- ये कैसा अन्याय है हुजूर? आखिर ये जंगल कब से ब्रिटिश सरकार के अधीन हो गया? ये जंगल हजारों साल से हम आदिवासियों का घर और रोजगार का साधन है तो इस पर ब्रिटिश सरकार…
अधिकारी ये सुनते ही गाँव वालों पर लाठीचार्ज करने के लिए बोल देता है। सिपाही सभी गाँव वालों को बुरी तरह मारते है और फ़िर अधिकारी उन सभी से
अधिकारी- ये मेरा फ़ैसला है और मेरा फैसला ही सरकारी क़ानून है।
ये बोलकर सभी अंग्रेज सिपाही और अधिकारी वहाँ से चले जाते है। सभी गाँव वाले एक दूसरे की ओर देखते हैं।

**( कई छोटे छोटे दृश्यों में गाँव वालों को शौचालय जाने की व्यवस्था करते हुए और इससे होने वाली सभी परेशानियों को होते दिखाया जाता है जिसमें, अगले ही दिन से सरकार के खौफ़ से डरे-सहमे गाँव वाले अब शौच के लिए अपने घर के आसपास गड्ढों को खोदने लगते है और रोज़ाना शौच करके, गंदगी को उस गड्ढे में डालने लगते है। रोज़ाना एक गड्ढा खोदकर उसमें शौच करने के बाद बंद करना और फ़िर कल के शोक के लिए आज एक नया गड्ढा खोदना, अब आदिवासियों के लिए ब्रिटिश हुकूमत के ज़ुल्मो की इन्तहा का ये भी एक जीता जागता क़ानून बन जाता है )**

**Scene-43**
घर से निकलकर बिरसा एक गाँव से दूसरे गाँव का भ्रमण करने लगता है और वहाँ रहने वाली अनेकों जनजाति समुदाय और आदिवासी लोगों को ब्रिटिश सरकार के ख़िलाफ़ खड़ा होने के लिए तैयार करने लगता है।
कड़ी धूप और गर्मियों में भूखे प्यासे रखकर दर दर भटकता हुआ बिरसा एक गाँव में पहुँचता है। वहाँ के लोगों के तंग हालातों को देखकर वो एक एक करके गाँव वालों से बातचीत शुरू करता हुआ
बिरसा एक गाँव वाले से
बिरसा- सुनो भाई, ये गाँव में अज़ीब से सन्नाटा क्यों पसरा हुआ है?
गाँव वाला- सन्नाटा नहीं भाई मातम कहो, वैसे तुम कौन हो और कहाँ से आये हो? इस गाँव के तो जान नहीं पड़ते तुम
बिरसा- मेरा नाम बिरसा मुंडा है और पास के जंगल में रहने वाली आदिवासी समुदाय का रहने वाला हूँ। इधर से गुज़रते हुए यहाँ के हालातों को देखकर मन विचलित हो गया। आख़िर बात क्या है?
गाँव वाला- क्या बताऊँ बिरसा, गाँव के एक आदमी ने अपनी बेटी की शादी के लिए पैसा जोड़ा था। पिता की आंखों में बेटी की शादी के सपनें थे लेकिन
बिरसा- लेकिन, लेक़िन क्या?
गाँव वाला- ख़ुद ही आगे जाकर देख लो
बिरसा ये सुनकर आगे बढ़ता हुआ आस पास के लोगों के उतरे हुए चेहरे को देखता जाता है और एक दम से उसकी नज़र के सामने एक लड़की और एक बूढ़े की लाश पड़ी दिखाई देती है। ये देखकर बिरसा एक गाँव वाले से
बिरसा- ये सब कैसे हुआ और कौन है ये लोग?
गाँव वाला रोता हुआ अपने आंसू पोंछता हुआ बिरसा से

गाँव वाला- क्या बताए भाई, बेटी की शादी के लिए जो पैसा जमा किया था उसको सरकारी बाबू लोगों ने ज़बरन उल जुलूल टैक्स बताकर छिनकर ले गए। इसी सदमे को सहन ना कर पाने की वजह से इस बूढ़े ने आत्महत्या कर ली और जब बेटी ने अपने पिता की लाश को देखा तो ख़ुद को अपने पिता की मौत का जिम्मेदार समझती हुई जहर खाकर मर गई।
बिरसा- किसी ने सरकारी बाबू के ख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठाई?
गाँव वाला- किसी मजाल जो सरकारी बाबूओं के खिलाफ कुछ कह सके। बस अब तो एक एक करके दुःख और उनकी जात्तियों को सहने के लिए ही शायद हम ज़िन्दा बचे हैं
ये सुनकर बिरसा उस गाँव से आगे बढ़ता हुआ गाँव के लोगों के ऊपर हो रहे जुल्मो और ब्रिटिश सरकार की तानाशाही के बारे में सोचता हुआ आगे बढ़ जाता है।

**Scene-44**
किचलते चलते बिरसा दूसरे गाँव में जाते है तो वहाँ की तंग और बुरे हालातों को देखकर उनका दुःख पहले से ज़्यादा गहरा होता जाता है। वहाँ खड़े वो इन सब के बारे में सोच ही रहे होते है कि पास से गुज़रता हुआ उस गाँव का एक किसान निम्बासा बिरसा को अनजान जानकर उसके पास रुक जाता है और उन दोनों में बाते शुरु होते हुए
निम्बासा- कौन से गाँव के हो भाई? अनजान जान पड़ते हो!
बिरसा- पास के ही गाँव का
निम्बासा- क्या नाम है
बिरसा- बिरसा मुंडा
बिरसा गाँव के लोगों की हालत को देखकर निम्बासा से
बिरसा- ये क्या हुआ इन गाँव वालों को? किसने की इनकी ऐसी दशा?
निम्बासा- प्रकृति का कहर है बिरसा प्रकृति का। ना जाने किसकी नज़र लग गई हमारे हँसते खेलते खुशहाल गाँव को। एक रात में ही सभी को अनजान गंभीर बीमारी ने जकड़ लिया
बिरसा ये सुनकर हैरान होते हुए
बिरसा- एक ही रात में? लेक़िन ये कैसे मुमकिन हो सकता है की एक ही रात में गाँव के सभी लोगों को गंभीर बीमारियों ने जकड़ लिया हो?
उनके पास से जाती हुई एक महिला उन दोनों की बातों को सुनकर ब्रिटिश सरकार पर भड़कती और उनको कोसती हुई

लाजो- बीमारी नहीं है साहब, ये ब्रिटिश सरकार के कुकर्मों का फल है जिनको हम बेकसूर गाँव वाले भुगतने को मजबूर हैं
बिरसा- ब्रिटिश सरकार के कुकर्म लेक़िन वो कैसे?
निम्बासा- पता नहीं बिरसा लेक़िन कुछ लोगो का कहना है कि ये प्राकृतिक आपदा है तो कुछ लोगों का कहना है कि अंग्रेजो ने जंगलों से आदिवासी समुदाय के लोगों को जंगल से निकालकर यहाँ अपना कब्जा करने के लिए किसी दवाई का रातों रात छिड़काव कराया, जिससे रात भर में देखते ही देखते पूरा गाँव रोगों से ग्रस्त हो गया
लाजो- झूठ नहीं सच है, हमनें अपनी आंखों से देखा था कि उस रात अंग्रेजो के सिपाहियों ने गाँव की हर गली मोहल्लों में कोई लाल रंग का पानी छिड़का था और उनको ऐसा करते सिर्फ़ मैंने देखा था।
बिरसा- कहीं ये
इतना बोलकर बिरसा चुप होकर कुछ सोचने लगता है। उसको बोलते हुए अचानक चुप होते देख निम्बासा बिरसा से
निम्बासा- क्या हुआ? तुम कुछ कहने वाले थे फिर रुक क्यों गए?
बिरसा- हो ना हो लेक़िन मुझे लगता है कि सिपाहियों ने गाँव में रसायन प्रदार्थो का ग़लत मिश्रण बनाकर छिड़काव किया गया होगा , वरना ऐसा होना मुमकिन नहीं होता।
बिरसा निम्बासा को इस बीमारी की समस्या का समाधान बताने की कोशिश करते हुए
बिरसा- तुम्हारे गाँव में कोई वैध है जिनको रासायनिक प्रदार्थो का ज्ञान हो?
निम्बासा और लाजो एक दूसरे की ओर देखते हुए बिरसा से
निम्बासा- नहीं, ऐसा तो कोई नहीं है। बल्कि जब भी हमारे गाँव में कोई बीमार पड़ता तो वो तीन गाँव छोड़कर चौथे गाँव में रहने वाले वैध सिमोरा के पास जाकर अपना इलाज कराते हैं।
ये जानकर बिरसा कुछ सोचता हुआ उस गाँव में रुकने का विचार करता है लेक़िन इस समय उसका वहाँ रुकना सही ना मानकर वो आगे बढ़ जाता है।

**Scene-45**
चलते-चलते बिरसा काफी थक जाता है और उसको भूख भी लगी होती है। रात काफी होने की वजह से बिरसा जंगल से होता हुआ एघले गाँव में जाने पर विचार करता है लेकिन थकावट होने की वजह से वो आज रात इसी जंगल में गुज़ारने का फ़ैसला करके एक सुरक्षित स्थान सोने के लिए खोजता है। पहाड़ीनुमा एक टीले पर

चढ़कर बिरसा आज रात उसी चट्टान पर गुज़ारने की सोचता है और सो जाता है। रात के तकरीबन 2 बजे बिरसा की जंगल से आ रही कुछ लोगों के क़दमों की आवाज़ से आँख खुल जाती है और वो देखता है कि कुछ अंग्रेज सिपाहियों के साथ कुछ लोग बड़े बड़े बक्सों को लेकर तेज़ी से आगे बढ़ते जा रहे होते है। वो सभी जल्द से जल्द वहाँ से अपने ठिकाने पर पहुँचने के बारे में बात करते हुए थोड़े घबरा भी रहे होते है। अंग्रेज सिपाही सभी को ज़ल्दी से आगे बढ़ने के लिए बोलता हुआ
अंग्रेज सिपाही- जल्दी ज़ल्दी पैरों को चलाओ, हमें सुबह होने से पहले वहाँ पहुंचना है
उनके साथ चलने वाला एक आदमी अंग्रेज की बात का ज़वाब देता हुआ
आदमी- आख़िर इतनी जल्दबाज़ी किस लिए? ब्रिटिश सरकार को किसका डर?
अंग्रेज- डर नहीं चिंता है और जानते हो ना कि इन बक्सों में क्या है?
आदमी- हां, इनमें…
अंग्रेज सिपाही- नाम लेने की ज़रूरत नहीं है। ज़ल्दी चलने की जरूरत है
अब वो सभी और भी ज़्यादा तेज़ी से आगे बढ़ने लगते है और ये सब चट्टान पर चढ़ा बिरसा देख़ और सुन रहा होता है। बिरसा उनकी बातों और बड़े बड़े बक्सों की वज़ह से सोचने लगता है कि आखिर इनमें क्या हो सकता है। यही सोचते हुए बिरसा पूरी रात जागता हुआ निकाल देता है।

**Scene-46**
अगली सुबह बिरसा उसी गाँव में वापस जाता है जिसमें महामारी फ़ैली हुई होती है। वहाँ जाकर वो गाँव के लोगों से जंगल और अंग्रेजो के बारे में एक गाँव से पूछता हुआ
बिरसा- सुनो भाई
गाँव वाला- बोलो भाई, क्या बात है?
बिरसा- तुम मुझे बता सकते हो कि पास वाले जंगल की क्या कहानी है?
गाँव वाला बिरसा की ओर घूरकर देखता हुआ
गाँव वाला- पास वाला जंगल, तुम्हें उस जंगल के बारे मे क्यों जानना है?
बिरसा- कोई ख़ास वजह नहीं है लेकिन गाँव के लोगों का उस जंगल में आना जाना ना देखकर मन में आया कि गाँव वाले इस जंगल में क्यों नहीं जाते है। अगर नहीं बताना चाहते हो तो कोई बात नहीं
ये बोलकर बिरसा वहाँ से जाने लगता है कि तभी गाँव वाला उसको रोकते हुए
गाँव वाला- जंगल में जंगली जानवरों के डर के साथ अंग्रेज सिपाहियों और ब्रिटिश सरकार की दहशत फैली हुई है। वहाँ जाने की सख़्त मनाही करके सरकार ने इस

जंगल में दिखाई देने वाले किसी भी भारतीय और आदिवासी समुदाय के लोगों को देखते ही गोली मारने का आदेश दे रखा है इसलिए हममें से कोई भी इस जंगल में नहीं जाता
बिरसा- सरकार ने ऐसा आदेश क्यों दे रखा है और आख़िर ऐसा क्या है या जंगल में?
गाँव वाला- वो तो आज तक हममें से किसी को भी नहीं पता लेक़िन हम लोग उस जंगल में जाने की तो दूर की बात उसके बारे में सोचते तक भी नहीं है।
गाँव वाला ये कहकर बिरसा को वहाँ ना जाने की सलाह देता हुआ
गाँव वाला- तुम भी उस जंगल में जाने की ग़लती मत करना वरना ज़िन्दा वापस नहीं आओगे
ये बोलकर गाँव वाला आगे बढ़ जाता है
बिरसा गाँव वाले कि बात और जंगल के बारे में सोचता हुआ जंगल की ओर बढ़ जाता है

**Scene-47**
बिरसा वापस जंगल में आता है और बड़ी ही सावधानी के साथ सबकी नज़रों से छिपकर उस जंगल में अपने रहने का ठिकाना ढूँढता है। वो जंगल के अंदर इतने ख़ुफ़िये तरीक़े से रहने लगता है कि चाहकर लाख़ कोशिशों के बाद भी कोई उसको जंगल में ख़ोज ना सकें। बिरसा जंगल में रहकर ख़ुद को अंग्रेजो से लड़ने और उनसे बचने के तरीकों पर काम करने लगता है। बिरसा दिन के समय एक गाँव से दूसरें गाँव में घूम घूमकर गाँव के लोगों को जागरूक करता और रात के समय ख़ुद को हर तरीक़े की मुश्किलों से बचाने और दुश्मनों का सामना करने के लिए गुरिल्ला और साइबेरियन टाइगर की साइक्लोजी के अनुसार युद्ध कला के तरीकों पर काम करने लगता है। इसी दौरान बिरसा ये अनुभव करता है कि, उसके आदिवासी समुदाय के साथ देशभर के समुदाय, ब्रिटिश उत्पीड़न के कारण काफी पीड़ित होते जा रहे है लेकिन उनके ख़िलाफ़ कोई आवाज उठाने के लिए तैयार नहीं होता है। ब्रिटिश सरकार के ज़ुल्म और मनमानियों के आगे ये सभी लोग एक ज़िन्दा लाश की तरह जीवन जीने को मजबूर रहते है और उनकी दासता को चुपचाप स्वीकार करते जा रहे होते है। बिरसा के गाँव-गाँव जाकर लोगों को जागरूक करने के लिए एक अभियान तैयार करता है, जिसका नाम 'जागृति-अभियान' होता है। धीरे-धीरे लोगों के बीच बिरसा की पकड़ और उनको नेतृत्व करने की क्षमता बढ़ने लगती है। बिरसा की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए एक दिन एक सरकारी कर्मचारी अपने अफ़सर

को बिरसा के बारे में बताता हुआ, उसको ब्रिटिश सरकार के लिए आने वाले समय में बड़ा ख़तरा बताते हुए चिंता जाहिर करता हुआ
कर्मचारी- एक बुरी खबर पता चली है साहब
अफ़सर- कैसी बुरी खबर?
कर्मचारी- साहब! सुना है कि कोई बिरसा मुंडा नाम का एक आदिवासी गाँव गाँव घूमकर सभी आदिवासियों और लोगों को अंग्रेजो और ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ भड़का रहा है।
अफ़सर ये सुनकर हँसते हुए कर्मचारी से
अफ़सर- भला एक छोटा सा कीड़े मकोड़े की तरह रेंगने वाला आदिवासी ब्रिटिश हुकूमत के लिए कैसा ख़तरा?
कर्मचारी- छोटा मुहँ और बड़ी बात लेक़िन हुजूर, एक चिंगारी ही जंगल को जलाने के लिए काफी होती है। कहीं ऐसा ना हो कि बाद में लार्ड सराय तक ये बात जाए और आपके ऊपर…
ये सुनकर अफ़सर कर्मचारी की ओर देखता है और कुछ सोचता हुआ
अफ़सर- वैसे मुझे नहीं लगता कि ये बात इतनी महत्वपूर्ण है जो इसको लार्ड तक ले जाया जाए लेक़िन अगर तुम कहते हो तो मैं उनके आगे इस बात का ज़िक्र जरूर कर दूँगा
ये बोलकर अफ़सर कुछ सोचने लगता है और कर्मचारी वहाँ से चला जाता है।

**Scene-48**
बिरसा के बारे में जानकर अफ़सर इस बात को लार्ड सराय तक पहुंचाते है। लार्ड की हवेली में उनके आगे खड़े होकर अफ़सर कहता है
अफ़सर- हुजूर की जय हो
लार्ड- hmm
अफ़सर- हुजूर एक बात की सूचना देने के लिए आया हूँ लेक़िन
ये कहकर अफ़सर चुप हो जाता है। अफ़सर को चुप देखकर लार्ड उससे
लार्ड- लेक़िन क्या? जो कहने आये हो पूरा कहो
अफ़सर- हुजूर बात इतनी महत्वपूर्ण नहीं लगती मुझे लेक़िन सरकारी कर्मचारियों को ये बात आपको बताना उचित लगता है और…
लार्ड- बात को घुमाओ मत, जो बोलना है साफ़ साफ़ बोलो
अफ़सर- जी हुजूर, हुजूर पता चला है कि जंगली आदिवासी समुदाय का एक बिरसा नाम का आदमी गाँव गाँव जाकर सभी लोगों को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ

भड़काने में लगा हुआ है। सुनने में आया है कि वो मुंडा जनजाति समुदाय से ताल्लुक रखता है और अपनी जाति में सबसे ज़्यादा पढ़ने वाला एक होशियार और समझदार इंसान है। मेरा मतलब है कि कहीं आगे चलकर वो हमारे लिए कोई ख़तरा ना बन जाए क्योंकि उसकी लोकप्रियता दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है
लार्ड- एक चींटी भी हाथी को मार गिराती है और फ़िर ये तो एक इंसान है जो पढ़ा लिखा और जागरूक है। तुम जाओ, हम बताते है कि क्या करना है
अफ़सर- जी हुजूर, ब्रिटिश सरकार की जय
ऐसा बोलकर अफ़सर वहाँ से निकल जाता है और लार्ड इन बातों को सुनकर कुछ सोचता हुआ अपने पास खड़े दरोगा की ओर देखता है। दरोगा लार्ड के देखने के अंदाज़ से समझ जाता है कि उसको क्या करना है और वो अपनी गर्दन हिलाकर वहाँ से बाहर की ओर बढ़ जाता है।

**Scene-49**
बिरसा मुंडा गाँव के लोगों को जागरुक करने की कोशिशों में अपनी भूख प्यास तक को भूलने लगते है। उसका मक़सद होता है कि किसी भी तरह सभी गाँव वालों और लोगों को एकजुट करके अंग्रेजो के विरूद्ध खड़ा करना है और उनकी गुलामी से आज़ादी दिलानी है। काफ़ी कोशिशों के बावजूद भी बिरसा अपने मक़सद में थोड़ा बहुत भी क़ामयाब नहीं हो पाता है और इसके पीछे के कारण को जानने के बाद वो फ़ैसला करता है कि सबसे पहले वो आज से लोगों को जागरूक करने के साथ उनके अंदर वैचारिक क्रांति की आग को जलाएगा। बिरसा कई दिनों की मेहनत और लोगों से मिलने पर जान जाता है कि लोगों के बीच आपसी तालमेल, प्रेम, एकता, शिक्षा और विचारों के आदान प्रदान की बहुत कमी होती है जिसके लिए वो फैसला करता है कि वो अपने जागृति अभियान का नाम बदलकर वैचारिक जागृति अभियान रखता है और पहले से भी ज़्यादा कोशिशों को करते हुए लोगो को घर, गाँव, गली, मोहल्लों में जाकर उनके बीच आपसी तालमेल और प्रेम को मज़बूत करने के लिए कोशिश करने लगता है। लोगों को शिक्षा का महत्व समझाता हुआ अपने बच्चों को स्कूल में भेजने के लिए प्रेरित करता है। एक दूसरे की बातों को ध्यान से सुनना और बातों को सुनकर उनपर विचार करके ही जवाब देने की आदत को रोज़ाना की दिनचर्या में शामिल करने के लिए कहता है। बिरसा मुंडा की ये मुहिम रंग लाने लगती है और धीरे धीरे गाँव के लोगों और आदिवासियों के बीच काफ़ी जागरूकता आती हुई साफ दिखाई देने लगती है। बिरसा की चर्चा अब एक गाँव से दूसरें गाँव और दूसरें गाँव से तीसरे और इसी तरह से दूर दूर के लोगों के साथ

बिरसा जुड़ता चला जाता है। लोगों की बढ़ती एकता और विचारों की क्रांति से तिलमिलाए अंग्रेजी सिपाहियों को जब इस बात की खबर लगती है तो वो लोग बिरसा को पकड़ने के लिए एक रात गाँव में हमला करने का फ़ैसला करते है।

**Scene-50**
बिरसा मुंडा एक सफल नेता के रूप में उभरते हुए आगे बढ़ते जाते है और लोगों का प्यार व साथ उनको मिलने लगता है। इसी दैरान, अंग्रेजो की स्वार्थी और गलत नीतियों के कारण देश की कृषि टूटने लगती है और भारतीय संस्कृति में परिवर्तन आने लगता है जिससे बिरसा जी को काफी परेशानियाँ होने लगती है और वो इन सब से निपटने के लिए अंग्रेजो के ख़िलाफ़ विद्रोह का बिगुल बजा देते है। इनके नेतृत्व में, आदिवासी आंदोलनों से जुड़े सभी लोगों ने अपने काम में अचानक से ही तेज़ गति प्राप्त कर ली होती हैं और अंग्रेजों के खिलाफ कई विरोध प्रदर्शन किए जाने लगते है। इनके आंदोलन के कारण ही इन्होंने ब्रिटिश सरकार को अच्छे से समझा दिया कि आदिवासी ही देश की मिट्टी के असली मालिक होते है। इसके साथ ही ये सभी लोग बिचौलियों के साथ अंग्रेजों को खदेड़ने के लिए भी लगातार काम करते रहे। अचानक से अंग्रेजो के ज़ुल्म और अत्याचार के खौफ़ से भारी संख्या में आदिवासियों ने बिरसा जी का प्रत्यक्ष रूप से साथ देना बंद करने लगते है जिससे इनके आंदोलन की गति बहुत धीमी पड़ जाती है। जिससे ये काफी परेशान रहने लगते है और आदिवासी जनजातियों के लोगो को अपने साथ दौबारा जोड़ने के लिए सोच विचार के साथ इधर से उधर लोगों से मिलकर समस्या का समाधान निकालने के लिए घूमना फिरना शुरू कर देते है।

**Scene-51**
एक रात बिरसा गाँव से जंगल की ओर अपने ठिकाने की तरफ़ जा रहा होता है कि तभी अचानक उसके ऊपर अंग्रेज सिपाहियों के हमला हो जाता है। इस हमले के दौरान बिरसा बड़ी ही सूझबूझ से अंग्रेजी सिपाहियों को धूल चटाता हुआ खुद को उनसे बचाने में क़ामयाब तो हो जाता है लेकिन इस लड़ाई में बिरसा गंभीर रूप से घायल हो जाता है। घायल बिरसा को उसके पीछे से हमला करके पकड़ने के अंग्रेज सिपाही हिम्मत करते हुए जंगल में पूरी रात बिरसा को ख़ोजते है लेकिन उनको बिरसा के बारे में कुछ पता नहीं चलता और वो लोग ये सोचकर हैरान हो रहे होते है कि आख़िर जंगल के अंदर आते ही बिरसा कहाँ ग़ायब हो गया। इतना तो मालूम है कि वो जंगल से बाहर नहीं गया है तो फ़िर जंगल में ऐसी कौन सी छिपने की जगह है

जहाँ तक हम लोग नहीं पहुँच पा रहे है। सुबह तक अंग्रेज सिपाहियों द्वारा हर मुमकिन कोशिश करके बिरसा को खोजने का अभियान चलाया जाता है लेकिन बदकिस्मती से उनको बिरसा का कुछ अता पता नही चलता है और अंग्रेज सिपाहियों को निराश होकर वहाँ से लौटना पड़ता है।

**Scene- 52**
बिरसा पूरी रात जंगल के एक तालाब के किनारे ख़ुद से बनाई हुई एक सुरंग में छिपा हुआ होता है। घायल होने की वजह से उसको पानी की प्यास व्याकुल करने लगती है लेकिन वो अंग्रेजो के जाने का इंतज़ार करता हुआ सुरंग के अंदर छिपकर बैठा हुआ रहता है। अंग्रेजो के जाने के बाद वो सुरंग से बाहर आकर तालाब से पानी पीने के लिए आता है। पानी पीते हुए अचानक बिरसा को चक्कर आते है और वो बेहोश होकर तालाब के किनारे गिर पड़ता है। उधर से गुज़रने वाले और जंगल में जड़ी बूटियों की तलाश में आये एक आदमी 'कांता-प्रसाद' की नज़र बिरसा पर पड़ती है। कांता प्रसाद वहाँ के एक मशहूर दाल के व्यापारी का मुंशी होता है। वो उसको उठाकर अपने साथ ले चलने के लिए उसको मुश्किल से जैसे तैसे उसको होश में लाता है और अपने साथ अपने घर की ओर लेकर आगे बढ़ जाता है।
बिरसा को बेहोश पड़ा देख, मुंशी उसको होश में लाने के कोशिश करता हुआ
मुंशी कांता प्रसाद- अरे अरे कौन हो भाई? ये चोट कैसे लगी? सुनो सुनो… होश में आयो
बिरसा बेहोशी की हालत में दर्द से कर्राहते हुए
बिरसा- hmm अअअअ ययय
मुंशी कांता प्रसाद- मुझे पकड़ो और मेरे सहारे खड़ा होने की कोशिश करो, हाँ हाँ पकड़ो । अब चलो मेरे साथ… पता नहीं क्या हुआ होगा इस बेचारे के साथ…
इन्हीं बातों के साथ मुंशी कांता प्रसाद बिरसा को अपने साथ अपने घर की ओर लेकर चल पड़ता है

**Scene-53**
बिरसा को काफी मुश्किल से अपने घर ले जाकर मुंशी कांता प्रसाद, बिरसा को अपनी चारपाई पर लिटाता है और उसके कपड़ो को उतारता है। उसके शरीर पर लगे घावों को देखता है। चूंकि कांता एक आयुर्वेद का ज्ञानी और अच्छा वैध होता है इसलिए वो बिरसा के ज़ख्मों का इलाज़ शुरू करता है और उसका इलाज करता हुआ पूरी रात जागकर उसकी मरहम पट्टी करता है।

**Scene-54**
अगली सुबह बिरसा की आँखे खुलती है तो वो ख़ुद को कांता के घर में पाता है। वो कुछ समझ पाता कि उससे पहले ही घर के बाहर से कांता जंगलों से कुछ जड़ी बूटियों को लेकर घर के अंदर आता है। कांता बिरसा को देखकर उसकी ओर मुस्कुराता हुआ उससे उसके बारे में पूछता हुआ
कांता- अब कैसी तबियत है? दर्द में आराम है ?
बिरसा कांता को पहचानने की कोशिश करता हुआ धीमी आवाज़ में
बिरसा- आप कौन और मैं यहाँ कैसे आया?
कांता दो पत्थरो के बीच जड़ी बूटियों को पिसता हुआ
कांता- तुम मुझे कल तालाब के किनारे बेहोशी की हालत में मिले थे। कोई जँगली जानवर तुम्हें हानि ना पहुँचा दे, ये ही सोचकर मैं तुम्हें अपने घर ले आया। घबराओ नहीं तुम यहाँ सुरक्षित हो
बिरसा- आप कौन हो महाशय?
कांता- मैं? मेरा नाम कांता प्रसाद है और मैं शहर के जमींदार हीरालाल का मुंशी हूँ।
बिरसा अपने घावों पर लगे मरहम और पट्टियों को देखता हुआ
बिरसा- मेरा इलाज किसने किया?
कांता जड़ी बूटियों को पिसने के बाद उसका लेप बनाता हुआ
कांता- मैने
बिरसा थोड़ा हैरानी से कांता की ओर सवालिया भाव से देखता है। बिरसा को ऐसे देखकर कांता मुस्कुराते हुए उसके पास आकर उसके घाव पर मरहम लगाता हुआ
कांता- मैं मुंशी बाद में बना हूँ लेकिन उससे पहले मैं एक आयुर्वेदिक औषधियों का ज्ञाता और गुरुकुल में शिक्षक था।
बिरसा मरहम लगते ही दर्द से कर्राहता हुआ आँखे बंद कर लेता है। कांता उसको वापस आराम करने की बात कहता है।
कांता- ज़ख्म अभी हरे है इसलिए अभी तुम ज़्यादा हिलो डुलो नहीं। अच्छा वैसे एक बात पूछना तो मैं भूल ही गया। तुम्हारा नाम क्या है और कहां से आए हो और तुम्हें ये घाव कैसे लगे?
बिरसा अपने बारे में बताता हुआ
बिरसा- मेरा नाम बिरसा मुंडा है और…
ये सुनते ही कांता चोंक जाता है और बिरसा की ओर आश्चर्य से देखते हुए
कांता- क्या , तुम बिरसा मुंडा हो? बहुत सुना है तुम्हारे और तुम्हारें काम के बारे में। तुम ही वो हो ना जो गाँव गांव जाकर लोगों को जागरूक कर रहे हो और सबके दिल

में आजादी की अलख जगाने की कोशिशों में लगे हुए हो?
बिरसा- हाँ, वो ही बिरसा
कांता उसके क़रीब जाकर बैठता हुआ
कांता- तुम बहुत ख़तरनाक़ लेक़िन साहसिक कार्य कर रहे हो। हम सभी को अंग्रेजो की दासता से आज़ादी चाहिए और मैं भी चाहता हूँ कि कोई तो ऐसा हो जिसके नेतृत्व में हम सभी अंग्रेजो को देश से खदेड़ने में कुछ सहयोग कर सकें लेक़िन अफ़सोस...
इतना कहकर कांता चुप हो जाता है। बिरसा उसको आगे बोलने के लिए कहता हुआ
बिरसा- लेक़िन अफ़सोस? क्या? रुक क्यों गए आप? बोलिए आगे क्या?
कांता- तुम अपनी जी जान लगाकर सभी को जागरूक करने में लगे हुए हो और सैकड़ो देशवासियों के समर्थन भी तुम्हें मिल चुका है लेकिन तुम ऐसे आज़ादी नहीं ले सकते। अभी तुमको बहुत से काम करने बाक़ी है जो काफ़ी कठिन और परीक्षा से भरे रास्तों से होकर गुजरना बाक़ी है
बिरसा कांता की बातों को सुनकर थोड़े परेशान होते हुए
बिरसा- तो आपका मतलब है कि मेरी आज तक कि सारी मेहनत और कोशिशें बेकार गई? सब कुछ बेअर्थ था?
कांता- नहीं नहीं, मैंने ऐसा नहीं कहा। मेरी बातों को ग़लत मत समझना बिरसा लेक़िन आजादी के लिए देशवासियों और आदिवासी समुदाय के लोगों के बीच सबसे ज्यादा ज़रूरी और पहले होने का जो काम है वो है वैचारिक क्रांति और उनके दिलों में से ब्रिटिश हुकूमत के डर को ख़त्म करना
बिरसा- तो उसके लिए क्या करना सही होगा? आपको क्या लगता है कि मुझे क्या करना चाहिए?
कांता- तुम्हें पहले एक गुरु की ज़रूरत है जो तुमको शिक्षा, सामाजिक ज्ञान, वैचारिक क्रांति, सुरक्षा और तर्क वितर्क में माहिर बना सके। जब तुम इन सभी बातों को जान जाओगे, तो हर परिस्थितियों में हर एक इंसान को तुम अपनी बातों को अच्छे से समझाने में परिपूर्ण हो जाओगे। पहले ख़ुद को हर परेशानी और परिस्थितियों से सामना करने में सक्षम बनाओ, उसके बाद दूसरों के लिए खड़े होना। कहीं ऐसा ना हो कि आगे चलकर तुम्हारी मेहनत व्यर्थ हो जाये
बिरसा कांता की बातों को सुनकर हैरान और परेशान हो जाता है और कांता की बातों को सही बताता हुआ उससे आग्रह करता हुआ

बिरसा- जब आप सब बातों को जानते हो और सभी ज्ञान से परिपूर्ण हो तो क्या आप मेरे गुरु बनेंगे?
बिरसा ये कहते हुए कांता के आगे हाथ जोड़कर उसकी ओर उसके ज़वाब का इंतज़ार करने लगता है। कांता ये सुनकर काफी देर कुछ सोचने के बाद बिरसा से
कांता- ठीक है

**Scene-55**
बिरसा जी के उपचार के साथ ही कांता उनको सनातन संस्कृति, धर्म, वेद पुराणों और भारतीय महाकाव्यों का ज्ञान देने लगते है। बिरसा पढ़ाई और बुद्धि के अच्छा होने के साथ चीज़ो को समझने की कुशल क्षमता भी रखता होता है। इसी कारण वो धीरे धीरे सभी धर्म ग्रंथों और शास्त्रों के साथ, आयुर्वेद चिकित्सा ज्ञान में भी महारथ हासिल करने लगता है। इन सब ज्ञान को अर्जित करने में बिरसा इतना डूब चुका होता है कि उसको दिन रात, भूख प्यास की कोई सुध ना रहती। कांता भी बिरसा की लगन और ज्ञान अर्जित करने की भूख से काफी प्रभावित होते है। बिरसा के ज्ञान अर्जित करने में कोई कमी ना रह जाए उसके लिए कांता अपने काम से कुछ समय के लिए छुट्टी लेकर अपना सारा ध्यान बिरसा की पढ़ाई और उसको ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ तैयार करने में लग जाते है। इन्हीं सब में एक दिन हफ़्तों और हफ़्ते महीनों में बदल जाते है।

**Scene-56**
बिरसा मुंडा की शिक्षा लगभग पूरी हो चुकी होती है इसलिए कांता उसको सफर के दौरान खाने के लिए एक पोटली देते है। बिरसा वहाँ से निकलकर अपने आगे के सफर को तय करने के लिए, अपने साथ कुछ किताबें और खाने की पोटली को लेकर कांता के पैरों को छूता हुआ
बिरसा- अब मुझे आज्ञा दीजिए गुरु कांता, ताकि मैं ब्रिटिश सरकार और उनके जुल्मो से अपनी जनजातियों और देश की रक्षा कर सकूँ।
कांता बिरसा को उसके दोनों कंधों को पकड़कर उठाते हुए
कांता- मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है बिरसा। वैसे तो मैंने तुम्हें नीति-शास्त्र, वेदों के ज्ञान के साथ, सामाजिक ज्ञान को भी दिया है लेकिन मेरी एक बात हमेशा याद रखना
बिरसा दोनों हाथ जोड़कर कांता से
बिरसा- जी कहिए गुरुदेव

कांता- चाहे कुछ भी हो जाए, कितनी भी भयानक और जटिल समस्याओं से घिर जाओ लेक़िन याद रखना कि स्वाभिमान और आत्मसम्मान से बढ़कर कुछ नहीं होता। इनके आगे दुनियाँ की हर बहुमूल्य चीज़ अमुल्य और तुच्छ ही होती है। तुम जिस काम के लिए अब आगे बढ़ रहे हो, उस रास्ते से तुम्हें भटकाने और मोह में डालने के लिए हालात और दुश्मन तुम्हारे आगे अनेकों लुभावने लालच देंगे और छल कपट के साथ तुम्हारा ध्यान भटकाने की कोशिश करेंगे लेक़िन तुम ये कभी मत भूलना की तुम्हारा जीवन अपने सुखों के लिए नहीं बल्कि देश, धर्म और जनजातियों के लिए हुआ है।
बिरसा- मैं आपकी हर बात याद रखूँगा और वादा करता हूँ कि आपसे प्राप्त ज्ञान और गुणों को कभी भी ग़लत कार्य नीति के लिए प्रयोग नहीं करूँगा।
ये सुनकर कांता बिरसा को भीगी पलकों से विदा कर देते है और बिरसा गुरु कांता के चरणों को छूकर उनका आशीर्वाद लेता है और वहाँ से निकल पड़ता है देश धर्म और न्याय की रक्षा के लिए

**Scene-57**
बिरसा पैदल यात्रा करते हुए सीधा अपने गाँव की ओर बढ़ा चला आ रहा होता है। उसको गाँव, रास्तों और सफ़र के दौरान जो भी इंसान मिलता, वो उनको ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ खड़ा होने के लिए वैचारिक क्रांति की मशाल उनके दिलों में जलाता जाता और लोगों को स्वाभिमान के साथ जीने के लिए कहता जाता है। शाम काफ़ी हो चुकी होती है और देर शाम बिरसा अपने गाँव में आ पहुँचता है। गाँव के लोग बिरसा को देखकर ख़ुश हो जाते है और उसको गले लगाते हुए उसकी प्रसंसा करते हुए उसका हाल चाल पूछते जाते है।
कल्लू- अरे देखो, बिरसा, अपना बिरसा आ रहा है
भेड़ो के लिए चारा काटता हुआ पाली बिरसा को आता देख उसकी तरफ दौड़ते हुए
पाली- बिरसा, अपना बिरसा
कल्लू- गाँव वालों देखो, बिरसा आ गया
गाँव वाले अपने घरों से बाहर निकलते हुए बिरसा को देखकर खुश होते हुए उसकी तरफ दौड़ते जाते है और बिरसा की खैर ख़बर पूछते हुए
गाँव वाले- तू आ गया बिरसा, कहाँ था इतने दिन? अरे छोड़ो उसको, बिरसा को उसके घर जाने दो, भगवान सिंह बोंगा तेरी बहुत मेहरबानी है जो बिरसा लौट आया
ऐसे ही बिरसा के लिए बोलते हुए गाँव वाले बिरसा के पीछे पीछे चल पड़ते है और बिरसा अपने घर के पास जाता है तो देखता है कि घर में से उसके माता पिता भाई

बहन उससे मिलने के लिए बाहर निकल रहे होते है। बिरसा घर के बाहर पहुँचता हो है कि तभी बिरसा की माँ उसको बाहों में भरकर रोती हुई
करमी- बेटा बिरसा, कहाँ था रे इतने दिन? कहाँ चला गया था अपनी माँ को छोड़कर? एक बार भी याद नहीं आयी तुझे अपनी माँ की ?
बिरसा कुछ बोल पाता की उससे पहले सुगना बिरसा को देखकर भावुक होता हुआ उसके पास आकर कहता है
सुगना- क्या रे बिरसा, बाप की डांट इतनी बुरी लग गई थी जो इतने महीनों तक घर वापस भी नहीं आया ?
बिरसा माता पिता के पैर छूता है और माता पिता सहित वहाँ मौजूद गाँव वालों को देखने लगता है। बिरसा गाँव वालों को कुछ क्षण देखकर थोड़ा गंभीर भाव से बोलता हुआ
बिरसा- मुझे भगवान सिंह बोंगा के दर्शन हुए
वहाँ खड़े सभी लोग हैरान होकर एक दूसरे से खुसफुसाहट करते हुए
गांव वाले- हाँ, क्या, बिरसा को भगवान सिंह बोंगा ने दर्शन दिए, बड़ा सौभाग्यशाली निकला बिरसा, हाँ सचमुच, धन्य है भगवान सिंह बोंगा, धन्य है
बिरसा की माँ करमी उसके चेहरे की ओर देखती हुई उसके माथे को देखकर उसके चेहरे पर हाथ फिराते हुए
करमी- कितना तेज़ है तेरे माथे पर, सचमुच सिंह बोंगा ने तो तेरी काया ही बदल दी बिरसा
गाँव वाले बिरसा के चेहरे के तेज़ को देखते हैं और उसकी बातों पर यक़ीन करते हुए, बिरसा से पूछते है
गाँव वाले- क्या कहा भगवान सिंह बोंगा ने? हमारे गाँव वालों के लिए भी कुछ बताया क्या?
बिरसा उन लोगों की ओर देखता हुआ पास पड़े ईंट के टीले पर बैठ जाता है। उसको बैठता देख सभी गाँव वाले बिरसा के आगे ज़मीन पर बैठ जाते है और पूछने लगते है
गांव वाले- बोलो ना बिरसा, क्या भगवान सिंह बोंगा ने हमारे लिए भी कुछ कहा है क्या? हमारे दुःखों और परेशानियों के अंत या समाधान के बारे में कुछ बोले क्या?
बिरसा- एक दिन में एक गाँव से दूसरें गाँव जाने के लिए जंगल में से होकर गुजर रहा था कि तभी मुझे भगवान सिंह बोंगा के साक्षात दर्शन होते है और उन्होंने हम सभी की समस्याओं को दूर करने के लिए मुझे रास्ता बताया है

ये सुनकर सभी लोग बिरसा पर आँख बंद करके यक़ीन कर लेते है। बिरसा के इस झूठ के पीछे का कारण साफ होता है कि उस समय लोग अंधविश्वासों में इस तरह से जकड़े हुए थे कि उनको इन सभी बातों से निकालने के लिए बिरसा मुंडा को झूठ का सहारा लेना पड़ता है। तभी गाँव वालों के द्वारा आगे की बात को पूछने पर बिरसा बोलता हुआ

बिरसा- जब मैं जंगल से होकर गुजर रहा था तो मेरे सामने सिंह बोंगा जी साक्षात दर्शन देते हुए कहते है कि मैं यहाँ तुमको आदिवासी समुदाय और जनजातियों के सभी दुःखो का अंत करने का समाधान बताने के लिए आया हूँ।

अपने भगवान सिंह बोंगा का नाम आते ही सभी लोग बिरसा की बात पर और भी ज़्यादा ध्यान देकर सुनने को उत्सुक हो जाते है और ये देखकर बिरसा आगे बोलता हुआ

बिरसा- भगवान ने मुझे कहा है कि मैं तुमको तुम्हारी समस्याओं का समाधान बता दूँगा लेक़िन अगर मेरी बात को किसी ने नहीं माना, तो पूरी जनजाति पर मेरा प्रकोप ग़ुस्से के तौर पर बरसेगा, जिससे तुमको कोई बचा नहीं पाएगा।

ये सुनकर सभी गाँव वाले बिरसा से वादा करते हुए

गाँव वाले- हे भगवान सिंह बोंगा, हम सभी गाँव वाले बिरसा मुंडा की हर बात को मानने के लिए तैयार है।

बिरसा गाँव के लोगों को एक सुर में बात करते हुए देखकर मन ही मन मुस्काता हुआ

बिरसा- आज से और अभी से सभी लोगों को सरकारी अधिकारियों, जमींदारों, साहूकारों आदि के यहाँ नौकरी या गुलामी नहीं करनी है

अपना अन्न ख़ुद अपने खेतों में उगाओ और एक दूसरे की मदद करो, किसी भी सरकारी फैसलों को नही मानना है

भगवान एक है और वो सिर्फ़ सिंह बोंगा है, भूत-प्रेत, अंधविश्वास जैसी कोई चीज़ नहीं होती है

अनेकों देवी देवताओं की पूजा नहीं करनी है, बलि के नाम पर किसी जीव की हत्या नहीं करनी है, जीवों से प्रेम करना है, गाय की सेवा करनी है

शराब और मांस का पूर्णरूप से त्याग करना है, घर में एक तुलसी का पौधा जरूर लगाना है, पूजा सिर्फ़ चावल पानी से करनी है

कैसी भी परिस्थिति हो हैम सभी को साथ मिलकर खड़े रहना है, घर को साफ़ सुथरा रखना है, खाना खाने से पहले नहाना है

शुद्धता के लिए घर के ऊपर सफ़ेद झंडा लगाकर रखना है, झूठ नहीं बोलना है और चोरी कभी नहीं करनी है
फैसलों को सिर्फ़ पंचायत द्वारा मान्य करना है, हर बृहस्पतिवार को छुट्टी रखकर हवन, पूजापाठ, भगवान का ध्यान करना है
अपने समाज और लोगों को एकजुट करने के लिए बिरसा उनको ऐसी ही अनेकों बातों को बताकर, उन सभी लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से एकजुट करने में लग जाता है। जिसके परिणामस्वरूप कुछ ही समय में देखते ही देखते उसके साथ क्रांतिकारियों की एक विशाल सेना खड़ी हो जाती है।

**Note- यहाँ बहुत बार गाँव के कुछ लोगों, अंग्रेजो और सरकारी अधिकारियों का विरोध दिखाना है।**

**Scene-58**
बिरसा मुंडा का आदिवासी समुदाय और देश की जनता के बीच फ़ैलते प्रभाव और नेतृत्व के बारे में जानकर आए दिन अंग्रेज अफ़सर अधिकारियों और ब्रिटिश सरकार के बीच चिंता जताई जाने लगती है। इन्हीं सब के कारण एक दिन लार्ड सराय अपने आला अधिकारियों की एक बैठक बुलाते है और बिरसा की ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ बढ़ती हुई समस्याओं के कारण वो लोग बिरसा के कार्यो पर प्रतिबंध लगाने के लिए चर्चा करते है। सभी अधिकारियों और अफसरों के बीच लार्ड सराय गुस्से में बोलते हुए
जोज़फ़- बिरसा मुंडा आख़िर इतना प्रभावशाली कैसे बन गया? क्या अंग्रेजी सरकार के अफ़सर और सभी ख़बरी भांग पीकर सो रहे है?
सरकारी कर्मचारियों में से एक कर्मचारी लार्ड से डरता हुआ अपनी कुर्सी से खड़ा होकर हाथ जोड़कर कहता हुआ
बाबूराम- सरकार बात ये है कि हमनें तो इसकी सूचना पहले ही आपके अंग्रेजी आला अधिकारियों को दी थी लेकिन…
लार्ड- लेक़िन क्या?
बाबूराम- लेक़िन साहब आपके अधिकारियों ने इस बात को हल्के में ले लिया
ये सुनकर वहाँ खड़ा एक अंग्रेज सिपाही इस बात का खंडन करते हुए
सिपाही- नहीं सर, ऐसा नहीं है। हमनें बिरसा को पकड़ने और रोकने के लिए कई बार कोशिशें की लेक़िन वो हर बार किसी तरह हमें चकमा देकर भाग निकलने में क़ामयाब हो गया। यही नहीं एक बार हमनें जंगल की ओर जाते हुए बिरसा पर

हमला करके उसको पकड़ने की भी कोशिश की और इस हमले में वो घायल भी हो गया था लेकिन पता नहीं अचानक वो कहाँ ग़ायब हो गया।
लार्ड- मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। मुझे बस बिरसा चाहिए, ज़िन्दा या मुर्दा, जैसा तुम चाहो
वहाँ खड़ा हुआ एक दरोगा ये सुनकर इस बात पर आपत्ति जताते हुए लार्ड से
दरोगा- अगर ऐसा किया तो सभी जनजाति समुदाय और आदिवासी लोग देश में अंग्रेजो के ख़िलाफ़ एक साथ मोर्चा खोल सकते है क्योंकि बिरसा अब कोई छोटा मोटा गाँव का किसान या मजदूर नहीं रहा। वो अब इन सभी का चहेता और लीडर बन चुका है और अगर हमनें बिना सोचे समझे कोई भी कदम उठाया तो शायद ये हमारे लिए बड़ी भूल साबित हो सकती है सर
ये सुनकर वहाँ मौजूद लोग दरोगा की बात का समर्थन करते है। लार्ड दरोगा की बातों से सहमत होता हुआ उससे पूछता है
जोज़फ- बात तो तुम्हारी भी सही है लेकिन हम ऐसे हाथ पर हाथ धरकर तो नहीं बैठ सकते? तुम ही कोई सुझाव दो जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे
दरोगा कुछ देर सोचकर लार्ड से
दरोगा- छिपकर अचानक से हमला करके ब्रिटिश सरकार के विरोधियों और बिरसा मुंडा के समर्थकों को मारा जाए या फ़िर जिंदा पकड़कर उनको जेल में यातनाएं दी जाए। ताक़ि ब्रिटिश सरकार के ख़िलाफ़ खड़े होने की बात मात्र से ही लोगों की रूह कांप जाए
लार्ड इस बात को मानते हुए उन सभी से
लार्ड- तो ठीक है, हमले की तैयारी करो और इस हमने का नेतृत्व दरोगा जयचंद करेंगे
ये सुनकर सभी लोग हैरान रह जाते है क्योंकि सभी लोग जानते है कि इस हमले में जिनकी हत्याएं होगी, वो सभी मजदूर, किसान और बेगुनाह लोग होंगे लेक़िन लार्ड के डर से सभी अपना मुहँ बंद रखना ही बेहतर समझते है और चुप रहते है।

**Screen-59**
लार्ड सराय जोज़फ और उसके सभी आला अधिकारियों के बीच हुई सभा से अनजान बिरसा मुंडा और गाँव के लोग वैचारिक जागृति अभियान के दौरान एक सभा करने के ऊपर विचार विमर्श कर रहे होते है और सभी लोग इस सभा और अभियान के जुड़े सवाल ज़वाब को करते हुए, अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे

होते है। गाँव के सभी लोग एक चट्टान के पास बैठे हुए बिरसा मुंडा की बातों को सुन रहे होते है और बिरसा उनको वैचारिक क्रांति की ताक़त के बारे में समझाता हुआ
बिरसा- हमारे बाप दादाओं के पास इतना रुपया और संसाधन नहीं थे कि वो हम लोगों को अच्छे से पढ़ा लिखा सके या हमारे खर्चों को अच्छे से निभा सके। ना ही उनके पास कोई इतनी ज़मीन जायदात बची की वो उसको बेचकर अपने बच्चों की पढ़ाई और परिवार का खर्चा एक साथ उठा सके। हमारे हालात बद से बदत्तर होते चले गए और लाख़ कोशिशों के बावजूद भी हम इनसे आज तक उभर नहीं सके और ये सब ग़रीबी की वज़ह से नहीं बल्कि अंग्रेजी हुकूमत के ज़ुल्मो, अनचाहे और बेफजूल के टैक्स, उनकी मनमानी और ज़ुल्मो की इन्तेहाँ को भी पार करने की भूख और हमारी अशिक्षा की वजह से हुई है। लेकिन बस अब और नहीं। हम सभी को एक साथ मिलकर इसका बदला लेना होगा वरना हमारे बच्चे पीढ़ी दर पीढ़ी ऐसे ही दुःख बेबसी और गुलामी की जिंदगी जीने पर मजबूर रहेंगे और...
तभी गाँव का एक आदमी बिरसा की बात को काटता हुआ
दीनू- लेकिन हम सब इतनी बड़ी ब्रिटिश सरकार और उनकी सेना से कैसे लड़ सकते है?
तभी पास बैठा नन्दू- हाँ, सही कह रहे हो काका। और हमारे पास तो उनके जैसे हथियार भी नहीं है जबकि उन लोगों के पास तोप गोले बंदूकें और भी ना जाने कैसे कैसे हथियारों का ज़खीरा मौजूद है
बिरसा- अगर ऐसे ही सोचते रहे तो हमें आज़ादी कैसे मिलेगी? हमारे बच्चों को अंग्रेजी हुकूमत की ग़ुलामी से कैसे बचाया जाएगा?
दीनू- हम भी अपने बच्चों और परिवार वालों को खुश देखना चाहते है लेकिन तुम ही बताओ बिरसा, की आख़िर जंग बातों से भूखे पेट तो नही लड़ी जा सकती?
बिरसा- तो काका क्या जंग ऐसे जीत सकते है? हमें अपनी भूख प्यास और सुविधाओं का त्याग करना होगा। हमें रातों की चाँदनी में भी अंग्रेजो से अपने ऊपर हुए ज़ुल्मो और अन्याय का बदला लेने की आग में जलना होगा।
बिरसा की जोशीली बातों को सुनकर वहाँ मौजूद सभी लोग, अंग्रेजो की दासता से ख़ुद को आज़ाद कराने के लिए हर हद से कुछ भी कर गुजरने की बातों को कहते हुए
पहला आदमी- सही बोल रहा है बिरसा
दूसरा आदमी- हां हां सही बोल रहा है बिरसा और आख़िर कब तक हम यूँ ही घुट घुटकर जीते रहेंगे?
तीसरा आदमी- हमें बिरसा का साथ देना ही चाहिए। क्यों भाईयों, क्या कहते हो?

सभी गाँव वाले एक सुर में- हां हां, हम सभी बिरसा के साथ है। अब जो भी होगा देखा जाएगा
गाँव वालों की एकता देखकर बिरसा के चेहरे पर मुस्कान आ जाती है और वो गाँव के लोगों की ओर गर्व से देखने लगता है

**Scene-60**
अंग्रेज सिपाही और उनकी फ़ौज बिरसा के साथ उसके सभी समर्थकों को पकड़कर जेल में डालने की योजनाएं बनाने लगते है। छोटे से लेकर बड़े से बड़े सभी पुलिस वाले, पुलिस हेडक्वार्टर में मौजूद होकर बिरसा को पकड़ने के लिए एक योजना तैयार करते हुए उस योजना का नाम बुमा मिशन रखते है।

इस बात का पता जब अंग्रेजो को चलता है तो वो लोग उनके ऊपर हमला कर देते है लेकिन 3000 से भी ज़्यादा आदिवासियों की सेना ने अंग्रेजो को धूल चाटने पर मज़बूर करते हुए वहाँ से भागने पर मजबूर कर देते है। जब किसी पुलिस अफसर या सरकारी बाबू को उनके पास जाने के लिए कहा जाता तो सब खौफ़ की वजह से मना करने लगते है और कई महीनों तक कोई भी अंग्रेज अधिकारी उनकी ओर नहीं जाता है। इसी दौरान बिरसा अपनी सेना के साथ कई अहम हमले और लूट करके अंग्रेजो को आये दिन चोट पर चोट देता जाता है और अंग्रेजी हुकूमत लाचार नज़र आने लगती है।

बिरसा मुंडा के नेतृत्व में 19वीं सदी के आखिरी दशक में किया गया मुंडा विद्रोह उन्नीसवीं सदी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण जनजातीय आंदोलनों में से एक होता है जिसको सभी लोग उलगुलान (महान हलचल) नाम से भी जानते होते है। मुंडा विद्रोह झारखण्ड का सबसे बड़ा और अंतिम रक्ताप्लावित जनजातीय विप्लव था, जिसमे हजारों की संख्या में मुंडा आदिवासी शहीद हुए।

इसी बीच, 1898 में डोम्बरी पहाडियों पर मुंडाओं की विशाल सभा बुलाई जाती है जिसमें बहुत अहम फैसला लेने की बात चल रही होती है। इसकी खबर अंग्रेजो को भी लगती है और वो बिरसा मुंडा के साथ उसकी सेना को पकड़ने के लिए हर मुमकिन प्लान तैयार करने में जुट जाते है। इस सभा में भविष्य में होने वाले सभी आंदोलनों की पृष्ठभूमि तैयार की जाती है जिसका नेतृत्व बिरसा करता है। आदिवासियों के बीच राजनीतिक चेतना फैलाने का काम लगातार चलता रहता है।

24 दिसम्बर 1899 को बिरसापंथियों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड दिया जाता है। 5 जनवरी 1900 तक पूरे मंडा अंचल में विद्रोह की

चिंगारियां फैल जाती है। बिरसा के बढ़ते प्रभाव और अपनी जड़ों को हिलता देख़ ब्रिटिश फौज एकाएक आंदोलन का दमन करना शुरू कर दिया होता है। 9 जनवरी 1900 का दिन मुंडा इतिहास में अमर हो गया जब डोम्बार पहाडी पर अंग्रेजों से लडते हुए सैंकडों मुंडाओं ने शहादत दी। आंदोलन लगभग समाप्त हो गया। गिरफ्तार किये गए मुंडाओं पर मुकदमे चलाए जाते है, जिसमें एक को फांसी, 39 को आजीवन कारावास, 23 को चौदह वर्ष की सजा होती हैं।

बिरसा मुंडा काफी समय तक तो पुलिस की पकड़ में नहीं आये थे, लेकिन एक स्थानीय गद्दार की वजह से 3 मार्च 1900 को गिरफ्तार हो कर लिए जाते है। ये गद्दार कोई और नहीं, बल्कि वो होता है जो बहुत पहले बिरसा के पास आकर उसका शिष्य बनकर उसके साथ जुड़ना चाहता था। लगातार जंगलों में भूखे-प्यासे भटकने की वजह से बिरसा कमजोर हो चुके होते है। उनकी तबियत बिगड़ने लगती है और एक दिन अंग्रेजी सरकार जनता को बताती है कि 9 जून 1900 को रांची की एक जेल में हैजा के कारण उनकी मृत्यु हो गई है। लेकिन सभी इस बात पर यक़ीन नहीं करते है और काफी समय बाद मुंडाओं और आदिवासियों को पता चलता है कि बिरसा मुंडा को जेल में खाने में रोज़ाना जहर दिया जाता था जिसके चलते उनकी मौत हो जाती है। बिरसा मुंडा के जाने के बाद उनकी सेना उनको अपना भगवान मानकर उनकी मूर्ती की पूजा करते और उनके बताए नियमों रास्तों पर चलते हुए लगातार अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई जारी रखते है।

आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

## About writer

I am a creative writer and my writing based on mostly suspense, thriller, mystery, horror, comedy, drama, fiction and nonfiction concepts. I write always my stores for Web series, TV serial and films. If you want to unique concepts then please contact me. +91-8630779682, Nsuryan000@gmail.com

मेरा नाम नवीन कृष्णराज है। मै उत्तर-प्रदेश राज्य के ज़िला बागपत के एक छोटे से कस्बे 'बड़ौत' का रहने वाला हूं। मै कई साल से फ़िल्म जगत में काम करता आ रहा हूं और पिछले एक साल से खुद को एक लेखक के तौर पर तैयार करने की कोशिशों में लगा हुआ हुं। मेरी कहानियां हर उम्र के लोगों के लिए होती है और मै अपनी

कहानियों को लिखते हुए हमेशा इस बात का ध्यान रखता हूं की मेरी कहानी में कभी किसी भी जगह पर कोई अभद्र या जातिगत भाषा का प्रयोग ना हो। मै कभी भी अपनी कहानियों में गाली गलौज और अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं करता हूं क्योंकि मेरा मानना है कि लेखक ही एक ऐसा इंसान होता है जो अपने शब्दों और लेखन के द्वारा समाज को ताउम्र जोड़े रखता है और सही गलत की पहचान कराने में सहायक का काम करता है। मैने ज्यादातर अपनी कहानियों को साधारण अंदाज़ में लिखा हुआ होता है जिसको पढ़ते हुइ सभी लोग खुद को और अपने जीवन की बातों को कहानी से जोड़कर चले।